



I SSN 2229-547X VI DEHA


रिदेह १३४ म अंक १३८ सितम्बर २०१३ (वर्ष ७ मास ७९ अंक १३४)



ई अंकमे अछि:-

**ऊँच-नीच- रैचन ठाँव**

**भाषापाक बचना-लेखन - [मानक मैथिली]**

 रिदेह मैथिली पोथी डाउनलोड साइट


 VI DEHA MAI THI LI BOOKS FREE DOWNLOAD SITE

रिदेह अ-पत्रिकाक सब्झा प्रवान अंक ( ब्रैल, तिवहता आ देरनागरी मे ) पी.डी.एफ. डाउनलोडक लेल नीचाँक लिंकपव उपलब्ध अछि । All the old issues of Videha e journal ( in Braille, Tirhuta and Devanagari versions ) are available for pdf download at the following link.


रिदेह अ-पत्रिकाक सब्झा प्रवान अंक ब्रैल, तिवहता आ देरनागरी कपमे Vi deha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions


रिदेह अ-पत्रिकाक पहिल ३.० अंक


रिदेह अ-पत्रिकाक ३.०म सँ आगाँक अंक


 रिदेह आब.एस.एस.फीड एनीमेष्टबकेँ अपन साइट/ ब्लॉगपव लगाडु ।



 र्नांग "लेखाडै" पब "एड गाडजे" मे "ह्रीड" सेलेकट कए "ह्रीड यु.खाव.एन." मे <http://www.videha.co.in/index.xml> ठांगप केनासँ सेहो रिदेह ह्रीड प्राप्त कए सकैत छी । गुगल बीडवमे पढ़ी लेन <http://reader.google.com> पब जा कऽ Add a Subscription रैठन किक कक आ खानी स्थानमे <http://www.videha.co.in/index.xml> पेसठ कक आ Add रैठन दराड ।

 [Join official Videha facebook group.](#)

 [Join Videha google groups](#)

 रिदेह रेडियो:मैथिली कथा-करिता आदिक पहिन पोडकास्ट सांघट

<http://videha123radio.wordpress.com/>

मैथिली देरनागरी रा मिथिलाम्बवमे नहि देखि/ लिखि पारि बहन छी, (cannot see/write Maithili in Devanagari / Mithilakshara follow links below or contact at [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com)) तँ एहि हेतु नीचाँक लिंक सभ पब जाड । सर्गहि रिदेहक सुँभ मैथिली भाषापक/ बचना लेखनक नर-प्रवान अंक पढ़ू ।

<http://devanaagarii.net/>

<http://kaulonline.com/uninagari/> (एतए रीँकमे ऑनलाइन देरनागरी ठांगप कक, रीँकसँ कपी कक आ रीड डक्यूमेन्टमे पेसठ कए रीड फागतकेँ सेर कक । विशेष जानकारीक लेन [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पब सम्पर्क कक ।)(Use Firefox 4.0 (from [WWW.MOZILLA.COM](http://WWW.MOZILLA.COM) )/ Opera/ Safari / Internet Explorer 8.0/ Flock 2.0/ Google Chrome for best view of 'Videha' Maithili e-journal at <http://www.videha.co.in/>.)



Go to the link below for download of old issues of VI DEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Book/ paintings/ photo files. रिदेहक प्रवान थंकि आ ऑडियो/ रीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ होमपेज सभक फाइल सभ (उच्चारण, रीड स्वथ साव आ दूरस्थित मंत्र सहित) डाउनलोड करवाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ ।

### VI DEHA ARCHIVE रिदेह आर्काइव



जातिबन्धन पूर्ण महकरि रिद्योपति । भारत आ नेपालक माईमे पसबन मिथिलाक धवती प्राचीन कारिसँ महान प्रकष ओ महिला लोकनिक कर्मभूमि बहन थंकि । मिथिलाक महान प्रकष ओ महिला लोकनिक चित्र मिथिला बने मे देखु ।



गौरी-शैबक पानरणि कारक मूर्ति, एहिमे मिथिलाकबने (२०० वर्ष पूर्क) थंभिलेख थंकित थंकि । मिथिलाक भारत आ नेपालक माईमे पसबन एहि तबहक थंभिलेख प्राचीन आ नर स्थापन, चित्र, थंभिलेख आ मूर्तिकलाक हेतु देखु मिथिलाक खोज

मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित सूचना, सम्पर्क, खल्लेषण सर्गति रिदेहक सर्च-अंजन आ नूज सर्सिस आ मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित रेसर्सागठ सभक समग्र संकलनक लेल देखु रिदेह सूचना सर्पक खल्लेषण

रिदेह जानबुक्त डिस्कसन होबमपर जाउ ।

“मैथिल आब मिथिला” (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय जानबुक्त) पर जाउ ।



## डुँच-नीच

रैचन ठाँव

डुँच-नीच

नाँक

रैचन ठाँव

पहिल अंक

## पहिल दृश्य-

(स्थान- मंगल मल्लिकक घर । दवरँज्जापव मंगल अपन पनी पवनीक संग पविरावक स्थितिक सर्नधमे रिचाव-रिमर्श क२ बहन छथि । दू गोष्ठे पथिया रीनि बहन छथि । )

मंगल- गौ, हमव रौडक जमाना आ हमव जमानामे रौड फबक देखे छी । ओना कोनो रैसी दिन ने भेले दूगना हुनका । रौड रैसी तँ पन्द्रह रँथ भेल हेतनि । स्पष्ट ने ?

मवनी- गह, पनवहे रँथ भेल हेतनि । रैसी भेल हेतनि । अँह हो, सतासीमे रौठा आँएन बँह आ अठासीमे भुमकम । ओही भुमकममे ने पवरीबिया घरक भीत खसले आ ओहीमे दरौँ गेलथिन । एकोरँव शिरँदरौँ ने फेलथिन ।

मंगल- तोवा रौड मन बँह छौ गौ । ठाँके कह छै ।

मवनी- मन ने बहत तँ । अमकथ छी तगसँ की । गहो घटना सब लोक रिसवि जेते । हवदम पी क२ रूँच बँह छह तँ की मन बहतह । ओना आँग सुषवत देखे छिथ ।

मंगल- की कवरँ । तूही कह । जखनि सुषव चवरँने जाग छिर्ष तँ ओकवा संगे हवदम दौगते बँह छिर्ष आ कए गाम रौँआँग छी से कोनो ठेकान ने । रौड थाकि जाग छी । खकान मेँरँने पीर्ष छी आकि कोनो सथे पीर्ष छी । कहियो-कहियो तँ तँ जाग छै । बुँमते हेरँही कोन रौँसक दाहा होग छै ।

मवनी- से तँ ठाँके रौड भीव पड' छै । दूदा हम कहाँ पीर्ष छी ।



- मंगल- तू मोगी छीनी आ हम मबद छी । हमबा ओहन सँघत छै, तोबा ले छौ ।
- मबनी- ओहन सँघतमे किअ वँह छुह ?
- मंगल- तँ हबदम तोरे नग बहियो, लोक नीक कहत की ?
- मबनी- खबाप सँघतसँ रँठि या हबदम हमरे सँगे बहह आ जे कँह छिअ से कबह ।
- मंगल- (थिसिया क२) गै मोगी, हमब रँहू भ२ क२ हमरे सिखरै छै । गै राँडक जमामामे घैनाक-घैना ताड ी पीँध छेलौं दुनु राँपूत । ओग हिसारसँ अथनि नोगसो रँबरँबि ले ।
- मबनी- (प्रसन्न मन) किअ थिसियाए गेलहक ? हम कोनो अपनेले कँह छिअह ।
- मंगल- किअ ने थिसियरौ ? सुगब हम अपने ले चवरै छिँ की ?
- मबनी- ले, से तँ पूरा पविरावने । कनी अपन देहो दिस तकहक, केहेन नगै छुह पनीरँना दक पीँधत-पीँधत ?
- मंगल- केहेन नगै छै तोबासँ नीके । तूही ले पीँध छै तँ कहाँ मोष्ठा क२ हाथी भ२ गेलौं ?
- मबनी- रँसी मोष्ठेनाग सेहो खबाप होग छै । से रँमहक पहिने दूररे-पातव बही हूदा नीरोग बही । अ नीक ।
- मंगल- तूही कह, केना नीरोग बहरै ? (शान्त भ२)
- मबनी- अपन काजमे नग बहक । जे किछ कण-साग भगरान देखिन ओकबा भवि मन थाहक । ताड ी-दक ले पीँहक । रँसीसँ रँसी साह-सुखा बहक । नीरोग बहरै कबरँह ।
- मंगल- एते दिन तँ ले पछुनियो । हूदा आग पछै छियो- तँ पठन-लिखन छै की ?
- मबनी- ले हो, अमबखे छी ।
- मंगल- तँ एते केना रँमै छिनी ?
- मबनी- देखे छहक, हम जन्दी रँबाम पड' छी । एक दिन सुगब चवरैले गेलौं तँ हाग असकूनपव एगो हूनसा पाँच हाथक छेलौ, उ भाषामे यह सब कँह छेलौ । कनी कार ठाठ भ२ सुनलौं । रँड नीक नग । ओहिना कबए नगलौं । रँड हेदा रँमागए । पाँच-छह रँथ पहनका गप छिँ । जखनि सुगबपव पियान गेल तँ सुगब रँड दुब चलि गेल छन । दौग क२ सुगब नग गेलौं । भाषा छुछि गेल ।
- मंगल- आबो जे किछ कहरै से तँ मानि जेरौ । हूदा ताड ी-दक रँना बहन ले हेतौ ।



- मवनी- से किथ, ताड़ ी-दाक थमृत छिई ?
- मर्गन- रानव जानथ खादी सुखाद । तू ने पीई छै तँ रैसी हुवाग छै । जखनि पीने बँह छी तखनि दुनियाँमे हमवासँ नम्वर के बँह छै । कियो ने । रँड मन नगै छै ।
- मवनी- रँड मन नगै छह तँ ओकवा तियागर ने हेतह तोबा ?
- मर्गन- ऊँह, ओग रिना हमवा बहन ने हेतो । खल्ल-पानि रिना बहियो सके छियौ ।
- मवनी- एगो कबह, दाक साफे छोड़ा दहक खा साँनहे-साँन एक हुचुचा ताडीएँ पीखह । खपना सभ गवीरँ छी ।
- मर्गन- हँ, रँड रैसी तँ ग चलेरँना छै । खहुमे हमवा रँड रँवदस कबए पड़त । **थैव**, ग कवरौ ।
- मवनी- तरँ तोहव गज्जत डोममे जकव रँठतह । फेव रौखा दुखनक पठ १गपव सेहो पियान देरँहक किये । एक दिन बस्तामे मासूँव कँह छेरखिन- खहाँक रौखा रँड चन्सगव खडि । एकवा मनसँ पठ १७ ।
- मर्गन- से तँ ठीके कँह छै । छोड़ १ मनसँ पठत-लिखत तँ सबकारी नोकरी खरँस हेते । खपना सभकेँ सबकाव छुँट देने छै । झुदा खाग-कान्हि पठ १गमे रँड खचा नगै छै । ओते खचा कतएँ खनरीही ?
- मवनी- हिन्मत ने हवह । ने तँ सभँ काज चोपठ भ२ जेतह । तोहव दाकक खचासँ रौखा पठा नेत । दव-दुनियाँमे एगो रैँषी खडि । रैँषीक कोनो चिन्ते ने । उ सभ खपन-खपन सोसवागवमे खडि । रौखाकेँ पठ १रँह । रँड सथ नगर खडि । रँड लोककेँ पठ १त देखे छिई ।
- मर्गन- (झुसकी दैत) एगो राँत कहिँ दुखन माए ?
- मवनी- कहक ने ।
- मर्गन- गै एक दिनका भोज कोन खा एक दिनका बाजा कोन । एगो षीका कोन, एगो रैँषी कोन ।
- मवनी- से की ?
- मर्गन- मन होगए एगो खारो रैँषी होगतए ।
- मवनी- चूपह-चूपह लोक स्नतह तँ की कहतह ? खारँ गो छैहे से रिसवि गेलहक । खानी जनमेने होग छै खाकि ओकव पतिपानो कबए पड़ छै । रैँषी-रैँषी दुनुकेँ खपना-खपना जगहपव रँड महत छै । कियो केकवासँ कम ने छै । तोबा तँ एगो रैँषी छह । केकरो किछो ने बँह छै से । उ केना बँह छै ?



मंगल- से तँ ठीके कह छै । खेब, छोड़ बैष-बैषीक नपौड़ १ । छोड़के मनस  
पठ एरै आ रँडका हाकिम रँनाएरै ।

मवनी- थ रँ रँजनह एक नाथक गप ।

पठाम्फेस ।



## दोसब दृश्य

(स्थान- मंगलक घब । मंगल कोनियाँ रीनि बहन छथि । )

मंगल- हमब सबरैष्टा ढपीमे रँडका हाकिम छै । अस.डी.ओ हँ हँ अस.डी.ओ । रीना पढ़ने भेन हेते । सोसबागब जाग छी तँ हुनकब मकान देखि कइ चकरिदोब नगि जागए । हमरो रैष्टा पढ़ा -लिखि कइ ओहने हाकिम रँनते ।

(दूखनक प्रवेश)

दूखन- रौं, कान्हि हर्म भरेते । कान्हि खांतिम डेष्ट छै । पाँच सए ठाका नगते ।

मंगल- (आश्चर्यसँ) रौप रे रौप, पाँच सए ठाका । पाँच सए ठाका । दू-चारि दिन पढ़ाति भवरौही तँ ने हेते ।

दूखन- हेते तँ, झुदा हागन नगते । हागन नइ कइ चाबम दिन धरि हार्म भरेते । एक सए ठाका हागन नगते । दूनु मिना कइ छह सए नगते ।

मंगल- एते पाग कहियो ने नगर छन । मैथ्रिकमे रँड खबचा नगै छै रौखा । पेष्टकेँ देखरै की हाबम भवग देखरै । खैब, तँ असकून जो । कनी माएकेँ पठा दिहनि ।

(दूखनक प्रस्थान)

मत तँ होगए रैष्टाकेँ खूम पढ़ा -लिखा रँडका हाकिम रँनेरिते । झुदा रीना मानक कमान केना हेते ।

(मंगल माथपब हाथ नइ कोनियाँ रीननाग रँन कइ दग छथि । मबनीक प्रवेश । )

मबनी- की कहनकह ? (मंगल कनीकान गूम बँह छथि । )

की कहनकह ?

मंगल- की कहरौ, रौखाकेँ हाबम भरेमे छह सए ठाका नगते । से किछ ने हूबागए । की कवरौही ? कहिनि ईरेब छोड़ा दगने । पौक सात देखत जेते ।

मबनी- पबियास कबहक ने । ने हेते तँ रूमन जेते । घबमे छिष्टा खा कोनियाँ छै ने, ओकरे रौचि कइ दइ देरै । छह गो छिष्टा छै खा पाँच गो कोनियाँ छै । एक-एको सएमे छिष्टा रिकते खा तीसो-तीसोमे कानियाँ तँ छह सए रँसैथ भइ जेते ।

मंगल- खैब खेरौही की खा रौसरनाकेँ कथा देरौही ?





- मवनी- कहुना क२ दिन-ग्रदस क२ नेरैँ खा रौसरेता मातिककेँ नेहोवा-रिनती क२ नेरैँ । कहरेनि एना-एना रात भ२ गेलैँ माि नक । उ खरसुस माि जेथिन ।
- मर्गन- तू रैँसी बूँसे छिही । हुनका हम चिन्ह छियनि । उ मक्खीचूसक ओगध छथिन । ताड़ ओरानीकेँ खमूका ना कहने छेलिई । पचास ठाका ओकरो भ२ गेलैँ ।
- मवनी- हुनको कहिक एना एना भ२ गेलैँ । से कनी दिन थमूछ ।
- मर्गन- रैँस, कहरेँ । गौ, कोनियाँ-पथियाक कोनो गिबहत भँजियाएन छौ की ?
- मवनी- एक दिन खाए रौसरेता माि नक कहने छेलथिन किछ कोनियाँ-पथिया दगले । जाग छिई हुनके द२ देरनि ।
- मर्गन- जो, मातिकसँ पष्टतौ की ले पष्टतौ ।
- मवनी- किखए ले पष्टते । खपने पसारी छथिन । नख-छह कए क२ द२ देरनि ।
- मर्गन- रौसक पाग काष्ट लेखुन तरँ की कवरिही ?
- मवनी- पएव-दावही पकड़रनि जे ईरेव ले लेखुन । रौखाकेँ हावम भरैने पाग देरौक छै । कनी-मनी नगाए क२ देखुन सपाए देरनि ।
- मर्गन- जो, नरँ द२ जो । ले हेतौ तँ ओमुरेसँ ओमुरे हष्टया चलि जगहैँ । खाकि हमरँ चरियो ?
- मवनी- तू कथाने जेरँह । एक खादमीक काजमे दु खादमी किखए रँवदेरँह । फेव सुगरो चवरैने जागक छह ने ।
- मर्गन- हँ से तँ ठीके । देवी ले कव नरँ द२ जो ।
- मवनी- रैँस, जाग छिख । (प्रस्थान)
- मर्गन- जग दिनसँ दक पीनाग छोड़ि देरौँ तग दिनसँ कोनो काजमे मन ले नगैँ । कहुना-कहुना काज-उदम करै छी । लोक सबकेँ पीरित देखै छिई तँ मन चष्टपष्ट कवए नगैँ । झुदा पठ गक खातिव हम एते मजरुव छी । के की न२ क२ खाएत खा की न२ क२ जाएत । खेनहा-पीनहा ने सँग जाएत आरो कथी । जदी खपना नग पाग बहितए तँ खाग कनी देखतीरँ दक दिस । एक्काँ कोनियाँ रौकि जैते तँ दक जोग भ२ जैते । ई रौचमे कोनो साव गौहकी ले ने खाएत । भगरानो हमबाने खथनि रँड दुब गेलथिन हँ । कहिया एथिन कहिया ले । दकरँता साव तेहन खचव खछि से एक्काँ ठाका उधारी ले देत । (कोनियाँ नगले बूधनक प्रवेश । )



- बूधन- (प्रसन्न भ२) की हौ मंगल काका, एगो कोनियाँ लेरौक छेनए । छै अपना नग ?
- मंगल- हाथेरौता द२ देरैह । कनीए बहि गेलै । रँटा यामँ रीनि दग छिख ।
- बूधन- पाग केते लेरैक ?
- मंगल- कोनो हाथी-घोड़ क दाम नगतह ? पचासे ठाँका द२ दिहक ।
- बूधन- रँड रैसी कठ छटक । उहो दिन हष्ट्यापव ईसँ नमूहव खा डिजेनगव रीस ठाँकामे रिकाग छेलै । पाग ले बहए ले लेलौ । सोचलौ गामपव अपन डोमसँ लेरै तँ सस्तामे हएत । झुदा तूँ रँड महग कठ छटक ।
- मंगल- की कवरैँ मातिक महगाग केते रँटा गेलै । रौँसो महगमे कनीए पड'ए । खेव मेहनतो रँड नगै छै । नारैह ने जे देरैक से । तूँ हमव पसावी छिख ने ।
- बूधन- (रीस ठाँकी निकालि क२) लेह, हम एतरैँ देरैह ।
- मंगल- (रीस ठाँका न२ क२ प्रसन्न मने) गरुए एगो पलीोक पाग ले ? दसो गो खारो दहक मातिक ।
- बूधन- खा ले हेतह । देरैक तँ दहक ले तँ जाग छी हष्ट्यापव कीनि लेरै ।
- मंगल- से तँ ले हेतह मातिक । हमरा तोवापव दारी खडि । खारँ पाग दहक की ले दहक । झुदा घुमि क२ ले जाए देरैह । (गिडगिड गगत) हे हे, कक्कारैँ अपना दिससँ खाग परिँले पाँचो ठाँका दहक मातिक ।
- बूधन- जा तूही जीतनह । पाँच गो खाग परिँले दग छिखह । (पाँचठकही बूधन मंगलकेँ देनखिन खा उ पाग न२ कोनियाँ हुनका देननि । बूधनक प्रस्थान)
- मंगल- (प्रसन्न मने) भगरान रँड ष्ठी छथिन । सरँक जोगाव नगरैँ छथिन । खाग एगो पली पीरैँ कवरैँ । जे हेते से हेते ।

पठाँफेप ।



## तेसब दृश्य-

- (स्थान- चन्द्रशे न्याक हरेली । अपन दवानपव रुबसीपव रैस सिकवेष्ट पीरै छथि । दवानपव चाबि-पाँचैरु रुबसी आ एगो छैरुन नगर छन्हि । )
- चन्द्रशे- (सिकवेष्ट मीमा क२ बथि थिसियागत) ओग डोमिनियाँके कहने छेनिई छिष्टा-कोनियाँ देरौक नेल । कहक नने आरँ माँ नक । से आग धबि अरिंते अछि । धान सभ बाग-छित्री होगत बँहए । गोरब-कवसी जतए-ततए पडन अछि । सभैरु रँवसातेमे दूँष्ट-ठाँष्ट गेल । आरँ ओग डोमिनियाँके देखै तहन ओकरा सिथेरै जे कोन रँसक दाहा होग छै ।
- (हेव थुँपी रीड़ १ नगा क२ पीरँ नगै छथि । तखने पाँचैरु छिष्टा आ पाँचैरु कोनियाँ न२ क२ मवनीक प्रवेशे । चन्द्रशे रीड़ १ मीमा क२ बथि नग छथि । )
- मवनी- (दवानपव कोनियाँ-पथिया बथेत दुरेसँ) गेव नगै छी माँ नक ।
- चन्द्रशे- (थिसिया क२ की गेव नगै छै । कहिया कहियौ छिष्टा-कोनियाँ द२ जागने से आग एरौँहै । सभैरु समान बाग-छित्री भ२ जागत तँ न२ क२ की कवरँ । जे तूकपव नै से कथीदुनपव ।
- मवनी- की कवरँ माँनिक, दुखना रौँडकेँ मन खवाप भ२ गेल छेलै । तँ देवी भ२ गेलनि ।
- चन्द्रशे- हमवा सीथेरै छै, हमवा ठकेँ छै । कही नै, दाक पीरँसँ रुबसत नै भेलै ।
- मवनी- नै माँनिक, आरँ कहाँ पीरँ छै दाक । खानी साँनेष्टामे एक रौँतन ताड़ १ पीरँ छै । (चन्द्रशे हँसि दग छथि । )
- चन्द्रशे- रिनग केतौ रैषणो भेलैए । **खैब**, दाक छोड़ा देनको से तँ रँड नीक केनको । ताड़ १ ओतेक खतबनाक नै छै आ पागओ कम नगै छै । अछ्छा होड़ ग़ गप-सपप । कह कएगो कोनियाँ आ कएगो पथिया छै ?
- मवनी- पाँच गेव कोनियाँ आ पाँच गेव पथिया छन्हि ।
- चन्द्रशे- सभैरुकेँ कएगो पाग भेलौ ?
- मवनी- डेट सए ठके पथिया आ पचास ठके कोनियाँ जोड़ा देखुन ।
- चन्द्रशे- रँड महग कह छिही ।
- मवनी- की कवरँ माँनिक, रँस रँड महग भ२ गेलै । हिनकेमे सँ रँस-पच्छीस ठके कष्टे छेलियनि । झुदा अथनि गरुए सौँसे नमवी न२ नग छथिन ।



तेपवसँ मेहनतो रँड नगौ छै । से कोनो ग्रा ने रूवै छथिन । देखुन ने दस ठाका कमे ।

चन्द्रशि- (तृष्ठी सिकरेष्ट नगा क२ पीरत) हम मोनाग-तोनाग ने करै छिई । हम एक रैव कहै छिई । देरौक हेतो तँ दिहै, ने तँ न२ जगहै ।

मवनी- कहियौ मानिक । कनी सोचि क२ कहथुन । हमछँ खलीपव छी ने ।

चन्द्रशि- पचास ठाके छिई आ रीस ठाके कोनियाँ । सभ्ठा मिला क२ सावहे तीन सभ्ठा ठाका भेलौ ।

मवनी- रँड कम्प भेलै मानिक । हष्टयापव रँचरँ तँ रँड कम्प हेते तँ आठ सभ्ठा । ग्रा साते सभ्ठा द२ देखुन ।

चन्द्रशि- (थिसिया क२) कहनियौ ने हम एकुरैव रँजे छिई । देरौक छौ तँ दही ने तँ न२ जो अपन कोनियाँ-पथिया ।

मवनी- ओते ने थिसियाथुन । एकुरैव ग्राहो रँजथुन ।

चन्द्रशि- पचास ठाका आरो देरौ । देरौक छौ तँ दही ने तँ न२ जो ।

मवनी- रँड आशिसँ हिनका आधन बहियनि जे मानिक किछ नगा क२ देखिन । रँषाकेँ मैष्टिकक हावम भरैक छै । झुदा ग्रा उचितोमे रँड कम्प दग छथिन ।

चन्द्रशि- रँषा मैष्टिकक हावम भवतो । (आश्चर्यसँ)

मवनी- हँ मानिक । छौड । छह सभ्ठा ठाका मंगौ छै । आथिबी छुओ सभ्ठा ठाका द२ देखुन ।

चन्द्रशि- (थिसिया क२) भगलौ की ने एतएसँ । कपुपार थागले एनेहँ जे, न२ जो, अपन रँचि निहँ । अथनि तुवन्त भाग । ने तँ हमव नवसिंह तेज हेतो तँ रँपसँ लँष्ट कवाध देरौ ।

मवनी- कोनो हिनका बाजमे रँसल छियनि जे हमवा रँपसँ लँष्ट करेता । कोनो कवजा ने मांग आधन छियनि जे हमवा रँपसँ लँष्ट करेता । कोनो एक-रँवकेँ दु-रँव ने मंगौ छियनि जे एहेन कथा कहता । अपन लीबहत जानि क२ एते थेथनियाँ करै छेलियनि ।

चन्द्रशि- तँ कवजा ना नेलौ तँ अथनि रँसक एक सभ्ठा ठाका निकार ने तँ एतएसँ ससब ने देरौ । (सिकरेष्ट नगा पीर छथि ।)

मवनी- मानिककेँ एहेन रूषि होग छन्हि जे गवीर-नचावकेँ मजदुरीक होदा उठारी । अथनि जग दथु । गह्र कोनियाँ-पथिया रँचि क२ हिनका पाग द२ जेरनि । अथनि हम कतएसँ पाग देरनि ।



- चन्द्रेश- हम तँ किछ्छो ले रूने छिई । हमरा पाग चाही अकथनि । ले तँ ससवि ले सके छै ।  
(मवनी कोनियाँ-पथिया माथपव उठा जाध छहित झुदा चन्द्रेशे कबसपव सँ उठि रैत देखरैए । )  
एक्का डेग तँ ससवि कइ देख गही । की दशा होग छौ ।  
(मवनी डबसँ ले ससवि बहरी अछि । )
- मवनी- (कनेत-कनेत) ले पाग छेलै तँ झुड मिचकथा किअ रसि नेनके ।  
भुखने बहितो तँ सुतने बहितो । ओगने हमरा रैज्जति करैए । जेरै  
घबपव सातो प्रवथारै उकठरै सबधुथारै । रज्जव खसौना ले हमरा एते रात-कथा सुनरैए ।
- चन्द्रेश- एतए गावि देरही तँ अथनि रैतसँ ससवि देरौ । (मारने उठनथि । )  
(चन्द्रेशिक एकनौती रैषी चन्द्रप्रभाक प्रेरेशि । अरिते अपन पितारै भवि पाँज पकडा मवनीके रौचोननि । )
- चन्द्रप्रभा- गौ डेमिनियाँ, एते गावि किनको दूपाव किअ दग छिही अ नीक रात ले भेलौ । जो रौषमे गावि पठा हँ जेते मन हेतौ तेते ।
- मवनी- हम अपन घबरारै गावि दग छिई । आनके तँ ले दग छिई ।
- चन्द्रप्रभा- से तँ हम अन्दरसँ सुनरियो । झुदा एतए गावि ले दही घबपव दिहनि । जो एतएसँ । तँ सब ले ने सुबवरै ।
- मवनी- हमरा सबधुथा खातिव अहकँ राँ हमरा ले जाध दग छथि ।
- चन्द्रप्रभा- की भेलौ से ? कोनो कावण हेते ले ?
- मवनी- की कावण बहते । अह जे हमरा रैषारै मैषवीकक फावम भरैक छै । छह सए षका गगते । कहनिई कोनियाँ-पथिया रैचि कइ दइ देरै ।  
मानिको कहने छैनथिन दइ जागने । नइ कइ एनौ तँ मानिक रँड कम दाम गँगोनथिन । हमरा पडता ले पडन । कहनियनि कनी आरो देखुन ।  
अपन-अपन नबला तँ ले चाँ छै । कम-सँ-कम रैषाक फावम भवाग छह सए देखुन । तहीपव थिसिया गेनथिन आ कहनथिन जे रसिक पाग एक सए षका अथनि बाथ तरँ जगहँ ।
- चन्द्रप्रभा- दूथन अहीक रैषा छी ?
- मवनी- हँ, हमरे रैषा छी ।
- चन्द्रप्रभा- रँड तेज अछि रैषा । खूँ मनसँ पठ १६ ।
- मवनी- गवीरँ रूते पठ १६न हेते ? फावम भरैक पाग ले जुमे छै ।



- चन्द्रप्रभा- (प्रसन्न मन) पापा, अहाँ डोमीनकेँ छह सभ ठाँका दियन्न आ कोनियाँ-पथिया बथि नियन्न । फावम भरैक सरौत छै । ईमे मदति कबरौक चाही । अपने गामक मातिक छेए ।
- चन्द्रशि- (थिसिया क२) जाड, मन्सीसँ आनि क२ द२ दियन्न ।  
(चन्द्रप्रभा अन्दव जा क२ मन्सीसँ छह सभ ठाँका आनि क२ मबनीकेँ देली । )
- चन्द्रप्रभा- डोमीन, कोनियाँ-पथिया अन्दव द२ दियौ तहन जाधर ।
- मबनी- रैस, द२ दग छिई ।  
(मबनी कोनियाँ-पथिया अन्दव द२ एली । )  
जाग छी रूचरी ।
- चन्द्रप्रभा- रैस जाड ।  
(मबनीक प्रस्थान)  
(चन्द्रशि तामसे रिभावे छथि । उ चन्द्रप्रभापव आँथि नान-पीथव क२ बहन छथि । )  
पापा, डोमीन चलि गेली । आरिँ प्छे छी, एन किअ ककरो हाथ उठा नग छिई ? उ जतए-ततए रजते । अहीक प्रतिष्ठापव पड़त किने ?
- चन्द्रशि- (थिसिया क२) हमव प्रतिष्ठाकेँ अहाँ किअ सोछे छी ? हमवासँ किनको रैसी प्रतिष्ठा छन्हि ई परोपङ्गामे ?
- चन्द्रप्रभा- पापा, अ घमडक रात भेल । घमड बारणोकेँ ने छोडनके ।
- चन्द्रशि- (ठहक्का मावि क२) हा हा हा हा हा हा... । बारणक रात करै छै । अथनि तू रूचरा छै । ने रूमरिनी । ओकवामे रूड बहस्य छेलै ।
- चन्द्रप्रभा- बहस्य किछ हौन्हि पापा । झुदा उ घमडेक कावण मावन गेला ।
- चन्द्रशि- आग जौं तू हमव रैषी ने बहितेँ तँ तोरो रिना रौत देने ने बहितियौ । झुदा करी तँ करी की ? जुग जमाना नीक ने छै । एक्छा छै तँ गम था नग छी ।
- चन्द्रप्रभा- (किचुकैत) जुगे-जमानाकेँ देखैत हम कहलौं पापा ।
- चन्द्रशि- जुग जमाना हमवा झुपुमे छै झुपुमे । जे चाहरै जथनि चाहरै से हेते । कान थोति क२ सुनि नही आ तोँ अथनि हमवा सामनेसँ हटि जौ । तोँ हमवा डोमीनियाँ नग रूड रैकुफ रैनै ।  
(चन्द्रप्रभाक प्रस्थान)  
केना-केना पाग रैठकबलौं आ आग पागरैना कहरै छी । से हमहीँ रूने छी । चन्द्रप्रभा मम्मी, चन्द्रप्रभा मम्मी, चन्द्रप्रभा मम्मी ।



- मनीषा- (अन्दबस) हगए एलौं। हगए एलौं।  
(चन्द्रशेक पनी मनीषाक प्रवेशे।)  
की कहलौं।
- चन्द्रशे- की कहरें ? अहाँक रैषी ओग डोमिनियाँक कावणे हमबा बूबरक रँना देलक।  
डाँष्टेने ले चाहतिरिं झुदा डाँष्टे पडन।
- मनीषा- हँ देखिनिरिं मन रिपुआधन आ किचुकैत। की भेले से ?
- चन्द्रशे- की हेते ? ओग कोनियाँ-पथियामे हमबा ले कम तँ दु सए ठाँका रँचितए।  
से थारि कइ पँचैती कबए नगरी। उ कतए जेगते ? जे कहतिरिं से  
कबिते। मजरुब छेले। ओकबा रैषाँकेँ फावम भरक छेले, तगसँ अहाँ  
रैषाँकेँ कोन मतनरें ? ओकब रैषाँ रँड तेज छै, तगसँ अहाँ रैषाँकेँ कोन  
मतनरें ? उ जे दु सए ठाँका रँचिते, से अपने सभकेँ ले नबन्हा  
होगते।
- मनीषा- खैब, छोडूँ, गप-सपप। पिया-पुता छेले। उ सभ ओते नख-डुख ले  
बूने छै।
- चन्द्रशे- अहाँ कह छी पिया-पुता छै। मैथ्रिकमे पठए आ पिअ-पुता अछि।
- मनीषा- माए-रौपक नजरिमे उ केतरो नमहब भइ जाएत तँ पिअ-पुता बहत।
- चन्द्रशे- से तँ ठीके। झुदा हम जे किछ रँचाएरँ ओकरेने ले रँचाएरँ। हमबा खान  
के छै ? हम चाह छी ओकबा पठ १-लिखा कइ रँडका डाकूँब रँनारी। रिना  
पागए हएत ? बूँ-बूँसँ तनारँ भरै छै। हम एगो सिकरुँ पाँट रँब  
पीरिं छी। लोक सभ देखि कइ हँसत हएत। कपड १-नत्रा केहेन पहिरे  
छी से देखिते छी। भगरान हमबा ओते ले देने छथि जे हम सँष्टेडब  
जिनगी जरी। अछँ सभकेँ ओते नीक कपड १-नत्रा ले दग छी।  
थेनाग-पीनाग एकदम साधारण थाग छी। किअ से बूने छिरिं ?
- मनीषा- कहिओ ले ? हम ओते ले बूने छिरिं।
- चन्द्रशे- एकरुँ गप छै- रैषाँकेँ रँडका डाकूँब रँनेनाग आ ओकब पागक जोगाब  
केनाग। डाकूँब रँना ओकब रिखाह जातिमे बाजा घबमे कबरँ। दुनियाँ  
देखत आ स्नत तँ सोचमे पडि जाएत। जतए-ततए रँ हएत जे  
चन्द्रशे रँरँ एतेक रँडका लोक छथि। रिना रँष्टे कठने रा पँष्टे कठने  
रँसी सम्पति ले भइ सकै छै। से बूँमि निर्यो चन्द्रप्रभा मम्मी।
- मनीषा- तँ २ २ एहनो ले नीक जे सभ सवापिते बहए।



चन्द्रशि- कौखा सवापने रेंग ले मरे छै । अहाँ एकब चिन्ता ले कर । अपना-  
अपनाले सब हवान छै । मानमे एकरेव रौराधाम अरिस्स जाग छी । से  
केना ? तँ स्रतानगजमे उतवराहिनी गंगामे स्नान कइ गजाजल भवि  
कामव सजा रौर-रैम करैत-करैत पार-पैदर । अ रैड पैघ पुण्यक  
काज छी । सभ्रुण पाप रौरा हरे छथिन ।

मनीषा- एकब माने अ भेन चन्द्रप्रभा रौरु जे केतरौ पाप करी आ कामव नइ कइ  
रौराधाम पधरे चलि जाग तँ रौरा सब पाप हवि पुण्य भवि देता ।

चन्द्रशि- सएह बुझु । अ सब रात केतौ रैजरे ले । हमव पनी छी तँ अपन  
दिरक रात कहि देलौ । अदा डोमिनियाँके जे दु सए ठाका रैसी नगि  
गेन । तगसँ हमवा कखनो-कखनो रैड आहि अरैए । जाड अछु ले  
सम्भावलौ ।

(चिन्तित अदामे रैस सौंसका सिकरैठ धवा पीअए नगै छथि । )

पठाम्फेप ।





## चाबिम दृश्य-

(स्थान- मंगलक घब । मंगल चंगेवा रीने छथि । )

मंगल- कथनि गेल मोगी कोनियाँ-पथिया नऽ कऽ । से अथनि धरि ले आएन ।  
नगैए हठिया चरि गेल रहत । स्वरारोकेँ छोड़ा आएन छिई गाछीमे । उ  
कथनो एकठाम बह छै । हबदम छन-छन करैत बहए । कनी जनदी  
अरिते तँ देखतिई केमहब गेलै केमहब ले । लोक सरहक राबी-नाड ीमे  
चरि जाग छै तँ उ सब मारि की कहाँ रजए नगै छै ।

(मंगलक पितियोत भाए बरीयाक प्रवेश । )

बरीया- भैया, भैया, तोहब स्वगब कतए छौ ?

मंगल- की भेलै से ? रँड हवररी देखे छियो ।

बरीया- भैया बड, पथिया रँचि कऽ अरैत बहिई ने तँ एगो डोमरारोकेँ देखनिई  
रँड रेशेमे स्वगब भगौने जागत । नागत जे तोरे स्वगब छौ । हम तँ  
पडरे सान रँचि गेलौ । कनी पीईओक मन छन, ले पीलौ दौगत एलौ ।  
से देखतिही गऽ ?

मंगल- कनी तूछँ चन तँ । दूखन दूखन दूखन ।

दूखन- (अन्दबसँ) हँ रँड, हएह एलौ ।

मंगल- जनदी आ । रँड जकरी छै ।

(दूखनक प्रवेश)

दूखन- की रँड ?

मंगल- कनी तू एते रँस आ चंगेवा रीनत हेतौ तँ रीनि ।

दूखन- ले हेतौ ।

मंगल- कोशिषि कबही । कना कोनो रँकाब ले होग छै । हम जाग छियो स्वगब  
देखेने । चन बरीया दूनु भाँग ।

(मंगल आ बरीयाक प्रस्थान)

दूखन- हम तँ कहियो ग्रा काज केनिई ले । तँ हेते केना ? हमब खनदानी काज  
छी । कवरै तँ जनदी सीथि जअरँ । झुदा एक्क-दूगए दिन केने तँ ले  
सीथरँ । पठ गमे पठखा जअरँ तँ सबजी मारता । देखत जेते  
पछाति । अथनि पठ गपब पियान देरौक अछि ।

(मवनीक प्रवेश । )

मवनी- (थिसिया कऽ) आ गेलौ कतए ?



- दूखन- स्वगवमे गेलौ । किथए थिसियाएन छै माए ?
- मबनी- तोबापव नै, ओकवपव । ओकव चात्तिपव ।
- दूखन- का भेलै से ?
- मबनी- का हेते ? तोहव रौप चन्द्रशि मानिकसँ उधावी एगो रौस न२ नेनके । तगने हमबा घेव नेने छेनए । तगपवसँ रौतो देखरै छेनए । धनि ओकव रौँषी कहाँदून तोरे किनासमे पठ' छै, से रौँचैनक आ कोनियाँ-पथिया न२ माएसँ छह सए षाका आनि क२ देनक । ख्छदा तू गसकुन जो हम भनसा करैने जाग छी ।  
(दूनक प्रस्थान)
- मंगन- (प्रवेश क२) हीर्ब व व व२ । हीर्ब व व व२ । हीर्ब व व व२ ।  
भैया, कहाँ केतो देखे छिई । नगैए उरुए साव डोमरा न२ गेलौ ।  
सावकेँ चिन्हरौ ने केनिई । पकड़रै सावकेँ तँ ओकवा माएसँ रिखाह क२ नेरै ।
- मंगन- हमरो नगै छौ, आरँ स्वगवसँ हाथ धूख पडत । उरुए साव खनी गाछीमे सँ हाँकि क२ भागि गेलौ । आग जे साव भेष्ट जगते तँ खनी कातीसँ भेष्टी निकानि लेतिई ।
- बरीया- भैया बाड, चन ने सावकेँ देखिई कतए गेलौ ? भेष्टते तँ ओकवा माएसँ हम रिहा क२ नेरँ आ रँहिनसँ तू क२ निहै । दून सावछ ओते बहि जाएरँ । नरका सोसवागवमे मानो-दान थुम होग छै ।
- मंगन- टोवरौ साव पकड़ए देतौ । गामेपव चन । आरँ सँतोखे कवए पडत । चन केते दिनसँ किछ नै भेलै । आग हेते । तोरो सगमे किछ मान-पानी हेरै कवतौ आ किछ हमरो सगमे छैहे । मन रँड चष्ट-पष्ट करैए दानके । दान पीना रँड दिन भ२ गेल ।
- बरीया- जे गति तोरो से गति मोरो, बामा हो बामा । चन भैया आग हेते भवि मन दान ।
- मंगन- आग थानरो रँड छी । साव स्वगरौ नै भेष्टन आ हवानो रँड भेलौ दून भाँग । एगो आशा छेनए जे खगुगी-खगुगीमे स्वगव रौँचि क२ काम कवरँ, सेहो हवा गेल । **खेव**, चन, सँतोखे गाछमे मेरा फड' छै । भगमान रँड षी छै ।
- बरीया- छोड भैया, आ थिससा पिहानी । दानके मन रँड चष्टपष्ट करै छौ ।
- मंगन- चन । छदा बरीया, एगो रात कहियौ ?



- बरीया- कही ने भैया ।
- मंगल- दुखना माए थिसियाएत तँ । उ मनाही केनेए ।
- बरीया- एगो रात कत तँ भैया । तू ओकर रहु खाकि उ तोहब रहु ?
- मंगल- उ हमब रहु ।
- बरीया- तरँ उ तोबापब शिसन कबतो । जे जे कहतो से से कबरिही ? धुब साब, ईस रहुत याँ एक चुक्क पानिमे डुमि क२ मबि जो । हम खपना रहुकेँ जे कहरेँ जखनि कहरेँ से कबते । ने तँ हाथ-पएब रान्हि सष्टकासँ पाँती-पाँती दागि देरेँ आ दागिमे बह छिई ।
- मंगल- तँ ने दुनु पबानीमे हबदम खष्टपष्ट होग बह छौ । मिना क२ चनरिही तँ किच्छो खपना ने हेतो । हमबा घबमे देखे छिही कहियो हन्ना-गन्ना । घबक नम्क्या रहु होग छे । उ भंगठतो तँ बुमही नम्क्या रगदि गेलौ ।
- बरीया- ओकरापब चनरँ तँ उ झूहमे जारिथ नगा देत ।
- मंगल- ने, से केतो करे । मिन-जुनि क२ बहरिही तँ उहो बुमते अ हमब घबरना छी आ पबिराबने हवान बह छे ।
- बरीया- खच्छा चन भैया, खागष्टा पीने । खान दिन ने पीहेँ ।
- मंगल- तँ, रजिहेँ ने भोजी नग । ने तँ उ हमबा फज्जति कबत ।
- बरीया- ने रजरै, चन ने तू । तगए दक दोकान खारिथ गेलौ । (पर्दा हटेथे आ दक दोकान देखागए । काडनूबपब शिशिकात रैसन छथि । )
- जो भैया तूही जो ।
- मंगल- तूही जो बरीया । पाग ने ।
- बरीया- तूही जो भैया । पाग न२ ने । हमबापब साब थिसियाएन बहए । एक-दिन कहा-कही भ२ बहए । रैसी पाग ले छेनए ।
- मंगल- खच्छा ना, हमही जाग छी । (मंगल बरीयासँ पाग न२ क२ दक काडनूबपब दुगो पौलीथिन नेन पहुँचन । बरीया राहब ठठठ खडि । )
- मानिक, दुगो पनोथिन दहक ।
- शिशिकात- की हो मंगल, रहुत दिनपब एनह हन ?
- मंगल- हम छोडा देनिख मानिक । साँवकेँ एक रौतन ताड एष्टा पीई छी । खारँ रहु पबहेजमे बह छिख ।
- शिशिकात- एकरागि एना रदति गेनहक ? किछु भेनह से ?



- मर्गन- नै, किच्छो भेल नै । हमर घबनी रँड थिसिआगए । रँषेण मैथ्रिकमे पढाए । ओकर पाग नै जूमेए । तहीने ।
- शिक्षिकांत- धूशिन पढा छह से केतो ?
- मर्गन- नै, धूशिन कहाँ पढा छै केतो । कितार-कोपीमे रँड पाग नगै छै हो । अछु रीचमे हावम भवाग कहलक छु सए नगते ।
- शिक्षिकांत- रँटा याँ रात । खुम मनसँ रँषेणकेँ पढा रह । तोबा सबकेँ आवकषण छह । केतो-ने-केतो नोकरी भैए जेतह । ओना नोकरी भेगै रा नै भेगै, अपना नेन पढनाग सबकेँ पवमारशियक छै ।
- बरीया- भैया, भैया बड, जूँ कष्टेने गेलौँ तँ सतुआगन केने अरौँ की ? जे तूकपव नै, से किदनिपव । नै होग छौ तँ छोडा ए दही ।
- मर्गन- एते केतो लोक पष्टपष्टएन हेल ? एहेन छौक नीक नै ।
- बरीया- से तँ बुमिते हेरही । आनरौँ तँ आन, नै तँ चनरियो । (बरीया जग नगैए । )
- मर्गन- कक, कक, कक । हगए एलौँ । मानिक दियो । जनदीसन दियो । रँड ी कानसँ ठाठ छी । निथ पाग ।
- शिक्षिकांत- (पाग न२ क२) पाग तँ कम्मे छह । आरो दहक ।
- मर्गन- रँटा गेलौँ दाम से ।
- शिक्षिकांत- हँ, एगोपव पाँच ठाका ।
- मर्गन- किथए रँट १ देलक ?
- शिक्षिकांत- हम रँटरौँ छिई से ? सबकारे रँट १ देलके ।
- मर्गन- सबकारे रँतरह भ२ गेलौँ । एते केतो महगी होग । गरीरहा नै जीखत । भने हम दार छोडा देलौँ । ताड ीमे पागओ कम आ कोनो खवापीओ नै । अछ्छा देह मानिक, दस ठाका दोसव दिन न२ निथह ।
- शिक्षिकांत- बरीया, दस गो आरो दही । दाम रँटा गेलौँ ।
- बरीया- आ न२ जो । (मर्गन बरीया नग जग क२ दस ठाका आनि शिक्षिकांतकेँ द२ दूषा पोनिथान न२ क२ ओते पीएने रँस गेल । दनु पी बहन खछि । )
- मर्गन- की बरीया ? आरँ सतोथ भेलौँ नै ?
- बरीया- हँ भैया आरँ मन शीत भेलौँ । आ तोबा ?
- मर्गन- हम तँ रँसी दिनपव पीए छी से केनादन नगैए ।
- बरीया- दु-चावि दिन पीरही नै, तँ हेल नीक लागए नगते ।



- मर्गन- हमबा दारु नै पीरौक अछि । हम ताड़ ईष्टा पीथरै । उना आगुष्टा पी ले  
छी । हो हो, जन्दी हो । जन्दी सधा । गामपव काज रहुते छै ।  
(दुनु गोष्टे दारु सधेनक आ उठि कइ रिदा भेन) ।  
बरीया, नगे छौ हमबा नागि गेलौ ।
- बरीया- भैया, हमरो नगे छौ नागि गेलौ ।  
(दुनु नुमेत-नामेत जा बहन अछि । )  
सब आग दस कपैया रैसी नइ तिया । जाएगा थानापव आ कहेंगा  
पुनिसरौकेँ आ दारुना गवीरँ सभसे रैसी पैसा किअए नइ जेतो ह । अपने  
सब रूनेगा केहेन महिबम होतो ह ।
- मर्गन- हमबा तँ रहुक चिन्ता नागर ह । उ जे हमबा देखेगा दारु पीने तँ हमबा  
रठनीसँ नाँष्टेगा । रैकावमे पीया । उए उए उए । उरुष्टीओ नै होतो ह ।  
जे दारु निकलि जाएगा तँ निसाँ दुष्टि जाएगा । रहुसँ रँचि जाएगा ।
- बरीया- भैया, तोबा रहुसँ एते डव होतो ह । ओहेन रहुकेँ गोली मारि देगा ।
- मर्गन- रहु मारि जाएगा तँ केकवा नइके बहेगा ?
- बरीया- सब भैया, ओहो नै बुनता ह । दुनियाँमे रहु का कोनो कमी नाय ।  
जेकरेसँ चाहेगा तेकरेसँ रिखार कइ लेगा । मारि ब थागने आ जेहन  
जागने रैष्टा तैयारो ह । लेकिन एकठाँ रात कान थोरि कइ सुनि जौ  
भैया कान्हि पहिने अपने गोली मारि लेगा तँ ओग दारुनाकेँ मारेगा ।  
सबराकेँ जिन्दा नै छोडगो ।
- मर्गन- बरीया, एगो रात होगा हम कनियाँकेँ कहेंगा जे बरीया जरबदसती हमबा  
पीया दिया । तेसँ हम रँचि जाएगा ।
- बरीया- त्तु गारि काहे देतो ह सब ? (दुनु थिसिया जागए । )
- बरीया- अथनि घबपव जाएगा तँ तोबा रहुकेँ नइ बहेगा ।
- मर्गन- हमबा से कहेंगा तँ हमहुँ कहेंगा हम तोबा रहुकेँ नइके बहेगा ।
- बरीया- नाज नै होतो ह सब भारो नइके बहेगा । एक्क थापव मारेगा न कि सरँ  
दारु निकलि जाएगा ।
- मर्गन- हमबा छेष्ट भइके मारेगा तँ हमहुँ नै छोडगो । तोबा माए दुध पीयाया ह  
आ हमबा नै पीयाया ह । मारि कइ देखो ।  
(बरीया मर्गनकेँ एक थापव नगरैत अछि । मर्गनो एक थापव बरीयाकेँ  
नगौनक । दुनुमे नगड ा हँसि गेल । दुनु हाथपाग कइ बहन अछि ।  
हेब दुनुमे उठा-पठक भइ बहन अछि । )



- बरीया- (छातीपब चटा ) साब भैया खुन पी लेगा । आरँ राजो कोन राप काज देगा ।
- मंगल- हम तबमे ठ ते दूखारे । ने तँ तोबा देखा देता । तैयो कहि देता ठ आग ने कान्हि तोरो खुन पी लेगा ।  
(मबनीक प्रेशी । बरीया देखिते मातब पड़ । जागए । मंगल उठि कइ रैसए ।
- मबनी- की भेलै दूखन राँड ? तँ, दूनु भाँग एना किथए केनह एना तँ कहियो ने करै छैनह ।
- मंगल- (कनी भँसिआगत) स्वगब तकेने गेलौं दूनु भाँग । डूहो ने भैठन ।  
कतए-कतए ने रौंधेलौं । कोनो था-पता ने । बसतामे बरीया ने मानक दक पीया देक आ अपनो पीक साब । निसाँमे गाबि दिख नगल ।  
कहनिर्ष तँ माबि-पीठ शुक कइ देक ।
- मबनी- एकब माने तूँह दक पीनह । जँ तँ हमब कहन ने केनह तँ हमबा तोबा कोनो नाता ने । आरँ हम तोबा घबपब घुमि कइ ने जेरँह । तोरे तकेने आधन छेनिख । जाग छिख जतए मन हएत ततए ।  
(थिसिया कइ पड़ एत जा बहन थछि । पाछु-पाछु मंगल सेहो जा बहन थछि । )
- मंगल- घुमि जो दूखन मए घुमि जो । आरँ तोहब कहन कबरँ ।
- मबनी- से कबितह तँ अह दशी होगतए । जा, हमबा-तोबा कोनो मतनँ ने ।
- मंगल- हे हे एना ने कबरी । केतो भइ कइ ने बहरँ । दूगो बहितए तँ छोडाँ ओ दैतिगुं ।
- मबनी- जा, दोसब कइ निहह ।
- मंगल- से तँ ने हेते । तोबा रीना हम ने बहि सके छियो । हे हे दूखन मए घुमि जो । आरँ गनती ने हेते ।  
(भवि-भवि पाँज कइ मंगल मबनीकेँ पकड़'ए । झुदा छहनि-छहनि भागि जागए । )
- रैषा दूखन केना पढ़ते ? हमबा रूते ने हेतो ।
- मबनी- तोहब रैषा छिख । जे मन हेतह से कबिख ।
- मंगल- हे हे तोबा दूखनक सपपत, घुमि जो ।  
(मबनी ठाठ भइ जागए । )
- मबनी- तूँह दूखनक सपपत था जे एहन गनती ने कबरँ ।



- मर्गन- हे हे एहेन सपपत खागने ने कह । दब-दुनियाँमे एक्कगो रैषा छो ।  
कान पकड़ा उठि-रैस दग छियो ।
- मवनी- रैसी ने पाँचे रैब ।
- मर्गन- से जाएरैब कहरोँ ताए रैब ।
- मवनी- दूगए रैब ।  
(मर्गन दुरैब कान पकड़ा उठि-रैस देनक । मवनी नजआ गेली । )
- मर्गन- खारि की कह छै, कह ।
- मवनी- निसाँ दूरैब पहिने ?
- मर्गन- हँ खारि ठीक छियो ।
- मवनी- बरीया जे उना केनकह, से थानापब जगहह ?
- मर्गन- ने जो । निसाँमे दूनु भाँग छेनिर्ष तँ उना भ२ गेलै । हमरे मदति करिने गेन छेनए । दिनक दोख छेलै भ२ गेलै । रैसी धबरीही तँ रात रँटा जेते । रँबरँबि नगड होग बहतो । से देखही एना कहाँ कहियो होग छेलै । कहियो देखिहँ नीक मनमे तँ बुनाए-समनाए दिहनि । खच्छा चन खारि घब ।  
(खागु-खागु मवनी खा पाछु-पाछु मर्गन जा बहन खछि । )
- मवनी- एगो कहह जे चन्द्रशि मानिककेँ राँस उधावी किखए नेनकह जे उ हमबा ओते फज्मति केनक ।
- मर्गन- उधावी दूखारे ने केने हेतो । कम-सँ-कम पागमे मर्गने हेतो तँ ओते कम ने केने हेरँही । तहीपब उकठा-पैटी केने हेतो । तोबा पहिने कहने छेलियो उ कँजुशिक ओगष छै । पथिया-कोनियाँ नेनको की ने, से कह ।
- मवनी- नेनके तँ, झुदा छुखए सए ठीका देनके । डुहो ओकर रैषा उ ने ।
- मर्गन- खैब, छोड़ । कहना नेनके ने । काजसेँ काज छै ।  
(खन्दबमे दूखन पठा बहन छै । पर्दा उठै छै । )
- दूखन- कतए जाग गेन छेनही ?
- मवनी- राँए, सुगब हवा क२ एनो हेंन । जेहो खाशि छन सेहो चनि गेन ।  
भगमानेकेँ गरीरँहा देखन छै ।
- दूखन- पाग दही ने असकून जेरै । सभ हाबम भवि नेनके । हमहीठा रँचन छी ।
- मर्गन- द२ दही, जन्दी चनि जेते ।  
(मवनी छह सए ठीका दूखनकेँ देनक । )



- मबनी- रौंथा, ठीकसँ पाग बथिहै, हवाड ले । भगमानक ना तह कह हावम  
भविहह । मासठव सहरि सभकेँ गोव सेहो नागि निहक ।
- दूखन- रैस ।  
(दूखन माता-पिताकेँ पएव छुरि गोव नागि स्फुर गेल । दू माथपव हाथ  
दह खसीवराद देलकनि । )

पठाम्फेस ।





## पाँचम दृश्य-

(चन्द्रशे ब्याक हरेली । चन्द्रशे मनहुंखाएत रैसन छथि । कनीकान पछाति ठुंणी सिकरेष्ट नगा क२ पी बहर छथि । )

चन्द्रशे- ओह । रैकारे खपन डोमिनियाँक चक्कबमे पड़लौं । खानसँ नगतौं तँ रैसी पाग नै नगिताए । तछुपब सँ हमब रैष्टीं खारो छौक दैतक । मजरुब भ२ क२ हमबा हमब दाममे कोनियाँ-पथिया द२ क२ जगताए । ओह । दु स२ षँका चलि गेल पानिमे । दु स२ षँका कमागमे केते लीड पेड़ छे से हमही बुनौ छी ।

(माथपब हाथ बथि चिन्तामग्न भ२ जाग छथि)

(चन्द्रप्रभाक प्रवेश । )

चन्द्रप्रभा- पापा, खेनाग रैनि गेल छे । चनु खा लिख ।

(चन्द्रशे किछ नै रैजे छथि । )

चनु ने, खेनाग सवा जाएत । हमरो असकुर जेरौक खडि ।

चन्द्रशे- जो ने, तोबा हम मनाह करै छथ्यो । खपन खगहेँ खा जगहेँ तोरे बाज छियौ तँ हमब कोन मोजब ।

चन्द्रप्रभा- (आश्चर्यसँ) हमब बाज छिर्ष । नै बुनलौं पापा एकब माने ।

चन्द्रशे- खथनि रैछा छे । तँ नै बुनारिनी । जो मम्मीकेँ पठा दिहनि ।

(चन्द्रप्रभाक प्रस्थान)

एक्का बली नै सोहाए छौड । कहने केना खएत छेतए, पापा, खेनाग खा लिख । सवा जाएत । जेकबाने हम एते करै छी, से हमबापब शीसन कबत । हमब मालिक ।

(मनीषाक प्रवेश)

मनीषा- का भेत ? किख नै गेतिर्ष खागले ? मन रैड उदास देखे छी ।

(चन्द्रशे गुम्म छथि । )

किछ होएए ? खकि बुँछा किछ उन्ममष्ट रौत रौजि दैतक ?

चन्द्रशे- (थिसिया क२) ओग दिनसँ हमबा खन्न-पानि नै नीक नगैए ।

मनीषा- कग दिनसँ ?

चन्द्रशे- जग दिनसँ डोमिनियाँ दु स२ षँका रैसी द२ दैतक ।

मनीषा- उ गप खथनि पबि धेनहि छी । हम ओही दिन रिसबि गेलौं ।



- चन्द्रशि- गुडक मावि धकवा जने छै । रानव जानए आदी सुखाद । अहाँकेँ कमाए  
पडा तए तहन ने बुमितिर्ष, कोन रौसकेँ दाहा होग छै ।
- मनीषा- बिया-पुता छै । जदी एकठा हुसिध गेलौ तगले एते आमीत पीने छी । अ  
रात आन कोग सुनत तँ कियो नीक ने कहत ।
- चन्द्रशि- लोक नीक कहै रा अपना । अपने नीक तँ सभाव नीक ।
- मनीषा- अच्छा जे भेलौ से भेलौ आरि ने हेते । हम ओकरा बुना-समना देरौ ।  
अहाँ चनु थागले । हुनो असकुर जेते । हमरो भुख नगन अछि । बातिमे  
ने खेलौ । मन ने नीक बहए ।
- चन्द्रशि- जाड अहाँ सभ थाग-पीर्ष जाड । हम रौदमे था जेरौ ।
- मनीषा- जदी अहाँ घबपव छिर्ष तँ से केना हेते ?
- चन्द्रशि- जदी हमवा थागक मन ने होग तहन ?
- मनीषा- गप-सपसँ मन बुना जाग छै ने । छोडू नष्टावम, चनु थागले । बुँचा  
आरि गनती ने कबते । सएह ने ?
- चन्द्रशि- हँ सएह । अच्छा चनु अरौ छी । एक आदमी कान्हि पाग दगले गुनका शैम  
देने बहए ।
- मनीषा- कनी जददी अरौ । (मनीषाक प्रस्थान)
- चन्द्रशि- भुँखे हमवा जान जाध बहन अछि । झदा ई रीचमे जदी सीताराम पाग  
दगले आरि जाधत तहन हमवा ने पारि घुमि जाधत । हेब पागमे आना-  
कानी कबत । रँड ि नमबिया छै । थाग कारमे हम जेनी-देनी कबिते ने  
छी ।  
(सीतारामक प्रवेश)
- सीताराम- (कब जोडा ) मानिक प्रशाम । )
- चन्द्रशि- खुँशि बह । दनदनागत बह । अहिना हमवासँ जेन-देन करैत बह ।
- सीताराम- मानिक, तनी हियारि देखतिर्ष । ती-तेना भेलौ ?
- चन्द्रशि- (डायबी निकानि देखि क२) दु हजाव आठ सए अष्टारन ठाका सुदि-झुबि नगा  
क२ भेलौ ।
- सीताराम- रौप ले रौप, रँड भ२ देलौ । ओते तेना भेलौ मानिक ?
- चन्द्रशि- आठ सए झुबि छेलौ । कही हँ ।
- सीताराम- थीके छेलौ ।
- चन्द्रशि- दस ठके चाबि अने सिकड सुदि छेलौ । कही हँ ।
- सीताराम- छेलौ, थीके छिर्ष ।



- चन्द्रशि- पच्चास महिना तीन दिन भेले । कही ह ।
- सीताबाम- (कनीकान ग्म पडा ) ओते ने भेन हेते । थीकसँ देखियो मा निक ।
- चन्द्रशि- देखने देखन छै । ओना हम एकरेव हब देख नग छिई ।  
(डायबी देखि जोडा -जाडा क२) देखही सीताबाम, निखतनक आगु रक्तन  
कोनो काज ने करे छै । हमबा डायबीमे अरुए निखन छौ आ ओहो रूमि  
नही हम गनती ने निखरौ । केकबा संगे के एले आ के जेते ।
- सीताबाम- तँ हेते । हम गबीर छी । हमबा तेते थोडा देरै ।
- चन्द्रशि- जोडा-छाडक ना ने जे । ओते नगरै कबते । कनी तँ अप्पन खैनी  
दही ।
- सीताबाम- हमरो तँ खैनी हेते । तेयो देखे थिई ।  
(सीताबाम खैनीक डिर्री निकानि) तनी खेले, निख ।
- चन्द्रशि- तँही चूना । तेहब हाथक रँदा याँ होग छै ।
- सीताबाम- खैनीओ रँद महद भ२ देले । मानिक । एत तका ते देरौ ने तरे खे ।
- चन्द्रशि- चूना ने, कते गप छुँछै छै ।  
(सीताबाम डिर्रीसँ खैनी निकानि चूनरैए । )
- सीताबाम- निख मानिक खैनी । (दुनु आदमी खैनी खेतथि । )
- चन्द्रशि- आरँ ना पाग ।  
(सीताबाम फाँठसँ तीन हजार ठाका निकानथि । )  
तीनु हजारिया छै ।  
(तीनु हजार ठाका सीताबाम चन्द्रशिकेँ देलनि । )  
कतएसँ आमदनी एनौ हन । तीनु कडकरौए छौ ।
- सीताबाम- मानिक, रँत डिर्रीसँ भेदकरे ।  
(मनीषाक प्रेरेश)
- मनीषा- आगक रँव ने भेले हन । कथनि कहनिई हगए अरै छी से अरिते छी ।  
भेले ने रूचिओक असकुर कामे भ२ गेले ।
- चन्द्रशि- की कविई, हमरुँ कोनो रँसन-सूतन छी ? काजे करे छी ने ? अही  
पागले दुनियाँ रँप-रँप करे छै । चनु, तबत एनौ ।
- मनीषा- पेष्टमे बँह छै तहने पागओ नीक नगै छै ।
- चन्द्रशि- झुदा पाग अरैत बँह छै तँ भुखे हवा जाग छै । ओना पेष्ट तँ पेष्टे  
छै । जगले दुनियाँ हवान छै । अहाँ रँठ, हम अरै छी ।  
(मनीषाक प्रस्थान)



- सीताबाम- रँडू कान भइ देलौ मालिक । घबपव ताजो छै ।  
चन्द्रशे- हण्ण जे सीताबाम, खपना खिबता पाग । (पाग खिबौननि । )  
सीताबाम- तेते खेबनिर्ष मालिक ?  
चन्द्रशे- जे तोहव खिबतो ।  
सीताबाम- मालिक, गबीरँ आदमीपव किछो दया-माया नै ?  
चन्द्रशे- हम की दया कवरौ । दया तँ भगरान करै छथिन ।  
सीताबाम- एगो खैनीक पुविठक पाग दियो मालिक ।  
चन्द्रशे- आरँ किछ नै हेतो । रँकावमे रँकव-रँकव रँके छै । उन्स पाग छोडा ए देने छियो । उल्लस पागके महत तँ कम बुनै छिही । रँसी जिद कवरिही तँ एक ठाका आरो दिखए पड़तो । कावण पाग आरँ नै चले छै ।  
सीताबाम- तइ २ २, नण्ण निख एकठाका । किख मन नागन बहत उल्लस पागने ।  
चन्द्रशे- हम तँ छोडा देने छेनिओ रुदा तोबा मन छौ तँ ना ।  
सीताबाम- नइ निख मालिक ।  
(सीताबाम एक ठाका चन्द्रशेके देननि । ओ सहर्ष नइ नेननि । सीताबामक आँखमे नोव आरँ गेल । )  
धनि छी मालिक । धनि छी मालिक ।

पठाम्फेस ।



## छथम दृश्य-

(स्थान- मंगलक घब मंगल पथिया रीनि बहन छथि । मवनी कोनियाँ रीनि बहन छथि । )

- मंगल- गग दूखन माए, पहिने हम जे जनितो, पठ १०मे एते खचा होग छै तँ दूखनकेँ ने पठ रितो ।
- मवनी- देखक, पठन-निखक जुग एते । सभ पठते खाँ उँ ने पठते तँ डुहोले रौखा जिनगी भवि अरजमे दैत बहत । कम-सँ-कम मैट्टिको कवा दहक तेकव रौद छोडा दिहक । ओना हमव रिचाव खडि जे जापवि रौखा पठत तापवि दूखो-तकलीफ काष्टि पएव पाछु ने कवर । रैसी पठते तँ खारो ना हेतह । पठ १० सड रौना चीजो ने छिई जे सडि जाएत ।
- मंगल- मैट्टिक पबीक्षा कहिया हेते ?
- मवनी- एक दिन रौखा रँजन छेलै, खरी रीचमे होगरौना छै । से पागक ओवियान कवही । पछुनिई केते तँ कहक दू सए ।
- मंगल- घबमे छै ने पाग ?
- मवनी- छै साबहे तीन सए ।
- मंगल- खारो पाग की केनही ? ई रीचमे तँ रँहुते कोनियाँ-पथिया रीकनो ?
- मवनी- से हम कहाँ कँ छी ने । छह सए रौखाकेँ हावम भरेले देनिई खाँ तीन सए किवाना दोकानरौनाकेँ देनिई । पाग खागरौना खागरौना जीत तँ ने छै जे खा गेनिई ।
- मंगल- से हमवा तोवापव रिसरास खडि । तोवा सनक घबरौनी भगमान सभकेँ दै । तह २२ ओहीमे सँ रौखाकेँ दह दिहनि खाँ डेट सए ठाका घब-रौद बहए दिहनि ।
- मवनी- ने, एक सए ठाका चन्द्रुशि माँ नककेँ रौसरौना दह दहक खाँ पचास ठाका ताड रौनीकेँ । रैसी नमनव बखरौक तँ तुकपव समान ने भेष्टतह । (दूखनक प्रवेश । )
- दूखन- माए, खागए जेरौ पबीक्षा दगले । हमव एगो सर्गी डेवा उँजिया खाएत छै । डुहो खागए जाग छै । पबीक्षा कान्ति सँ छिई ।
- मवनी- केते पाग नेरौही ?
- दूखन- दू सए दही ।



- मर्गत- दही जे कह छौ से । तूँ जो दूखन, खपन सामन सभ ओबिबाने ।  
(मबनी खन्दबसँ साठे तीन सए ठाँका खनतथि । दूनु माग-पूतक प्रस्थान । )  
(पीठेपव दूखन एगो नोबामे सभ समान सँत कइ खनतक । )
- मबनी- जे रौंखा, दू सए ठाँका ।  
(दूखन दू सए ठाँका जेतक । माता-पिताकेँ पएव छुरि प्रणाम करैए आ ओ  
दूनु खादमी खसीबराद दएए । )  
रौंखा, ठाँकसँ जगहह । ठाँसँ पबीष्का दिहक । उचक्का छौड । सभ सँगे  
एम्हव-ओम्हव नै घुमिहह । मधमनीमे रँड गाड़ । चले छै । काते-काते  
खपन सागडसँ खरिहह-जगहह ।
- मर्गत- माए ठाँके कह छौ । ओबिया कइ सभ काज कबिहँ आ खक्कव-खक्कव रौंस्र  
नै खेगहँ सपावनीए खेनाग खेगहँ ।
- दूखन- सहए कवरै रौंड ।  
(दूखनक प्रस्थान । )
- मबनी- हो, दूखन रौंड, तूँ ज डेट सए ठाँका नइ जेह आ चन्द्रशे मानिककेँ एक सए  
ठाँका आ ताड़ रानीकेँ पचास ठाँका दइ खरिहक ।
- मर्गत- ना दइ खरै छिई ।  
(मर्गत डेट सए ठाँका नइ प्रस्थान । )  
तूँ खँगना जो । हम दएए खरै छिई ।  
(मबनीक प्रस्थान । )  
(खन्दबमे चन्द्रशे खपन दतानपव रैसत छथि । पर्दा तुरंत हठैए आ हेल  
नगि जाएए । )  
प्रणाम माँ नक ।
- चन्द्रशे- खथनि जो । दू चाबि दिनक पछाति खरिहँ । खथनि उषारी-पुषारी नै  
हेतो । पछिना पाग रौंकीए छौ ।
- मर्गत- आग रौंस्र नगने नै एनौं हन । पछिना पाग दगने एनौं हन ।
- चन्द्रशे- तहन तूँ रँड नीक लोक छै । गौंकी एहने हेरौक चाही जे रौं तगदे  
पाग दइ दिखए ।
- मर्गत- खहाँ तँ ओग दिन कहाँदून दूखन माएकेँ पागने फन्मति कइ देरिई  
मानिक ।



- चन्द्रशि- ओग दिन अपन-अपन नहनाक मावि बह । ओना हमर रैषी तारे कनियाँके जीता देनको । हमबा हिसारसँ दु सए ठाका रैसी नगि गेल । **खेब**, केतो खानठाँ गेलै, अपने घबमे गेलै ।
- मंगल- मानिक, अहाँ हमबा घबकेँ अपन घब बुननिई । तगसँ छाती सुप जकाँ भ२ गेल । पाग लिख मा निक ।  
(चन्द्रशि मंगलसँ एक सए ठाका लेननि । )
- चन्द्रशि- मंगल, रँड रेंगवतापव तूँ ग पाग देनै । कान्हिसँ हमबा रैषीकेँ मैथ्रिकक परीक्षा छी । ई रौचमे हाथ साहे खाली बहए । ओना रैकसँ खानए पडा तए । डेनी एते-जेते, तगले पाग चाही ने आ ओकवा संगोमे किछु चाही । खाजे किछु खाग-पैरक मन होग ।
- मंगल- रैस मानिक, आरँ हम जाग छी । ताड रीरानीकेँ सेहो पाग देरौक छै ।
- चन्द्रशि- खाग खाली पागए रौष्टि बहन छै । की खाग-कान्हि रैसी खामदनी भेलै हेल ?
- चन्द्रशि- नै मानिक । सिबिह साबहे तीन सएक कोनियाँ-पथिया हष्टियापव रिकले । ओगमे सँ दु सए ठाका रैषीकेँ देनौ । उ खाग मैथ्रिककेँ परीक्षा दगले मधमली गेल । एक सए अहाँकेँ देनौ आ पचास गो ताड रीरानीकेँ देरै ।
- चन्द्रशि- आ घब-रैद ?
- मंगल- घब-रैद किछु नै । दुखन माए कहलक, रैसी निम्नव वखरँकक तँ तूकपव समान नै भेलैतह ।
- चन्द्रशि- एकदम ठीक कहलको । रँड बुषियावि आ चानु-पुर्जा छै । खेब रौसक खगता हेतो तँ न२ जगहै ।
- मंगल- रैस मानिक, जाग छी, प्रणाम ।  
(पर्दा खसि । चन्द्रशिक प्रस्थान । मंगल ताड रीरानी शीला ओगठाम जा बहन अछि । अन्दबमे शीला अपन ताड ी दकोन नगा उपस्थित अछि । तीन्ठा गौंकी सेहो ताड ी पी बहन अछि । देरँन, सुकवाती आ डडू गौंकी अछि । पर्दा उठै । )
- मंगल- की भौजी, की हार-चार ?
- शीला- ठीक छै । पछिना पागकेँ रिसवि गेलिई । केते दिन भ२ गेल । हमरो तँ महाजनकेँ दगक छै । अहाँ कोना नै बुने छिई जे हमरूँ पैकावसँ ताड ी न२ क२ रैटे छी । भैया हबदम तामे-जूखामे हवान बहए । कहुना-कहुना हम छह खादमिक परिवार चनरै छी ।



- देरैन- ठीके कह छह भाय । भोजी रँड खगत छै । ज़ा तँ ओह छै जे अपन  
झहे-ठोरे ताड़ १ रैचि क२ पबिराव चनरैथे खा पियो-पुतोके पठरैथे ।
- मंगन- गबीर ने गबीरक दूख बुने छै । हम सभरू बुने छी । तँ ने आग पाग  
दगले एनिर्ष हन ।
- सुकवाती- भैया, तँ रैकारेमे एते रात सुननहक ।
- मंगन- सुकवाती, रात कोनो रैकाव ने होग छै । खानी ओकव खमन कबरौक  
चाही । हम सधह करे छेलौं । भोजी, पछिना पचास ठाका लिख ।  
(शीना मंगनसँ पचास ठाका न२ क२ बखनथि । )
- शीना- खहाँ ठीके कह छिर्ष मंगन रौखा, गबीर गबीरक दूख बुने छै । उपावी नगले  
कोनो रात ने छै । उपावी-नगद दुनिये छै । खानी पियानमे बहए जे  
रैरसखा खवार ने होग । पीरै-तीरै तँ पी लिख, तर ज़ाखर रौखा ।
- मंगन- खखनि ने पीखर भोजी । हमव छैम ने भेलै हन । साँममे आधर ।
- डुडु- धु, मंगन भाय, तूछु केहेन लोक छह जे एकरैव आधन खा एकरैव एरै  
ग२ । समैक महत दहक ।
- मंगन- हम तोरे जकाँ खोबहे करे छी जे जखनि देखु तखनि ताड़ १ दोकानमे  
ने तँ दक दोकानमे निश्चिते । ओना पहिने हमछु तोरे जकाँ छेलौं ।  
झदा हमव मोगीक किवपा जे खखनि रँड पबहेजमे छी । मन होगए जे  
साके छोडा दिर्ष । भोजी, हम ज़ाग छी । साँममे आधर ।
- शीना- रैस ज़ाड । साँममे ज़कव आधर ।  
(मंगनक प्रस्थान)
- देरैन- सुकवाती भाय, एगो गप बुननहक की ?
- सुकवाती- ने भाय, की भेलै हन कतए ?
- देरैन- उ दिनरीरना गप ।
- सुकवाती- ओह ने, छोड़ १-छोड़ १रना । ज़गमे छोड़ १ मवि गेन ।
- देरैन- हँ हँ, ओहएरना ।
- सुकवाती- उ गप तँ प्रवान भ२ गेन । भोजी, खहाँ ज़ा गप बुननिर्ष की ?
- शीना- हँ, पोपवमे निकनर छेलै । सौसे दुनियाँ खनखोर भ२ गेन बँह ।
- सुकवाती- खहाँके केहेन नगन ?
- शीना- केहेन नगत, रँड खवाप । ईसँ घिनासुँरैरना गप ओरो की भ२ सके छै ।  
ईसँ रँटा याँ तँ ज़ा होगते जे उ छोड़ १ सभ अपन माए-रँहिन-रैरैक सर्ग  
ओना-ओना कबितए ।





छुड़ु- भौजी, हम जे सबकाव हवितर्ष तँ ओग सभरषा छौड १ खाकि मवदारारके पकडा सौसे देहक चमड १ घाच ओगमे भुसा भवि रीचना टोकपव रषांगि दैतिर्ष जेतए उ सभ एहेन काम केनक । झुदा एतुक्का निखमे-कानून हद छै । हमवा तँ मन होगए जे हमव रषी चरिते तँ सभ छौड १-मवदारारके मवरा ओकव माए-रषापरके सेहो मवरा दैतिर्ष जे हेव एहेन बिया-पुता नै जानिमते ।

परषास्येप ।



## दोसब थक पहिन दृश्य-

(स्थान- मिश्रबक चाह दोकान । री.ए. पास मिश्रब नीक चाह दोकान चना बहन थुछि । )

मिश्रब- रीप रे री, महगाग एते चबम सीमा पाब केने जा बहन थुछि जे चाहक दाम रूठ । दी । हमरुं की कवरै ? हमरो तँ समान महग कीनए पड' छै । झुदा हमनी केना आगु रूठ थि ? कमपीठशिनक महोत छै । सोचि क२ ने चतरै, तबीकसँ ने चतरै तँ हेंका सकै छी । ओना सोदा ठीक बहते आ पाग कनी रैसीओ नगते तँ गैहकी अरुं कवते । हमब दोकान गाम-घबक दोकान छी । एतुक्का आदमीकेँ शिबक अपेक्षा कम आमदनी होग छै । तही हिसारसँ हमबा चरक चाही । की कवरै, एकू ठीका आगसँ रूठरै छिथि । मात्र चाकिसँ पाँच क२ दग छिथि ।

(संजीता, हबीशि आ भोनुक प्रवेश)

संजीत- की हान-चार छै काका ?

मिश्रब- रूठ खवाप ।

संजीत- से की ? पहिने सब दिन नीक कह छेलौं ।

मिश्रब- गहए जे चाहक दाम चाकिसँ पाँच भ२ गेन आगसँ ।

संजीत- ग़ कान खवाप रीत भेलै । महगाग रूठते तँ सब समानक दाम रूठते । ग़ तँ सुरभारिक छै ।

हबीशि- तँ रैसी रूने छिही संजीत । तीस दिनमे एक सँममे तीन ठीका रैसी नगते आ दुनु सँममे साठ ठीका । एकबा तँ कम रूने छिही ।

भोनु- रैसी रूमाग छौ तँ चाह साहे ने पी, हबीशि । नीक समान कीनरिहिन तँ नीक पाग नगरै कवतौ । हिनकब चाहक जोड़ । ई एबियामे केतौ छै, से कह तँ ?

हबीशि- से तँ ने छै आ ने हेते ।

भोनु- तहन रूकरास रून्न कब । यौ मिश्रब काका, तीनठा चाह दियौ रूठि यासँ ।

मिश्रब- एकब चिन्ता तँ सब ने कबह । हमरुं कोनो थमकथ ने छी ।

(मिश्रब चाह रूना बहन छथि । )

संजीत- हबीशि, थपना सररुक बिजनेष कहिया एते ?

हबीशि- थही रीचमे अरैरैना छै । बिजनेषक पछाति तँ की कवरिहिन ?



- संजीत- परीक्षा तँ खुम रँटा याँ गेन छै । दोरीओ रँड चले छेले । निथ ने सके छेलौं । जौं पास कवर तँ पापा जेतए कहथिन पढाजे तेतए पढर । ने तँ हम दिवनी भागि जाएर । खा तोहब की प्रानिग छौ ?
- हबीश- हमब प्रानिग गहए छौ जे हम पढाग सारे छोडा देरौ । काबु हम हागत हेररे कवरौ । से किथए तँ बुनविहन हम चाबि दिन एककोष्टा कोपीमे बौले नम्रब ने निथनिध ।
- संजीत- से एना किथए केनही ?
- हबीश- से कोनो जानि कइ केनिध । धोखासँ छुष्टि गेलै । परीक्षा दगले जाग छेनिध तँ वस्तामे सब दिन भागि खा नग छेनिध । नगैए ओही दुखारे छुष्टि जाग छेलै । की कवरै भागि हमब प्रिय थमन छी । ओग रिना हम कानो काज ने कइ सके छी । ने हेते तँ विजलक रौद हमरुँ भागैक दोकान खोलर । भावै भाय, तँ किछो ने रँजे छह ।
- भोवु- तँ, सब रँजिते छह तँ हम की रँजी ?
- संजीत- किछो तँ रँजह अपन प्रानिग ?
- भोवु- हम तँ गेलने घब छिथह । तेते ठाँगँ परीक्षा लेले से जुनि पुछह । सब चरु गार्ड हमरे कममे बह छेलए । पढाये हम गार्जनके हम रँड ठकनिध । हमब गार्जन पढाक कोनो खर्चमे कोताही ने केनथिन । हमही कनी एमहब-ओमहब रेसी करै छेनिध । कोनो ने कोनो गरे हम सिनेमा रँवरवि देखै छेनिध । परीक्षामे सिनेमा याबि दग छेनिध ।
- संजीत- तहन तँ तानु गोष्टे एक बग । दोब-दोब मसियोत भाय । ने हेते ने तँ तानु गोष्टे विजलक पछाति दिवनीए भागि जाएर । ने तँ गामपब लोक सब रँड थिदोस कबत । यौ मिश्रब काका, खाग थरुँक चाह, पाग रँठने रँज्जब ने तँ भइ गेल ?
- मिश्रब- ने रौखा सब, रँज्जब ने भेल, तैयाब थछि । खाग भिड ने छेलै खा तोवासरँहक गप सुनेमे नीक नगै छेलए । तँए थनठा कइ सुने देलौं । पहिने तँ सब चाह लेह । तकब पछाति हमरुँ किछ अपन रिचाब देरह । (मिश्रब चाह छानि कइ तानुके देलक । तानु चाह पी बहन थछि । )
- कह जागए रौखा सब ?
- संजीत- हँ काका, थरँस कथियो ।
- मिश्रब- केते छोडा । सबके देखै छिध कथनो तशि जोति देलक । ने पढाक समए बुनै छै खा ने खेले-कदैक । थठमे जा-जा कइ मोरौगतपब



कनहूसुकी करैत बहै छै । गेल असकृत आ बहन सिनेमा हाँमे रा गाँडी-  
रिबद्धीए रौआगत बहन । तूही सब कहत ओ सब जिनगीमे नीक बिजनेष्ट  
आँखि कहियो देख सकत ?

हबीशि-

अपने नगती कहरै काका ।

मिग्वर-

हमबा आरो जकाँ जौं तोबा सबकेँ परीक्षा कबगब होगतौ तँ रँडका

झंगरा रँझा खजापब दुष्टा झंगरा नरैब अरितौ । सबकारक रैरसथे तेहन

भ२ गेलौ जे पट् आकेँ कम नरैब आ एम्हब-ओम्हब करैरनाकेँ रैसी नम्रैब  
अरै छै ।

भोलु-

तहन हमबा सबकेँ रैसी नम्रैब अरौक चाही ?

मिग्वर-

आरि सकेँ छै । कोनो भावी रात नै ।

भोलु-

काका, जदी हमबा सब अरैब पासो क२ गेलौ तँ अहाँकेँ बसगननासँ

दहारौब क२ देरै । अहाँक झंठमे अमृत रसए ।

मिग्वर-

हमबा एहन बसगनना नै चाही । हम तँ भगरानसँ मनैरै जे एहन रिद्यार्थी

कम-सँ-कम अरैब जकब फअन क२ जाए ।

संजीत-

काका, एहन असीबराद देरै तँ हम सब अहाँक दोकन छोड़ा देरै ।

मिग्वर-

हम कोनो सिद्ध प्रकथ छी जे हमब असीबराद काज कबत । तखनि एते तँ

अरिसस कहरौ जे तू सब रँड नापवराही रँवतनही तँ ओकब फन भेष्टक

चाही आ ठोकब नगक चाही । ठोकब नगने रूषि रँट' छै । रूषि रँटने

सतर्कता अरै छै । आ सतफतासँ सफनता भेष्टै छै ।

हबीशि-

रात तँ ठीके कह छिई काका । अपनेक एकौष्ठा रात कष्टैरना नै अछि ।

(तीनु गौष्ठा चाह पीरि क२ गिनस बखनक । )

मिग्वर-

हम अपन अन्नभर कह जाग छियौ । खवाप नगतौ तँ आपस क२ दिहै ।

तू सब रँजे छैनही जे फअन भेनापब तीनु गौष्ठा दिन्नी भाषि जाधरै ।

अ तँ नीक रात नै भेलौ । जिनगी हाबि-जीतक छिई । एक दिन हाबमे

तँ दोसब दिन जीतौ सकेँ छिई जदी मेहनति कबरै तहन । डुपरमे

अकूआ नै फड' छै । देखाही, असफनते सफनताक जननी छिई ।

असफनतासँ घरैरौक नै चाही । रँझि सफनता नैन अथक प्रयास कबक

चाही । हमब रातपब तू सब अमन कबरै तँ २ २ जिनगी सफन बहतौ ।

आरि छोड़ अ गप-सप्प । चाहक पाग ना आ जाग जौ अपन-अपन काज

कब ।



- (तीनु गोष्टे खपन-खपन चाहक पाग मिश्रवके देतक । तखने पेपवरना गौरीक प्ररेशे । )
- गौरी- पेपव, पेपव, ई पेपव, आजुक ठैका समाचाव । मैथिकक विजठ, विजठक रौछाव, विजठक रौछाव ।
- संजीत- यौ पेपवरना, एगो पेपव दिख ।  
(गौरी पाग न२ क२ पेपव देतक । संजीत पेपव न२ माथसँ सठैतक । तीनु विजठ देखेथे । )
- गौरी- पेपव, पेपव, ई पेपव, आजुक ठैका समाचाव । मैथिकक विजठ, विजठक रौछाव, विजठक रौछाव ।  
(गौरीक प्रस्थान । )
- संजीत- असकुतक नाँ तँ देखे छिई । हम खपन रौत नम्रव कहाँ देखे छिई । नगैथे छुष्ट गेल हेते ।
- हबीश- दोस, हम खपनो रौत नम्रव ले देखे छिई । पेन्डिगोमे ले देखे छिई ।
- भोनु- दोस, नगैथे जोष्टिया बूडनो । हमरो रौत नम्रव ले छै ।
- मिश्रव- की रौथा सभ, सम्हबनो की बूडनो ?
- भोनु- तीनु गोष्टिक रौत नम्रव ले छै आ असकुतक नाँ छै । एकव की माने भेलो कका ?
- मिश्रव- एकव माने हेव मैथिकक तैयारी केनाग भेल । यानी सभ हथेल । हेव मेहनति करे जाग जाड ।
- संजीत- की हबीश ? की भोनु ? मन ले नोग छै जे माथ-रौपके झूठ देखारी । एम्हरे-सँ-एम्हरे चलै जाग जेमे दिवनी ?
- हबीश- एकरेव माथेके कहि देतिई ।
- संजीत- माथ कहि सके छै जे भागि जाते ?
- भोनु- धुव साव सभ, चलै चल एम्हरे-सँ-एम्हरे । झूदा भाड । कतएसँ खनरिही ?
- संजीत- साव दोस, गहो ले बूने छिही । खपना सरहक देवा डारपव बह छै । रूड रैसी तँ पीपी, पकड़ा लेते तँ जहनेमे बहरँ खारो की ?
- भोनु- ले हेते ले तँ पीपीके गप-सप देत गैठपव जाधरँ आ मौका पारि चलती गाड़ सिँ राहव ठैत देरै । लेत बहत साव, ठकठ आ ठकठक पाग । ठकठक घुस न२ न२ साव सभ पेठ नमरोने बहथे ।



- हवीशि- खा जदी चिक्कन जकाँ हँसि गेलौ, छैलैक मोक्या ले भेपौ, तहन की कवरिही ?
- संजीत- ओते सोचरिही त२२२ ले जाधन हेतौ । चलैक छौ तँ चन, देखन जेते जे हेते से हेते । वाम भरोसे हिन्दु हेष्टन ।  
(एकठा ग्रामीण वाम प्रवेशिक प्रवेशी । )
- वामप्रवेशी- (खुद) एहेन सुन्दर बिजलठ रँहू िदनपव भेलैथ । दू सए रिद्यार्थीमे तीन गो फेन । पास भेलहामे मंगनाक रैष्टी असकुनमे सँडुड हसुष्ट खा चन्द्रशि रौरूक रैष्टी सँडुड सकेण्ड । एगो चाह दहक मिश्रव भाय ।  
(संजीत, हवीशि खा भोवुक प्रस्थान । )
- मिश्रव- दग छिख भाय । कोन मंगना रैष्टी द२ कहलक ?
- वामप्रवेशी- डोमरा मंगना । कहाँदून ओकर रैष्टी रँड चन्सगव छै । सौसे सकुनमे सबकेँ पछावि देलक ।  
(मिश्रव वामप्रवेशीकेँ चाह देलक । उ चाह पीरैथ । )
- मिश्रव- उ तीनु छौड १ रैकारू छन । सब दुर्गसाँ भवन छन । तँ तीनु गेन वसातनमे । तीनु भने फाधन भ२ गेन ।
- वामप्रवेशी- रएह तीनु छन फेनहा ?
- मिश्रव- हँ रएह छन ।
- वामप्रवेशी- सौसे सकुनमे तीनेष्टी फेन भेल । सेहो रएह तीनु कबमजकथा छन । देखियो भाय, चन्द्रशि रौरूक रैष्टी सौसे सकुनमे नाँउ केनक । ओहो रँड चन्सगव छै ।
- मिश्रव- जौँ ओकरा सबकेँ मनसँ पठ १धन जाध तँ खरँससे नाँउ कबत ।  
(चाहक पाग द२ वामप्रवेशीक प्रस्थान । )
- चन्द्रशि रौरू तँ खपना रैष्टीकेँ पठ १ सकै छथि । झुदा मंगना रूते ले हेते खपना रैष्टीकेँ पठ १धन ।

**पठाम्फेस ।**



## दोसब दृश्य-

(स्थान- चन्ददेशिक हरेली । मैथिलिकक बिजलक खूशीक माहौल छै । चन्द्रशि  
आ मनीषा रैषी चन्द्रप्रभाक नीक बिजलक सरनधमे चर्चा करै छथि तथा  
ओकर अगिला पठ १०क सरनधमे सोटे छथि । )

चन्द्रशि- चन्द्रप्रभा मम्मी, हमबा आशि ने छत्र जे हमब रैषी एते रँटा याँ बिजलक  
आनि सकत । फसल डिरीजन आ अपन असफलमे सँड सकल । हमब  
पाग बली-बली ओसना गेल । हम आग रँड खूख छी आ अहाँ ?

मनीषा- हम अहाँसँ रैसी खूशी छी ।

चन्द्रशि- रँजे ने लुके छी आ रँड खूशी छी ।

मनीषा- हम रँजबगरनी तँ ने छी जे छाती चीब कइ देखा दिख । एतरेँ बुमियो  
जे रैषी माथके होग छै ।

चन्द्रशि- एकब माने रैषी रौपके होग छै आ हमबा रैषी भेल ने तहिन रैषीक  
उपतनिमे मेहनति अछि सएह ने ?

मनीषा- धुब जाड, अहाँ जडा धइ लेनि ।

चन्द्रशि- अहाँ राते सहए रँजनौ तँ धबरे ने ।

मनीषा- धुब, अहाँसँ के जीतत । रैषी अहाँके छी ।

चन्द्रशि- अदहा भेल, पूरा ने भेल । कहियो रैषी दनुके छी ।

मनीषा- रैषी दनुके छी ।

चन्द्रशि- हँ, अँ रँ पूरा भेल । रैषीक बिजलक खूशीमे किछ कषार ।

मनीषा- खाली हमरैषी कषेरै, अहाँ ने । अदहा अँके लगत ।

चन्द्रशि- कहियो ने, अँके पूरा लगत । काका, अँ तँ हमरे माथा-हाथ देर ।

मनीषा- सब गप तँ अँ बुमियते छि । की थाएर, राजू ?

चन्द्रशि- की राजू, सबके अपन-अपन पसीन होग छन्हि । तगमे हमब पसीन  
गबम-गबम पातब-पातब जिलेरी अछि । आ अँके ?

मनीषा- अँके जे पसीन, से हमबा अँसँ रैसी पसीन ।

चन्द्रशि- आ रूचिके ?

मनीषा- रूचिरना रात हम केना कहौ ? उ तँ उ ने रँजते ।

चन्द्रशि- तहन रँजरियो रूचिके । पुछे छि ।

मनीषा- रूचि, रूचि, चन्द्रप्रभा, चन्द्रप्रभा । चन्द्रप्रभा ।



- ऋसूबागत चन्द्रप्रभाक प्रवेशे)  
की मम्मी ?
- मनीषा- किथए नै रँजे छेलौं ?
- चन्द्रप्रभा- एगो हमब रँहिन आरि गेल छेली हमबा रँपाग दगले । हुनके सर्ग गपमे नगल बही । नै सुनि सकलौं । सुनलौं तँ दौगलौं । की मम्मी, हमबापब थिसिखाएल छी की ?
- मनीषा- (ऋसूबागत) थिसिखाएल किथए बहरँ ? खुशी छी, रँड खुशी । तँग रँजेलौं, की थाएरँ ? थागमे अहाँकेँ कौन चीज पसीन अछि ?
- चन्द्रप्रभा- हमब मम्मी पापाक खुशी हमब खुशी छी । ओगमे आगु थागक सब चीज त्रुच्छ अछि । पापा थिसिखाएल छथिन की ?
- मनीषा- से हमबासँ पढे छी, की पापासँ पढरँनि ?
- चन्द्रप्रभा- किथए नै पढरँनि पापासँ । अरँस पढरँनि । पापा, पापा । किथए नै किछ रँजे छी ?  
(प्रेमसँ दाढ ी पकड़ा ) पापा, पापा । हमबापब थिसिखाएल छिई की ?
- चन्द्रशि- (ऋसूबागत) दु सए ठाँका तँ डोमीनियाँकेँ रँसी नगा देरँ तगसँ हमबा तकलीफ छल । ऋदा तौबा विजलँसँ हम अपन तकलीफकेँ आगसँ रिसवि बहन छी आ तौबापब रँड प्रसन्न छियौ । रँज तँ, विजलँक खुशीमे की थेमै ?
- चन्द्रप्रभा- पापा, अहाँ हमब नगतीकेँ माफ क२ हमबापब प्रसन्न छी । ओगसँ पैघ ओरो की भ२ सकैए ? ओही प्रसन्नतासँ हमब मन गदगद अछि । आरँ हमबा किछ खेरँक गच्छा नै अछि ।
- चन्द्रशि- (प्रसन्न मन) हमब रँष्टी, आउ हमबा नग ।  
(चन्द्रप्रभा अपन पापा नग आरि गेली । प्रेमसँ चन्द्रशि चन्द्रप्रभाकेँ सहना दूनाब क२ बहन छथि । )
- मनीषा- (ऋसूबागत) हे, एहेन रँत जूनि रँजू जे हमब रँष्टी । नै तँ हेब नगगड भ२ जअत । से रूँमि निथ ।
- चन्द्रशि- अहाँकेँ जे कबरँक हूथए से कक । ऋदा हम अपन रँष्टीकेँ नै छोडरँ । ओगक रँदनामे आ जूबमानामे हम अहाँकेँ गबम-गबम आ पातब-पातब जिनैरी द२ दग छी ।
- मनीषा- सेहो जलदी नाड नै । तहन माफ क२ देरँ ।





- चन्द्रशि- तहिन जाड, नेने खाड ओग छैरूनपव पौनिथिनमे बाखन हेते न्नापि क२ ।  
विजवृष्टि सुनिते मातव खानने छेलौं ।
- मनीषा- हम नै जाधरै । खहीकेँ जाध पडत । तखने मानरै ।
- चन्द्रशि- हे हे, गौव नागध दग छी, नेने खाड ।
- मनीषा- जहन गौव नागि नेलौं तँ जाग छी । देखलौं गौव नगेलौं ।  
(चन्द्रप्रभा झसकिया बहन अछि । मनीषा अन्दवसँ जिनैरीक पौनिथिन  
खननि । )
- निख । आरँ कछु, के हावने ?
- चन्द्रशि- रैष्टीकेँ पृष्ठियो, के हावने ?
- मनीषा- रैष्टी, उचित रजिहेँ, के हावने ?
- चन्द्रप्रभा- तूँ ।
- मनीषा- से केना ?
- चन्द्रप्रभा- पापा कहनखुन गौव नागध दग छी, नै की गौव नगै छी ।
- मनीषा- जे, तौहव पापा चनाको कम नै छुन । हमरा कहियो उँ जीतध देखुन ।  
तहन जिनैरीओ कहन रँष्टिथिन ।
- चन्द्रशि- से हम रँष्टिध नै देरँ अपितु झहमे खुथा देरँ । ओ भ२ सकैध ।  
(एक-देसबाक झहमे जिनैरी खुथा बहन छथि । अत्र्यत खुशीक माहौल  
अछि । )
- बूछी, आरँ कछु अहाँक जिनगीक उँदेस की अछि ?
- चन्द्रप्रभा- हमव जिनगीक उँदेस अछि- डाकूठव रँननाग ।
- चन्द्रशि- डाकूठव रँनेक कावण ?
- चन्द्रप्रभा- कावण अहए जे डाकूठवक स्थान भगरानक ठीक निच्छाँ होगत अछि । ओ  
अस्मन समाजसेरक होग छथि ।
- चन्द्रशि- बूछी, अहाँक उँदेस नीक अछि । ओगमे रिद्यार्थी आ अन्तिभारक दनुकेँ तन-  
मन-धनक आरशियकता छै । हम तन-मन-धन अरँस्स नगाधरँ । झदा अहाँ  
नगा पधरँ की नै ?
- चन्द्रप्रभा- पापा, हम अपन कर्तव्यमे कখনो तिरौष्ट नै कवरँ । हम दाराँ तँ नै क२  
सकै छी । झदा रिसरास दिया सकै छी जे अहाँक तन-मन-धनकेँ रैकाव नै  
जाध देरँ । ओ निश्चित छै जे काजक झतारिक जदी मेहनति कएन जाध  
तँ उँ काज अरँस्स सिद्ध हेते ।



- चन्द्रशि- एक दिन सब कितसमे रँजे छेतखिन जे विशेष पठ १०क रँरस्था ग्रामिण  
स्केत्रमे ले देखै छिई । अगले राहरे ठीक । जेना, दबलंगा, पठना,  
दिन्नी आदि । ईमे अहाँक जेहेन रिचाव ।
- चन्द्रशि- दिन्नी दूब छै । पठना नग छै । दबलंगा अ १०सँ नग छै । हमब रिचाव  
दबलंगा बहए दियो । एतए हमरो सबकेँ खान-जान बहत । एगो  
मोरांगन द२ देरँ आ कोनो तबहक अस्परिषा हएत तँ होन कबरँ, हम चलि  
आएरँ ।
- चन्द्रप्रभा- पापा, बहरँ केतए ?
- चन्द्रशि- कतए बहरँ, नडा किक छत्रासमे बहरँ । एक-पब-एक रँरस्था छै । हम  
चलि क२ आग.एस.सी.मे नाँउ लिखा देरँ आ नीक छत्रपासमे बखराँ देरँ ।  
सएह ले ?
- चन्द्रप्रभा- हँ सएह ।
- चन्द्रशि- चन्द्रप्रभा मममी, अहाँ गूम छी, किछु ले रँजि बहन छी । अहाँक की  
रिचाव ? अहाँ तँ बूछीक माए छिई ।
- मनीषा- हमब रिचाव पछै छी तँ हम अहए कहरँ जे बूछी केतो ले जेते, गामेमे  
पठते । पठ-रँना केतो पठा सकैए । जूग-जमाना नीक ले छै । दोसब  
दब-दुनियाँमे एक्कए अछि । हुँहो चलि जएत तँ नीक नगत ?
- चन्द्रशि- एगो कहरी छै, आप भना तो जग भना । हमब रँरँ कोनो खान तबहक  
ले अछि । एकब नगन आ नक्कण नीक देखै छिई । अ कोनो तबहक  
गडरँब-सडरँब ले क२ सकैए । एकबापब हमबा पूर्ण रिसरास अछि ।
- मनीषा- बूछी, कनी चाह रँनेने आड ।
- चन्द्रप्रभा- रँस, तुबन्त गेलौं-एलौं ।  
(चन्द्रप्रभाक प्रस्थान)
- मनीषा- अखनि उ सब तबहँ नीक नगैए । ओतए गेलक पछाति ओकरा केहेन  
माहोर भेष्टते केहेन ले । नीक भेष्टते तँ नीको भ२ सकैए आ जदी  
खबाप भेष्टते तहन की हेते ?
- चन्द्रशि- खबारँ माहोरमे देरँ ले कबरँ । चिक्कन जकाँ बुमि-सुमि क२ देरँ ।
- मनीषा- अखनि उ क्मावि छै, देखनुस छै । किछु भ२ सकैए किछु क२ सकैए । मने  
छिई । ई मनक कोनो ठेकान ले जे कखनि केहेन हएत ।
- चन्द्रशि- (थिसिया क२) एते कियो लोक सोचए । रँसी बूप्सि रियाधि भ२ जग  
छै ।



- मनीषा- सएह बूमियौ ने । हमरूँ सएह कहे छी ।
- चन्द्रशे- अहाँ अनावक रेंग छी रेंग । बूमौ छिई एतरेँठा दुनियाँ छे । दुनियाँ रँड ठी छे । किछ परैले किछ गमरैए पड' छे । हम चाहे छी एकबा पठ १-निखा क२ एकठा जगहपर पढ़ूँ नाँ कबि आ जातिमे तेहेन घबमे रिखाह कबि जे लोक दुग बहि जाएत । कहे छे नामी मबए नामने आ पेहुँ मबए पेठने ।
- मनीषा- नाम नीकोकेँ होग छे आ खवापोकेँ । जाड अहाँकेँ अपना जे हुरैए से कक । हम किछ ने राजरै ।
- चन्द्रशे- (गंभीर मने) हमरूँ नग बूमौ छिई नीक-अपना । अपने नाँ करैले हम एते परेशान छिई ? से अहाँ ने बूमौ छिई ।
- मनीषा- से हम बूमि क२ की कवरै ? अहाँक मन जे कहए से कक । (चन्द्रप्रभाकेँ चाह न२ क२ प्रवेशि । चन्द्रशे आ मनीषा चाह पीई छथि । )
- चन्द्रशे- बूँछी, अहाँक एडमिशन दबिङगामे करा दग छी । आते रँटा याँसँ पठरै- निथरै आ अपन काजसँ मतनरै बथरै ।
- चन्द्रप्रभा- रैस पापा ।

पठाम्फेप ।



## तेसब दृश्य-

- (स्थान- मंगलक घब । मंगल, मबनी आ दूखन खगिला पठ १गक सरनधमे रिचाव क२ बहरन खडि । दूनु पबानी भुगयाँपब रैसन खडि दूखन ठाठ खडि । )
- मंगल- रौखा, तोहब बिजल्लसँ आग हमब मन रँड हबथित खडि । झुदा आरँ आगु पठरैक हिमत्त एक्कावती नै छौ ।  
(दूखनक आँथि नोबसँ ठरँठरौ जागए । )
- मबनी- मन तँ हमरो रँड हबथित छह रौखा । झुदा खगिला पठ १गमे आरौ खबचा नगते । एतरेमे केना-केना पुरेलौ से तूँ जनिते छहक । हमब रिचाव खडि जे आरँ तूँ पठ १ग छोडा दहक । रौडो रूँठ भेलह । आरँ हुनो नै सके छह । कमरँहक नै तँ हमरँ सभ केना जीखरँ ?
- दूखन- (कानि क२) माए-रौरू छै । तूँ सभ जे कहरँही सएह कबए पडते । झुदा, झुदा, झुदा२२२ ।
- मंगल- झुदा की रौज नै ?
- दूखन- झुदा झुदा झुदा२२२ । मन होगए आरौ पठि तौ ।
- मंगल- तूँही कह, हमबा रूँते हेते पुराएन । एगो आशि छन सुगुब सेहो हवा गेल । खतो-पखाव नै खडि । देथेमे देथे छियौ माएकेँ एगो होसनी आ दू कण्ठा रौसडीह । एसँ भ२ जेतौ तँ रैचि क२ पठ । तरँ बहरँ केतए से सोचि जे ।  
(दूखन आरौ कनए नगैए । )
- दूखन- रौड, नै हेते तँ तारौ होसनी रँनहक बथि नाँउ लिखा नग छी । ठूँशिन भँजियरँ छी । भ२ जेतौ तँ ओही पागसँ पठरँ आ बसे-बसे होसनी छोड १ जेरँ ।
- मबनी- आ जौँ ठूँशिन नै हेते तरँ हाथे तबक गेल आ नातो बहसँ चलि जाधत । नै होसनी हम नै देरौ । हमबा माए-रौपक गहएँषा निशानी खडि । पगत छन, नाकमे छन गुँठा छन । सभरँ रँनहकामे रूँडा गेल । आरँ एहन काज नै कबरँ ।
- दूखन- (कनेत) माए तूँ कठोव भ२ गेलौ हमबाने । कनी सेचही माए । तूँ जे किछ रँचेरँ से हमरे हेते । खथनि ओगसँ हमबा काज हेते, जिनगी रँनते । ओगसँ तारौ सभकेँ नै सुख हेतौ ।



(मवनी कनए नगैए । )

मवनी- पानिमे मडुवी आ नख-नख कृष्टिया रँखवा । हौसनी रूँडत की बहत, से के जने ?

दूखन- माए, जदी ई रँष्टक प्रति कनियोँ ममता छै तँ एकव गप आ जिदपव अमर कवरी । ने तँ ई रँष्टसँ हाथ धोगले । हमवा जेतए मन हएत तेतए चरि जाएरँ आ ओतए पढरँ धरि अरँसस ।

(मवनी आरो कनए नगैए । )

माए, की कह छै ? हँ रा ने कह ।

(मवनी हँ रा ने किछु ने कहि बहन अछि । खाली कानि बहन अछि । )

राँड, अहाँ की कह छी ?

(मँगल गूम अछि । )

किअ ने किछु कह छी ?

मँगल- (खिसिया क२) तोवा ओते जिद किअ नगर छै ? जे सकनियोँ से पढनियोँ, आरँ अपन जोगाव कव ।

(दूखन आरो कनए नगैए)

दूखन- दूनु जने एक बंग । खैब, अहाँ सब अपन हौसनी बखु । हम चरनी ।  
(दूखनक प्रस्थान)

मवनी- कनी देखक ने, केतए गेलै ?

मँगल- हम ने जेरै, तूनी जे ।

मवनी- जाक ने । आखिब रँष्ट छिअ ने ?

मँगल- आ तोहव दूमन छियो ।

मवनी- हमवा ने ग्वदानते ।

मँगल- हमरो ने ग्वदानते । हम ने जेरौ ।

मवनी- एहेन कठोव रँप केतो ने देखनौ ।

मँगल- तोरे रँड ममता छैनौ तँ उ किअ भगनौ ? रँष्ट चरि जाए तँ चरि जाए दूदा हौसनी ने जाए । हे भगमान, एहेन कठोव माए केकरो ने दिहक । रँह छी, की करितौ ? हमरो कठोव रँनए पडत ।

मवनी- (अपने आप डुपव ताकि) हे भगमान, एहेन कठोव माए केकरो ने दिहक । हे भगमान, एहेन कठोव माए केकरो ने दिहक । हे भगमान, एहेन कठोव माए केकरो ने दिहक ।

(कनेत-कनेत मवनी दूखनकेँ घुमारँए जाए । खैब मँगल सेहो मवनीक पाछु-पाछु जाए । )



- रौंखा, रौंखा । केतए गेलें रौंखा ? रौंखा रौं रौंखा ।  
(गामक एकठा प्रतिष्ठीत रेकती मणिकांत दसक प्ररेशि घुमेत-हिरैत । )
- मानिक, हमबा रैंठाकेँ भागत जागत देखनिई ?
- मणिकांत- हँ, देखनिई एगो छोट्टा । कनेत-कनेत भागत जाग छेलै । उ तौहब रैंठा छेलै की नै, से हमबा नै बुंमन अछि । नमूहब छेलै । की भेलै से ?
- मंगल- केते दुब गेल हेते उ ?
- मणिकांत- कनियेँ दुब गेल हेते । भेलै की से ?
- मंगल- तूँ देखनी गइ । हम पीठेपव अरै छियौ । कनी मानिककेँ रता दग छिई ।  
(मवनी मठकि कइ जा बहन अछि । रौंखा रौंखा चिचिखागए । )  
माँ नक की कहरै । छौवा रँड जिदी छै । अही रीचमे मैथ्रिक पास केनक हेल । हमबा कहए, हम पठरँ अरूँ । हम दुनु पवानी कह छिई, नै पठ ागमे रँड खचा नगै छै ।
- मणिकांत- तौँ सभ बुंवरँक छह जे पठ रँना रैंठाकेँ नै पठरँ चहि छह । नोक सभ रैंठा-रैंठाकेँ पठरँने हवान बहए । नै, सुननिई ई हाग सुकनमे एगो डोमक रैंठा सष्टुड फसष्ट केनके, ओह छन की ?
- मंगल- हँ मानिक ।
- मणिकांत- तौँ सभ साह खतम छह । एहेन रिद्यार्थीकेँ तौँ सभ पठ ाग मनाही करै छहक, जुरम करै छहक । रिद्यार्थी हेलहब छह । तौवा सभकेँ सबकार आवकशो देने छह । जौँ पठि -निधि जेतह तँ केतौ-ने-केतौ अरँस सबकारी नोकबी पारि जेतह । तौँ सभ तबि जेरँह ।
- मंगल- मानिक, अगिला पठ ागमे रँड पाग नगते । केतए से पवरेँ ? सुगुरो हवा गेल । पहिने जकाँ कोनियेँ-पथिया नै रिकेँ छै । पसाविओ सभ हष्टियेपव जा कइ कीनि नग छै । हम केते डोमकेँ मनाही कवरैँ अ गारि-कनमति देरैँ जे हमबा पसावी हाथे नै रैच, हमनी देरैँ ।
- मणिकांत- से तँ ठीके कह छह । झुदा तूँझँ किअ नै हष्टियेपव चलि जाग छह ?
- मंगल- मानिक, अरँ हष्टियेपव बस नै छै । छेलै हमबा राँडक समेमे बस । तँ नै राँड डेठ कप्ला डीह कीनकै । झुदा अरँ हष्टियेपव तेते डोम अरैँ छै जे केतेकेँ रौंहनिओपव अहकत । अपन-अपन समान रैंठेमे मारि कइ नग जागए अ कमेमे रैच नग जागए ।



- मणिकान्त- जा, रौपरीना जमानो रौचि क२ रौषाके पठ ररुह ।
- मंगल- से तँ हभव घवनीके एगो हौसनीओ छै । रौषा कह छेलै, हौसनी रँनुक बधि हमवा नाँउ लिखा दैह । हम धुँसिनो क२ क२ पठरँ । ओकव मागए नै गछनके । रँड जिन्द केनके माएके । झुदा नै गछनके । तही दुखारे थिसिया क२ भागि गेलौ आ कहनके हमवा जेतए मन हएत तेतए चलि जाएरँ आ पठरँ अरँसस ।
- मणिकान्त- जा जा, चुपचाप चलि जा । रौषाके पठ ररुह । नशीरके तेज छुह जे एहेन होनहाव रौषा भगरान देनकह । हम जाग छिख । जेष्ठ भ२ बहनए । (मणिकान्तक प्रस्थान)  
(अनुभवमे मवनी आ दुखनमे गप-सप भ२ बहन अछि । )  
(मंचपव सँ मंगल अनुभवक गप-सपके अकानि बहन अछि । )
- मवनी- चर नै, चर नै । किअ ओते हवान करै छै । हमवा ओते दम नै अछि जे घाचर हएत आकि उठाएर हएत । चकेठरा जे कहनके पीठेपव अरै छी तँ चर, से अरिते अछि । चर नै रौखा, चर नै । चर, जे जेना कहरीही से हम देरौ ।
- दुखन- से दैतही तँ एना हेरै करितौ ? तोवा रौषा थोबहे प्रिय छौ, हौसनी प्रिय छौ । जो, हम नै जेरौ । जो हौसनीके धोए-धोए चष्ट ग२ । तोवा रौषासँ केन मतवरँ छौ ? दुखन रौषाके घबसँ भागि गेनाए नीक । सबके शांति भेष्टते ।  
(मवनी रौम पाडा क२ कनए नगैए । )
- मवनी- झुड मिचकखा कखनि कहनके, चर अरै छी पीठेपव से अरिते छै । रँड गपकड भ२ गेन हन । चर नै, चर नै ।
- दुखन- हम नै जेरौ । नै जेरौ । माएक हिवदे एहेन कठोव होए छै ? लोक सुनत तँ हँसत ।  
(मवनी हिचकि-हिचकि कनए नगैए । )
- मवनी- तँ नै जेरै तँ हमझँ जेतए मन हएत तेतए चलि जाएरँ । मवि जाएरँ, कष्ट जाएरँ ।  
(मंगल बेसमे चलि दुनु माए-रौषा नग पछुचर । )
- मंगल- चर नै रौखा । किअ एना कने-खीजे जाग छै ?  
(पर्दा हँसत । तीनु गोष्टे दर्शकक सोना आएन । )



- दूखन- राँड, तूझ ररुह छह, माएक पठनपव चलैरैना । तू ताड़ १-दाकमे जेते पाग देने हेरैरुक, उगमे हमव पठ १ग रँटा याँ जकाँ भ२ जेते । तोहव रँष्टा छिखह । कहरैह तँ तकरीफ हेतह । तँए झँहमे तना नगने छी ।
- मँगन- खारँ तोरे दूखारे ताड़ १ष्टा पीरँ छी, दाक छोट्टा देदिएँ ।
- दूखन- डूहो दिन दूनु भाँग दाक पी क२ उँठा-पठक केरौं । गहो जे किछ रँजनौं गनती भेन ।  
(हाथ जोड़ा क२)  
राँड गनती माह कक ।
- मँगन- रौँखा, हमवा मणिकाँत मानिकसँ खथनि तोरे सरँनधमे रँहूत बास गप भेन । रँहूत ज्ञानरँना गप कहनथिन । हम सोचि नेरौं जे कोनो धवानी तोवा पठरौक छै । चाहे जे भ२ जाए । होसनी रिकौ, डीह रिकौ खकि हम दूनु पवानी रिकी । की गौ, तोहव की रिचाव ?
- मँगन- हमरो अरुए रिचाव छह । खारँ हमझँ अरुए खरँधावि नेरौं हन ।
- मँगन- रौँखा, गामपव चन । तू जे जेना कहरीही सएह हेते । रँडकीष्टा हाथी होग छै, डूहो कहियो चुकि जाग छै ।
- दूखन- माए-राँप छी । रँष्टाक कहनपव खमन कवियौ । जदी गनती कह छी खा करै छी तँ डाँष्टरै ले कक, पीहू । हम एक्का रँव किछ कहरँ तँ कए राँपक रँष्टा ले ।
- मँगन- हमवा तोवापव रिसरास खछि । तूँ खधना ले क२ सकै छै । चन गामपव चन । तोहव पठ १गक सभ रँरसथा हेते ।
- दूखन- चनु ।  
(सरँरुक प्रस्थान । )

पठाम्फेस ।





## चाबि दृश्य-

- (चन्द्रशेक हरेती । समथ सौमनका । चन्द्रशे आ मनीषा चन्द्रप्रभाक सरनधमे  
आपसी गप-सपुप क२ बहल अछि । यूँही सिकरेष्ट नगा क२ पीरै छथि । )
- चन्द्रशे- चन्द्रप्रभा नामी-गामी ढावारासमे बहि बहती हेल । ढावारासक मानिक एतेक  
एगए छथिन जे जूनि पुछु । एकेएग एमहब-ओमहब नै क२ सकैए । सबकेँ  
दैनिक कष्टन रनल छै । ओहीक अनुसाब सबकेँ चलैक छै । नै तँ  
गार्जनकेँ रँजा हुनके सग नगा देल जाए ।
- मनीषा- रैरसथा तँ रँड नीक छै । झुदा जूग-जमाना खराप छै ।
- चन्द्रशे- खहाँकेँ जग रातक डब होए, ओ खपना सरहक अथितियाबक नै छै । ओ  
बूँचैक अथितियाबक छै । उ गप ओकरे चबिपव निर्भव करै छै ।  
एगो गप बूँचै छिई ?
- मनीषा- की, कहियौ नै ?
- चन्द्रशे- ओकर मन जदी एमहब-ओमहब करैक हेते तँ हम-खहाँ झूँह तकिते बहि  
जाएँ आ से केतो भ२ सकैए । ओना एहेन चबिपवतारना घष्टना किनको  
संगे नै होन्हि से प्रार्थना हम सदियन भगरतीसँ करैत बह छियनि ।  
(होसली न२ क२ मबनीक प्ररेशे । )
- मबनी- मानिक, हिनके नग एतियनि हेल ।
- चन्द्रशे- की रात छियौ जे एतेक झनहबि सौममे एलै हेल ?
- चन्द्रशे- हे, हम जाग छी । रँड सौम भ२ गेलै । सौमो-राती नै देखिई हेल ।  
गप-सपुपमे नगल बही । तहन जाग छी तँ ?
- चन्द्रशे- रैस जाड ।  
(मनीषाक प्रस्थान । मचपव अनुहाव अछि । डिर्बिया न२ क२ मनीषाक  
प्ररेशे । )  
नै नै । डिर्बियाक जकवी नै अछि । गप-सपुप अनुहारोमे भ२ सकै छै ।  
रैकावमे मष्टिया तेन किअ जवते ? जाड, डिर्बिया नेने जाड ।  
(डिर्बिया न२ क२ मनीषाक प्रस्थान । )  
आरँ तो कह, केतए एलै हेल ?  
(मबनी चन्द्रशेक नग जाए चाहैए । )  
हाँ हाँ हाँ हाँ, ओमहरे बह । ओतैसँ राज ।



- मवनी- (ठांमहि कक्ति) एगो हौसनी नऱ कऱ एनियनि हऱन । रौंथाकेँ नाँउ निथेरौक छै ।
- चन्द्रशि- रौंचारिनी आक्ति रँन्हक बथरिनी ?
- मवनी- रौंच नैरौं तँ आशि खतम भऱ जेते आ रँन्हकी बथरौं तँ हऱब छोड ा सकै छिई ।
- चन्द्रशि- रँन्हकमे रँड कम पाग हेतौ आ रौंचनामे रौंसी पाग हेतौ । हमवा रिचावसँ रौंसी जे आ ओग पागसँ रौंशकेँ सुगुगव कीनि दही । ओगमे रँड नहऱा छै । रँटा याँसँ पविरारौ चऱतौ ।
- मवनी- रौंथा, कऱ छै हम पढरँ । ओग दुखारे उ कसि कऱ भागिओ गऱन छेलै । दूनु पवानी कऱना-कऱना ओकवा घुमा कऱ गामपव खनलौं ।
- चन्द्रशि- सुन, पढ ाग आरँ ओते ससुता नै बहि गेलै । रँड खबचा नऱगै छै । तऱहमे मैथ्रिकसँ डुपव तँ आरौ रौंसी । तँ रौंशकेँ पढरँक चक्रवमे नै पड । गवरीरँ आदमी छै । रौंको जेरौं तैयो पाव नै नगऱौ । नीक कऱ छियौ ।
- मवनी- मानिक, अपनै ठीके कऱ छिई । आगपव तँ आहद खडि आ रौंशकेँ पढरँने ओते पाग केतऱसँ आनरँ । कनी कऱौथु घवपव सँ पुढने खरँ छी ।
- चन्द्रशि- जौ, से केँ कऱतौ नै । कोनौ काज रिचावि कऱ कवी तँ रँटा याँ राँत । (मवनीक प्रसुथान । )
- अपन-अपन जोगावमे सभ बहऱ । सुतवि गेलै तँ रँड नीक आ नै तँ घाँशु थोवहे नगऱ देरँ । जानमे माँड हँसन तँ छैहे । ओगरेव रऱह दू सऱ षुका रौंसी नऱ गऱन बहऱ । (मनीषाक प्रऱेष । )
- मनीषा- की राँत छेलै जे एते सँममे डोमीनियाँ आऱन बहऱ ?
- चन्द्रशि- (हंसुऱवागत) रौंशकेँ नाँउ निथरँने हौसनी रँन्हक बाखऱ आऱन छेली । कऱनऱि तौं ई हऱरीमे नै पड । रौंचि कऱ सुगुगव कीनि दही । रँड नहऱा हेतौ । सऱह बुंमऱ गामपव गेली ।
- मनीषा- रौंशकेँ छै उमेद की ?
- चन्द्रशि- उमेद तँ पुवा नऱगै छै । तऱन तँ ओकव अपुपन रिचाव । जरँदसुती करैरँना जुग तँ आरँ नै छै । जहिया छन तहिया कम नै सुतारलौं । तँ नै आग मानिक कऱरँ छी ।
- मनीषा- हे भगरती, ङा हौसनी भऱ जेते तँ एगावह षुकाक मधुव चऱरँ रह ।



- चन्द्रशि- कখনो-कखनो थुँ हसि जाग छी । भगरती लोभी नै होग छथिन ।  
एगावह ठैकाक काज एकोमे भ२ सकैए । भगरती कोनो एस.डी.ओ. थोबहे  
छथिन ।  
(मवनीक प्रवेशि । )
- मवनी- मानिक, रैचैक रिचाव नै भेलै । रँन्हके बखरै । रौंथा कहलकै, हम  
पठरैष्ठा कबरै ।
- मनीषा- हम जाग छी । भानस-भातक जोगाव कबरौक थुँछि ।
- चन्द्रशि- रैस, जाड ।  
(मनीषाक प्रस्थान । )  
तहन तूँ थपन समान देखा ।  
(मवनी हौंसरी निकालि क२ देखेले देली । )  
राज केते पाग नैरँही ?
- मवनी- केते पाग नैरँ मैानिक ? कम्मे नैरँ जगसँ रौंथाक नाँउ लिखा जाग ।
- चन्द्रशि- से तँ तूँही नै रँजरँही थुँकि हम रँजरँ ?
- मवनी- से तँ हमही रँजरँ । कम्मे देखून, दुगए हजाव । कितारौ सभ कानैक  
छै ।
- चन्द्रशि- पहिने कहलौं खाली नाँउ लिखरँने नैरँ था थारँ कह छै कितारौ सभ  
कानैक छै ।
- मवनी- की कबरँ मैानिक, जे जकबी छै से तँ निहे पडते । थाथिब ओही दुखारे  
तँ रँन्हकी बथे छिर्ष । पेष्ट तँ कोनियाँ -पथियाँ कहुना चना नैरँ ।  
दुगए जहाव देखून ।
- चन्द्रशि- दु हजाव नै हेतौ पाँच सए हेतौ ।
- मवनी- ओगसँ काज नै हेते । डेठ १ हजाव देखून ।
- चन्द्रशि- डेठ हजाव तँ नै देरौ । रँड कबरँ तँ दु सए थारौ देरौ । रैसी नैरँही  
तँ सुदिओ नै रैसी नगतौ ।
- मवनी- की कबरँ मैानिक, जे नगते से नगते । पहिने तँ हम जकबीकेँ  
देखरँ ।
- चन्द्रशि- देखही, सात सए धरि नैरँही तँ तीन ठके सैकड़ नगतौ, एक हजाव धरि  
नैरँही तँ चारि ठके सैकड़ डेठ हजाव धरि पाँच ठके सैकड़ था दु हजाव  
धरि छह ठके सैकड़ नगतौ । डुहो समानपव । नै तँ उतखीक रैष्ठा थारौ  
रैसी छै ।
- मवनी- हमवा डेबहे हजाव दथु ।



- चन्द्रशि- ठीक छै डेबहे हजाव जे । झुदा तौवा कनी खारो सुदि नगते ।
- मवनी- किअ मातिक ? हम गवीर छी तँ ?
- चन्द्रशि- नै नै से रात नै छै । तँ हमवासँ कोनियाँ-पथियामे दु सध ठाका रैसी न२ नेने छै, तँ ।
- मवनी- नै मातिक रैसी नै जेनौं । पसावी जानि उचितोसँ कम जेनौं । फुसि नै कह छी मातिक । हिनके सपपत कह छियनि ।
- चन्द्रशि- हमव सपपत थेमे तँ खारो सुदि रँठ १ देरौं ।
- मवनी- अपन रैष्ठा सपपत कह छी, रैसी नै जेनियनि । कम्मे जेनियनि ।
- चन्द्रशि- केतारौं किछ कबमे तँ हमवा झँहसँ जे निकलि गेलौं से नगरै कबते । डेठ हजाव जेरँही तँ छह ठके सकुड नगते ।
- मवनी- मातिक, अथनिते कहने छेदिर्ष पाँच ठके आ तुबन्ते छह ठके क२ देदिर्ष ?
- चन्द्रशि- रैसी रँजरे तँ खारो रँठ १ देरौं । जेरँक छै तँ जे नै तँ जे ।
- मवनी- मातिक, अपना गामे रँनकरौंवा काज कोण नै करै छथिन । खाली अहण्टा करै छथिन । तँ ने मनमाना करै छथिन ?
- चन्द्रशि- (थिसिया क२) खारौं झँहमे ताना नगा नै तँ फेव रँठ १ देरौं । चूपचाप पागले आ जे ।
- मवनी- गनती भेले मातिक । खारँ किछ ने रँजरे । देखुन पाग (चन्द्रशि अन्दव जा क२ पाग आ डायवी अनरनि । पहिने डायवीपव पाग लिखरनि । तेकव पछाति मवनीकेँ डेठ हजाव ठाका हौसरी न२ क२ देरनि । )
- जग छियनि मातिक । जदी हौसरी रैचैक रिचाव हेते तँ हिनके देरनि ।
- चन्द्रशि- ठीक छै अलिहेँ । नगा देरौं रैसीए । गवीरँ खादमी छै । मजरुवँ छै । हमव डोमीन सेहो छै । (मवनीक प्रस्थान । )

पठांकेप ।



## पाँचम दृश्य-

- (स्थान- मंगलक घब । मंगल कोनियाँ रीनि बहर खडि । )
- मंगल- साँमे गेल, से खथनि धबि ले आधर । पकड़ा तँ ले नेनके रँभना ?  
केते बाति भ२ गेल । खेब कथनि भानस-भात हएत ।  
(दूखनक प्रवेश । )
- दूखन- रौं, माए ले एले की ? कान्किएँषाँ खँतिम डेँषेँ खडि । सेहो नेँषेँ हाँगन  
न२ क२ । केते बाति भ२ गेलै । कनी देखिँषुँ ग२ ?
- मंगल- देखही । (दूखनक प्रस्थान । )  
नगैँषेँ, उँ रँभना हिज्जो करैत हेते । एहेन कँजुशी देखन ले । एगो  
सिकरैँषेँ छह महिना चलेँ डेँ खकि नख महिना से ले कहि ।  
(दूखन आ मवनीक प्रवेश । )  
(थिसिया क२)
- मवनी- तोवा एते देवी किखँषेँ भेलौ ? रँभना पकड़ा नेने छेलौ की ?  
रँड सस्ताँ डेँ जे पकड़ा नेत । थापड़ा सँ झँह भसका देरैँ । रँड  
पाँगरँना खडि तँ खपना जगहपब ।
- मंगल- एते देवी किखँषेँ भेलौ से रौंज ने ?
- मवनी- मानिक रँड हिज्जो करै छेलौ । एतरैँ देरौँ, एतरैँ ने, एतेमे एते सुदि,  
ओते नेरँही तँ ओते सुदि । गहए सभमे रँसी शैम नगि गेल ।
- मंगल- खेब, छोडँ ग़ गप-सप । पाँग केते देनको ?
- मवनी- डेँठ हजाव डुहो छह ठँके सँकवपब ।
- मंगल- तोवा नाखँ ? तिखाँग केते नगतौ ?
- दूखन- रौं, सभकेँ एक हजाव नगैँ छे । झुदा हमवा सभकेँ कनी छुँषेँ छे । नेँषेँ  
हाँगन नगा क२ नख सए ।
- मंगल- द२ दही नख सए ठँका । कान्हि नाँउ तिखाँ नेत । खँव पाँग तँ खपने  
नग रँटाँ याँसँ बाथ ।  
(मवनी नख सए ठँका दूखनकेँ देनक । )
- दूखन- रौं, कितारौँ कीनरैँ । ओछुमे पाँच सए नगते ।
- मवनी- पाँच सए खारो न२ ने । भेलौ ने ? (पाँच सए खारो देनक)
- दूखन- कहाँ भेलौ ? कोँपी-कनम सेहो ने कीनरैँ । सभँषेँ सदहन छे ।



- मर्गन- डुहो दए दही । ने तँ बमा-थरैना हेल देखेतो । रौखा हम तँ छियो  
कबिया अछुद्वर भैस रँवरवि । अपन नीकसँ पठ-लिखि । पाग रँवरद ने  
कबिहै । केना प्रवरै छियो से बुमिने छिही ।
- मवनी- ई ने ने कहए पड़त एकवा । अ अपने बुषियाव छै ।
- मर्गन- रैषे केतरौ बुषियाव बहते तँ राप नग रैषे बहते आ राप ओकवा  
उचित-अनुचित कहरै कबते ।
- दुखन- राड, ई ने तँ निहिकीव बहह । ओना तँ अपन कबतरँ कबिते छुहक आ  
कवरौको चाही । माए, भूख नगि गेलौ । कनी ओम्हरो देखही ।
- मवनी- रैस, हम जाग छी भनसा-भात करैने । अ एक सए ठका न२ ने ।  
(मवनी एक सए ठका आरो देलक दुखनके । आ उ चलि गेली । )
- मर्गन- (हस्रुवागत) रौखा, एगो रात प्रुछे छियो । आरँ ओते पाग ने ने  
नगते ।
- दुखन- नागगो सकै छै । ओना कनी-मनी तँ नगिते बहत ।
- मर्गन- से केतएसँ अनरै ?
- दुखन- ओगतहक ने । बसे-बसे सभुषे हेते । हमरँ पबियासमे नगर छी जे  
केतो धुषिन पकडा नेरँ अपना जेगावसँ ने हेते तँ कोना दोकानमे  
नोकरी क२ नेरँ ।
- मर्गन- तँ तँ अपने बुमनक छै । जगसँ साँपो मवि जाए आ नाठीओ ने छुँए ।  
से काज कबिहै ।  
(मर्गनक साव ओपानदवक प्ररेशि । )
- ओपानदव- पहना गौड नगै छी । (दाक पीरँ क२ नमुँेत)
- मर्गन- रौखा, मामा एलौ । पानि नेने आ । माएके कहि दिहनि ।  
(दुखन ओपानदवके गौड नागि अन्दव जा क२ पानि अनलक । )
- ओपानदव- भगिना खुम दनदनागत बह । रँड पी भ२ गेलही । आरो भोज खाया ।  
ने तँ दाकए पीखा ।
- मर्गन- एते वातिमे केतए सँ ?
- ओपानदव- चनरौ पहना दुपहरे । कहनिई एक कोस पएरे जागमे केते कात  
नगते । बस्तामे कनी दाक पीख नगलौ । तहीमे देवी नगि गेल ।  
चनरौ ने होग छलए । कहना-कहना खसत-पडत एलौ । (नमुँेत)  
पहना, दाकक जेगाव कनी आरो नगाड ।



- मर्गन- अथनि साव, अ सभ छोड़ । रँड बाति भ२ गेलै । थागक पैम भ२ गेलै ।
- उपनिदव- साव पहना, ग्राहो नै बुनै छिही, दाक भ२ जेते तँ थागक कोन काज । साव अमकथ अछि । रँकावमे एकवार्स रँहिनक रिखाह केनौ । पितीपुत रँहिन अछि तँए छोड़ा दग छियौ । नै तँ कहुँमेती छोड़ । नैतियौ । साव पहना, तँ कहियौ नै सुधवमे ।
- मर्गन- साव, छुँही सुधव । हमवा नै सुधवरीक अछि । एनै केतएसँ से नै कह साव ? एते बातिमे कोन जकबी भेलौ ?
- उपनिदव- कथा-कहुँमेती नै एनियौ, साव पहना । हम भगिनाक रिखाह कवरै अपन सागवर्स । केते दिनसँ तँग केने अछि साव सम्भव । थाग छुँही भेल तँ एनौ । दाकक खचा ओकरे छै । साव सम्भव रँड धनीक अछि । जे कहरै से देते । (नुमि बहन अछि)  
(दुखनक प्रस्थान । पवनीक प्रवेश । )
- मवनी- (ऋसुखागत) भैया, गोव नगै छिथ ।
- उपनिदव- खुरँ नीके बह दाय । आँव हान-चान रँटा यँ छै नै ?
- मवनी- हँ भैया, रँड रँटा यँ छै । बाति रँड भ२ गेलै । पहिने था नग जाग जा । तरँ कोनो गप-सपुप कबिहै ।
- उपनिदव- दाय, चन, अरै छी । (मवनीक प्रस्थान । )
- साव पहना, थागले जाही नै ?
- मर्गन- किअ तँ नै जेरँही से ?
- उपनिदव- नै, हमवा थागक मन नै छुँके । कनी भ२ जेते तँ दाक भ२ जगते ।
- मर्गन- एते बातिमे दाक केतएसँ ओते ? अथनि छोड़, कान्हि देखन जेते । जग काजसँ एनै, से काज कव ।
- उपनिदव- तँ स्पह रँत कव । आ थागले नै जेरँही ? नै तँ एते मगा ले । खेरौ कबिहै आ गपो-सपो हेते ।
- मर्गन- ठीके कह छै । दुखन माए, दुखन माए ।
- मवनी- (अनुदवर्स) की कह छै ?
- मर्गन- खेनाग एते नेने आ ।
- मवनी- किअ घब-अँगना नै छै ?
- मर्गन- उपनिदव कह छै एते थागले आ गप-सपुप करेले ।
- मवनी- अछुँडा, नेन अरै छिथ ।



- मर्गत- जन्दी नैन था ।  
(थेनाग न२ क२ मवनीक प्रवेशे । )  
थो साव ।
- उपानदव- नै थागक मन छै । तूही थो ।
- मर्गत- रँहिन दवरँज्जापव जे किछ कण-साग भेष्टे ओकरा अरँसुस कनियोँ-ने-  
कनियोँ गवहाज कबक चाही ।
- उपानदव- तू तेहन गप कठ छै जे थागध पडत । एगो चीज देखध दे । जेरौमे  
बखने छेरिँ । छै की नै ?  
(जेरौमे हाथ द२) हँ छै । हमवा होग छेनध केतो खसि पडले ।  
(जेरौसँ पनी निकारि) साव पहना, एहकार कठ छेरियोँ तँ थगधाग छेले ।  
खरँ भेले न । देखरिँही, हमवा केते पामव छै ?
- मर्गत- थेनागउ सवाग छै । थेरौ कव । गवम थेनाग सुखदगव होग छै ।
- उपानदव- एगो गप रूमि नही साव पहना, दक सडनो थेनागकेँ नीमन रँना दग छै ।
- मर्गत- छोड नरँव-नरँव केनाग । जे कवमेँ से कव ।  
(उपानदव दक पीनाग था थेनाग दनु काज क२ बहन अछि । )
- उपानदव- साव पहना, तू खपन रँष्टाक रिखाह हमवा सागवसँ कवरिँही की नै ?
- मर्गत- खथनि नै । कावण ओकर पियान पठ'पव रँड छै । रँड ससगव छै ।
- उपानदव- तगसँ की ? चसगव आदमीकेँ रिखाह नै होग छै आकि नै करैध ? तू  
सभ रँठ भेले । रँठ सभ पाकरन थाम होग छै । कथनि खसत कथनि  
नै । कोनो ठेकान नै । खपन जीता-जिनगीमे पुतोहूकेँ देख जे था नैन  
जूड । नै ।
- मर्गत- हमवा मनो हेतो तँ तोहव भगिना नै मानतो ।
- उपानदव- किध, घबमे तोहव जूति नै चले छै की ?
- मर्गत- जूति तँ हमरे चले छै । झुदा रँष्टा नम्वव भेले । ओकरो कहन कबध  
पड' छै । नै करै छिँ तँ भागध नगैध । की कवरै एगो रँष्टा अछि ।  
माया घेव नगध । भगिनेकेँ पुछही ।
- उपानदव- भागीन, भागीन ।
- दूखन- (खन्दवसँ) हगध अरँ छी मामा । (दूखनक प्रवेशे)  
की मामा, की कहनहक ?
- उपानदव- सुने छिखह, तू रँड चसगव छह । सभष्टा गप रूमिमे हेरँहक । रँचुने नै  
छह । जूथान भ२ गेनह । माध-रौप रँठ भेनह । हमव रिचाव छह जे तू





- रिंखाह क२ नए । हमव सागव रँड सुल्लवि छै । हेमामातीन आ हमव  
सागवकेँ एकठाम ठाढ़ क२ दग तँ हेमामातीन हागत भ२ जेते ।  
(मंगल आ ओपीनदव था-पी क२ हाथ-झूह धोतनि । )
- दूखन-  
ओपीनदव-  
मंगल-  
ओपीनदव-  
मंगल-  
ओपीनदव-  
मंगल-  
ओपीनदव-
- ओ रात राँडकेँ प्छहक । हम किछु नै कहरह । गावजियव रएह छथिन ।  
का रैह पहुना, छिवहावा खेले जाग छै । ओकरा प्छहक तँ ओकरा  
प्छहक । हँ का नै कह ?  
अथनि नहियेँ रूमनी । अथनि पढ़ए दही भागिनकेँ । दु-चावि रँथमे देखत  
जेते ।  
जौँ रात नै माननेँ साव, तँ जाग छी ।  
(उठि क२ जागने तैयाव होगत । ) झुदा एगो गप रूमि ले जे तूकपव  
नै, से कथीदूनपव । अँ रौ साव, तोवा रैषाकेँ उमेवमे हमवा चावि गो  
धिया-पुता बहए । अथनि अठावह गो छौ । तँ अपन रैषाकेँ रूठ ाड िमे  
रिंखाह कबिहेँ आ कष्टहव नीहेँ ।  
मामा भ२ क२ तँ एहेन रात नै कही, साव ?  
आरँ हम ओहिना कहरौ साव । नै हेते न, तँ हमही क२ नरेँ । ओव  
का ? सागवसँ हमवा लोभ अगछे । साव सम्ब-सासु रूमिने अछि । कोनो  
चावो क२ लोभ भेल छै ? नै । देखा क२ । एगो रँचो भेल छेलै ।  
नाज दूआरे धावमे हम अपने रँक एनौ । हमवा कम रूमि छिही साव ।  
हम रँड पँचन हकीव छिई ।  
राह साव, पिनौना काज करेमे पँचन हकीव छै । ओ आदत रँड खवाप  
छौ ।  
हमवा एहिना बहए दे । हमव रात नै माने जाग गेलै तँ तँछु घव आ  
हमछुँ घव । हमवा तोवा कोनो मतनरँ नै, कोनो सरँन्ध नै । आगसँ  
रुईमेती खतम । चतनियो ।  
(ओपीनदवक प्रस्थान । )

पठाम्फेप ।



## छथम दृश्य-

(स्थान- चन्द्रशेक ठरेली । चन्द्रशे ठुष्ठी सिकरेष्ठ पीर्ष छथि । चन्द्रशे आ मनीषा चन्द्रप्रभाक रिंथाहक सरिनधमे गप-सप क२ बहन छथि । )

मनीषा- आरिं अपन चन्द्रप्रभाक डमेव अठाहव भेन अरैथे । कन्यादानक सरिनधमे की सोटे छिर्ष ?

चन्द्रशे- की सोचरै अथनि ? सोचताहा गप कथनो भैयो जाग छै आ कथनो नहिथौं होग छै । भगरतीक जे गच्छा हेते सधह हेते । अगले अथनेसँ हमबालोकनि किअथ अफसियाँत होग ?

मनीषा- से तँ ठीके । झुदा कन्यादान रँड पेघ जग छी । रँहुत पहिनेसँ एकव ओबियान-रात कवथ पड' छै ।

चन्द्रशे- अहो रात कियो ले कष्टत ।  
(चन्द्रशेक पड' सी आ शुभचिन्तक अँहानदक प्ररेशे । )

अँहानद- भैया, गोव नगै छी ।

चन्द्रशे- जीरू, जागू आ दनदनागत बहू । आग केरुअ सुकज उगले हन ?

अँहानद- सुकज तँ सभ दिन अरु बग उगै-डुमे छै कवीर कवीर । झुदा कवरै की ? हूवसतिक रँड अभाब बह छै । तशिक खेलाड'ी जकाँ भवि दिन ओहीमे लगन बहनाग नीक ले नगैथे । अपन दुथ-धंधामे लागन बहनौं । अ हो जे आग एनौं से पेपवमे अगो रँड खबार' रात पठनिर्ष ।

चन्द्रशे- की थौ ? की पठनौं थौ ?

अँहानद- की पठर' भैया ? देखे आ सुने छी तँ रँड छुगन्ता नगैथे । छौड'ी- छौड'ी सभ तेतेक उड'ी तँ भ२ गेलैथे पठ'ि ते-पठ'ि ते दूनु फवाड' । दविभंगेक अगो कानदीन छावाराससँ अगो छौड'ीक सर्ग फवाड' भ२ गेलैथे । जिज्ञासा भेन जे अरुँक पृथी तँ दविभंगेमे पठ'ि बहनी हन ।

चन्द्रशे- अँहानद, हमबा पूर्ण रिसरास अछि जे हमब रँष्टी एना ले क२ सकैथे ।

अँहानद- से तँ हमरो रिसरास अछि । झुदा छिर्ष मनै । एकव कानो ठैकान ले । कथनि की कवत की ले । जथनि पेपवमे पठ'ि छी तँ छुगन्तामे पड'ि जाग छी जे दुनियाँ केते रँशर्म भ२ गेलै । कछु तँ पचास रँथक रँठरा केते आठ रँथक छौड'ी सर्ग बह । कहु तँ हाथी आ चूँकीक मेन केहेन हेते ?



- मनीषा- खहाँ सभ खाली खनकब गला-मीला करै छी । अपना-अपनापब बियान दियौ । चन्द्रप्रभा पापा, कनी फोनसँ छान्नासक मानिकसँ पुष्टियन जे अपन बूचक की केना हल-चल छै । आ ले तँ एक तपकन चलि जाड ।
- चन्द्रशे- जागमे तँ रैसी पाग खचा हेते आ फोनसँ कम्मे । पहिने फोनसँ बुनै छिई । तहन देखत जेते ।
- मनीषा- त२२ सहज जन्दी कक ।  
(चन्द्रशे मोरौगतसँ छान्नासक मानिकसँ गप करै छथि । )
- चन्द्रशे- हेरनो नम्मा भाय ?
- नम्मा- (नेपथ्यसँ) हेरनो चन्द्रशे भाय । कहत जाड की रात ?
- चन्द्रशे- भाय कहनौं जे हमब रैषी चन्द्रप्रभा कप नं. 15 ठीक-ठाक खडि किये ?
- नम्मा- एकदम ठीक खडि । जखने पाँच मिनट पहिने छान्नासँ घुमि-घामि क२ एनौं हँ ।
- चन्द्रशे- भाय, पेपबमे देखनिई गडरँड सबरँडरना रात । हुनो दबिभंगेक छान्नासँ । ठीके रात छिई की ?
- नम्मा- रात तँ ठीके छिई भाय । हुदा हमब छान्नासक रात-रैरस्था किछ खीब खडि । चिन्ताक कोनो रात नै ।
- चन्द्रशे- हमबा तँ कोनो चिन्ता नै । हुदा चन्द्रप्रभाक मम्मीकेँ भ२ गेन छेननि हन । ओना खरँ नै हतनि हुनको ।
- नम्मा- अपने सभ निश्चित बहियौ, नाहिकिब बहियौ । भाय हम तँ ग्रा बुनै छी जेहेन अपन रैषी तेहने खनकरो । तहिन नै हमब छान्नासक नाँउ चलि । केते छान्नास खुजल आ रँल भेल । हुदा हमब छान्नास दनदनागत खडि । तहमे खखनि राबहमीक परीक्षा चलि बहन खडि से खारो कड गे क२ देने छी । हम कोनो हुर्थ नै छी । पवान एम.ए. छी ।
- चन्द्रशे- नम्मा भाय, खहाँक रँहूत-रँहूत धन्यवाद ।
- नम्मा- खडुँकेँ रँहूत धन्यवाद ।  
(दुनु गेरे मोरौगतसँ गप रँल केननि । )
- चन्द्रशे- ब्रह्मानंद आ चन्द्रप्रभाक मम्मी, खहाँ सभ मोरौगतपब खराज तेज सुनरँ केनिई सभ गप । खही सभ दुखारे खराज तेज क२ देने बही ।  
छान्नासक रैरस्थसँ खहाँ सभ संतुष्ट कछी किये ?
- मनीषा- हँ, संतुष्ट छी ।
- ब्रह्मानंद- संतुष्ट तँ छी हुदा ।



- चन्द्रशि- झुदा की ?
- ज्ञानानंद- झुदा अरु जे चन्द्रप्रभाक उमेरो रिखाह गोज होगत हेते ।
- चन्द्रशि- हँ, अठावहसँ कमी रैसी । अ तँ रिखाहक निम्न सीमा अछि । झुदा पठ-रिनाकेँ रिखाह कइ कूठित नै रैना दी । जे जिनगीमे किछ कबए चोए, ओकरा प्रातःसाहित कबक चाही । हमब रैषीक पठ-अपब रँड जेव छै आ हमरो प्ररँन अछि जे ओकरा डाकूँव रँनारी तथा जातिमे बाजा खनदानमे रिथारी ।
- ज्ञानानंद- भैया, रैसी उमेवमे रिखाह करैमे नडाँ का-नडाँ कीक कष्ट-छुष्ट हूँअ नगै छै से ?
- चन्द्रशि- उ होग छै, निठन्ना सबकेँ रा अमकथ सबकेँ । योग्यकेँ योग्य चाही । अ, सब चाह छै आ अंगमे समाए नगै छै । तहिन एकठौ रातक पियान अरँस बखक चाही जे सब किछक तूक होगत अछि ।
- ज्ञानानंद- सएह कहनौं भैया । ओना अपने तँ बुननुक छीहे । आरँ भैया जेरौक आत्ता दिख । केरँक षाँगम भइ गेलै ।
- चन्द्रशि- जाड, अहाँकेँ अरँव भइ जाएत ।  
(ज्ञानानंदक प्रस्थान । )
- नम्मा- (नेपथ्यसँ) हेननो, भाय चन्द्रशि ।
- चन्द्रशि- हेननो नम्मा भाय । कइ, की हार-चार ?
- नम्मा- पहिने अपने मिठाँग नइ कइ दबिभंगा जाएदी आड ।  
तहिन हार-चार बुनरँ फनिँ ।
- चन्द्रशि- कनियौँ अशीवा कक ने ?
- नम्मा- गप एतेक सुनब छै जे अरँ तहने कहँ ।
- चन्द्रशि- कम-सँ-कम गपक रिषय कहि दिख आ कइए पडत ।
- नम्मा- नै मानरँ तँ गपक रिषय बुनि लिख, पबीष्काक विजण्ट ।
- चन्द्रशि- रैस, हम दूनु पवानी आरँ आकि असगरे आरँ ।
- नम्मा- दूनु पवानी आरँ तँ यौंसँ चकन । नै असगरे आरँ तँ उहो रँटाँ याँ ।
- चन्द्रशि- दूनु पवानी आरँ बहन छी । उहो रँटूत दिनसँ कह छेली जे दिवभंगा जाएरँ दबिभंगा जाएरँ ।
- नम्मा- आड, दूनु पवानीकेँ सुगगत अछि ।  
(दूनु पवानी दबिभंगा जाए बहन छथि । )



चन्द्रशि आ मनीषा खन्दव जा क२ रँहरेतथि । मचपव घुमि बहन छथि ।  
खन्दवमे नम्म्मा रँसत छथि । पर्दा हँठैए । नम्म्मा ठाठ भ२ चलि  
जागए । )

नम्म्मा- नमस्काव चन्द्रशि भाय ।

चन्द्रशि- नमस्काव, नमस्काव नम्म्मा भाय ।

नम्म्मा- नमस्काव मैडम ।

मनीषा- नमस्काव नमस्काव । (तीनु रँसत जाग छथि । )

चन्द्रशि- कछु भाय, किथए रँजेरौ ?

नम्म्मा- पहिने मिठाग नाड तहिन कहँ ।

चन्द्रशि- नै मानता भाय । दियनु बखने छी से ।

(मनीषा नोवासँ मिठागक डिर्बा निकानि नम्म्माकेँ देतनि ।

नम्म्मा- खरँ भेल । खरँ सनु । खरँक चन्द्रप्रभा हमब छत्रासक दु सए रिद्यार्थीमे  
पहिन स्थानपव बहनी राबहरीक पवीष्कामे तथा कौनेजमे तेसब स्थानपव  
बहनी ।

चन्द्रशि- आ डिर्बाजन कोन भेलनि ?

नम्म्मा- डिर्बाजन फसँ भेलनि ।

(चन्द्रशि आ मनीषा हँसकी दग छथि । )

चन्द्रशि- कनी रँसैकेँ रँजरियो तँ ?

नम्म्मा- चन्द्रप्रभा, चन्द्रप्रभा, चन्द्रप्रभा ।

चन्द्रप्रभा- (खन्दवसँ) जी सब, खरँ छी ।

नम्म्मा- मम्मी-पापा एता हेल । कनी जनदी आड ।

(चन्द्रप्रभाक प्रवेश । तीनुकेँ पएव छुरि गोव लगनी । चन्द्रप्रभा अति प्रसन्न  
छथि । )

अपन मम्मी-पापाकेँ पवीष्काक विजलँ रँतरियनु ।

चन्द्रप्रभा- राबहरीक पवीष्कामे हम फसँ डिर्बाजन केरौ छत्रासमे पहिन स्थान आ  
कौनेजमे तेसब स्थानपव छी । मेडिकलक विजलँ अही रीचमे खरँरँना  
खँडि ।

नम्म्मा- पहिने विजलँक खुशीमे सब कियो मिठाग खाग जाड । तहन अगिला  
कोनो गप कवरँ ।

चन्द्रशि- भाय, अपनेक जे रिचाव ।

नम्म्मा- रिचारे रिचाव ।



- (ओही डिर्ब्रामे सँ सब क्रियो मिठाग खा बहन छथि । सब एक-दोसबकेँ मिठाग खुआ बहन छथि । )
- रैष्टी, कनी पानि नैन खाड ।
- चन्द्रप्रभा- जी सब, त्वरत खनरौं ।  
(चन्द्रप्रभा खन्दबसँ पानि खनरी । सब क्रियो हाथ-झूह धोतनि । )
- रम्भुश- भाय, हमबा पूर्ण खाशी खडि जे चन्द्रप्रभा मेडिकन सेहो निकारि लेती ।
- चन्द्रशे- रैष्टी, परीक्षा नीक भेल छेलह ?
- चन्द्रप्रभा- परीक्षा मेडियम भेल छल पापा । ई रैबका क्रेचन रँड हाडि छल ।  
उम्मीद तँ छै । झुदा होग जे ।  
(पेपवररौना नुठनक प्रवेशी । )
- नुठन- पेपव पेपव, ई पेपव । खान्कूता ताजा समाचाव । नरका समाचाव ।  
मेडिकनक बिजल्लै ।
- रम्भुश- एगो पेपव देरँ रौखा ।
- नुठन- जी सब । खरँस नेल जाड ।  
(नुठन रम्भुशकेँ पेपव दह पाग नह प्रस्थान । )  
(रम्भुश आ चन्द्रप्रभा गौबसँ बिजल्लै देखि बहन छथि । )
- चन्द्रप्रभा- सब, हमब बिजल्लै छै पाँच नम्बमे ।
- रम्भुश- गएह छी ने ?
- चन्द्रप्रभा- जी सब ।  
(खुशीसँ रिभोव छथि चन्द्रप्रभा । हेल सबकेँ पएव छुरि गेव नगै छथि । )
- रम्भुश- जाड, चन्द्रशे भाय, खहाँ जीतलौं । पहिल खेपमे मेडिकन-गंजीनियबिग निकारनाग नोहाक चना चरैनाग छी । खहाँ रहुत भाग्यशाली छी । जाड,  
खहाँक रैष्टी खरँ डकठव भह गेली ।
- चन्द्रप्रभा- खखनि कोन खाशी पापा ? बस्ता रँड नम्हव छै ।
- रम्भुश- बस्ता केतरौ नम्हव छै । झुदा हमबा रिसरास खडि किले ? हमब रिसरास जलदी हेल ले करैए ।
- चन्द्रशे- खागु की केना खरँ नगते भाय ?
- रम्भुश- खागु खरँ तँ छैहे रैसी । झुदा जिनगीओ रनि जाग छै किले । कहल जाग छै, मनी रिगेष्टस मनी । यानी धनसँ धन कमाएल जाग छै । की खपने सम्भम ले छिई की ?
- चन्द्रशे- एकठै किछु खँदाज खपने रँता देतौं । तँ रँटा याँ बहिते ।



तस्मिन्- कम-सँ-कम दस ताथ तँ मानरै करियौ ।  
चन्द्रशि- चरु तहन देखन जेते । रीसो धरि खचा हेते तँ चिन्ता नै । ओगस  
आगु सोचाए पडा ताए । रीस तँ अथनि हमबा एकाडन्ठमे अछि ।  
चन्द्रप्रभा मम्मी एक रैब दिन थोनि क२ हँसु । ग्वमस्रम किअ रैसन छी ।  
अहाँ डाकूँबक मअ भेरीँ । अ रँड पौघ गरिक रौत छी । एक रैब  
हँसु ।  
(मनीषा हँसनी ठहका मारि क२ । )

पठाम्फेस ।



## सातम दृश्य-

- (स्थान मंगलक घब । मंगल पथिया आ मवनी कोनियाँ रीं न बहल अछि । )
- मवनी- दुखन राँड, कान्हि हम मणिकान्त मानिकक अंगना गेल बही कोनियाँ-पथिया नऽ कऽ । मानिक अपन रैषापव खासियाग डेनखिन जे तीन रैबसँ मैथ्रिक हएन करै छै । तू केहेन सडन रिद्यार्थी छै । केते पाग तू खबच केनेँ हेल । देखली तँ डोमानक रैषाकेँ । सोसै असकुनमे नाँउ केनक । सएह देखलक । पागरनाक पिया-पुता पठरै ले करै छै आ गरीरनाक पिया-पुता पठरै डो-डो करै छै । ई, पागरनामे चन्द्रशे मानिकक रैषी कहाँदुन रँड नीक जकाँ पठरै छै ।
- मंगल- कह छै, बूडरक मुगना अनका खातिब । अपन काज कब आ अपन चिन्ता कब ।
- मवनी- से तँ ठीके कह छलक ।  
(मवनी आ मंगल अपन-अपन काजमे लगि जाअए ।  
दुखनक प्रवेश । माता-पिताकेँ पएब छुरि कऽ गेब नगैए । )
- मंगल- रौखा, का राँत छिई ? आग रँड खुशी छै ।
- दुखन- राँड, हम दुगो पबीष्कामे पास भेलिख ।
- मंगल- कोन-कोन दुगो पबीष्का ?
- मवनी- तू बूमरक से ?
- मंगल- ले बूमरै तँ ले बूमरै । कोग पछते तँ कहरै किने ?
- मवनी- तोवा मने ले बहतह ।
- मंगल- ले मन बहते तँ तोरे रँजा कऽ नऽ जेरौ कहने । रौखा कोन दुगो पबीष्का पास केनेँ ?
- दुखन- राँवहरी आ अंजिनियबिगक ।
- मंगल- का कहलिही ? राँवमी आ अंजिबिग ?
- दुखन- ले राँवहरी आ अंजिनियबिग ।
- मंगल- का होग छै अंजिबिग पास कए कऽ ?
- दुखन- अंजिनियब रनेँ छै । हम अंजिनियब रनरै ।
- मंगल- कहिया रनरिही ?
- दुखन- अखनि रँड देवी छै । पहिने कोनोजमे नाँउ लिखेरै । पास कवरै ।  
तेकर पछाति अंजिनियब रनरै ।
- मंगल- नाँउ लिखेरैमे हेल पाग लगते ?





- दूखन- हँ, पहिने हज्जाबमे नगौ छेलै । झुदा खरि नाथमे नगते ।  
(माथपव हाथ बथि मंगल ग्नुम भ२ गेलथि । )
- मवनी- किखए ग्नुम भ२ गेलहक ? कम-सँ-कम गपो तँ बुमि नहक । नै हेतह  
तँ छोडा दिहक । रौखा, केते पाग नगते सभ्ठा मिना क ?
- दूखन- रँड कम तँ२२ छह नाथ ।
- मंगल- छ नाथ छ नाथ, छ नाथ ।  
(मंगलकेँ चोन्ह खरि जाग छन्हि । खसि पड छथि । मवनी खँचवासँ  
मंगलक झूहपव हरा दगए । दूखन खन्दवसँ पानि खानि झूह पोछैए । )  
(कनीकान पछाति मंगल हेशिमे खरैए । )
- मवनी- तोबा चिन्ता किखए होग छह ?
- मंगल- चिन्ता किखए नै हएत खा चोन्ह किखए नै खएत ? छ नाथ ठाका कम  
भेलै । रौप रे रौप, छह ना२२थ ।
- मवनी- नै हेते नै तँ होसनी रैचि देरै । खा डीहो रैचि देरै ।
- मंगल- नै प्रवते तँ देखन जेते । जगक मानिक जगदीशि होग छै । तँ  
चिन्ता नै कबह । रौखा, गंजीयव भ२ जेरही तँ पाग केते कमरही ?
- दूखन- कम-सँ-कम पचास हज्जाव महिना । नाथो भ२ सकै छै ।
- मवनी- तर तँ हिमत् नै हावर । तूझ हिमत् नै हावर दूखन रौड ।
- मंगल- खानी कहवासँ हेतो खकि उपाए सोचरिही ।
- मवनी- नै हेते तँ होसनी रैचि नैर, दु-चाबि धुव डीह छोडा क२ सभ्ठा डही  
रैचि नैर खा तूझसँ नै हएत तँ रौखाक रिखाहक गप क२ नैर धनिकहा  
कहुमसँ । रिखाह गंजीयव रँनना रौदे हएत । तगने ओपीनदव हमव  
छैहे ।
- दूखन- माए, एकव माने नै बुमनिथो ।
- मवनी- एकव माने ग्रा भेन जे ओपीनदवक सागवसँ रिखाहक गप क२ नैर खा तारै  
ओकव सम्भव तोहव पढक रौकी खबच देखिन । गंजीयव रँनना पछाति  
तोहव रिखाह ओपीनदव सागवसँ हेते ।
- दूखन- खा जौं भरिसमे रिखाहमे कोनो तबहक रैरधान खरि जाए तर की  
हेते ?
- मवनी- की हेते । किछ नै हेते । ओपीनदवकेँ समना-बुमना क२ कहरै एना-एना  
रैरधान छै, से की केना कवरहक । कोनो नै कोनो उपाए हेरैरै कबते ।
- दूखन- रौड किछ रँजिते नै छथिन खा तोहव रिचाव हमवा नीक नै नगैए ।



- मवनी- एकठा कब रौंखा, दनु माय-पुत मणिकान्त मानिक ईंठाम चन । हुनकेसँ रिचाव पुछरनि । रूड कारिन खादमी छथिन ।
- दुखन- चन माथ, हुनके लग । अपन गाममे रूजूखा खादमी मानन जाग छथिन ।
- मवनी- दुखन रौं, तूँ गामेपब बहल । हम दनु माग-पुत कनी मणिकान्त मानिक ईंठासँ अरै छी ।
- मंगल- रैस, तूँ सब जे, जल्दी अलिहै । हम जाग छियौ सुतेले । हमरा मन खबार नगै छै ।  
(मंगलक प्रस्थान । मवनी खादुखन मणिकांत ईंठाम जा बहन अछि । अन्दबमे मणिकांत रैसन छथि । पर्दा हठैए । गप सप शुक होएए । हेब पर्दा खसैए । )
- मवनी- मानिक, गोब नगै छी । (दुखन सेहो पधरि प्रशाम केनक । )
- मणिकांत- कछु डोमीन, आग की रात छै जे दनु माग-पुत ईंठौं हैन ?
- मवनी- रौंखा कौनदीन परीक्षा पास केनक । ओगमे नाँउ निरैए चाहै । सएह रिचाव पुछए एतियनि हैन ।
- मणिकांत- कथीमे नाँउ निखरैए चाहै छीही रौंखा ?
- दुखन- अंजनीयबिगमे । पाँचम रैक अछि ।
- मणिकांत- (उठि कइ पीठ ठोकेत) राह । राह । राह रैछी । । रूत सुनब । ई समाजकेँ तूँ प्रतिष्ठा रूठ ए देहनीन । तएले हमब हार्दिक असीबराद आ हार्दिक शुभ कामना । आरँ राज, तैवा समस्या की छै ?
- दुखन- मानिक, समस्या तँ रूड पैघ छै । एडमिशन आ पठ एगक खर्च । गावजियन कह छथिन- हौंसरी आ डीह रौंछि देरौ । तएसँ नै हेते तइ कौनो धनिकहा हईमसँ रिखाहक गप कइ हुनकासँ पाग नइ कइ परेरौ । रिखाह पठ एगक राद हेते ।
- मणिकांत- (किछु सोचि कइ) ठावर नईखा नईका रिछुए । मजबूरीमे किछु भइ सकै छै, किछु कबए पड़ छै । झुदा हईमसँ पाग नइ कइ पठनोग नीक नै होग छै । काबु एगो थिसा मन पड़ए । एक खादमीकेँ अपन रैछाकेँ मेडिकलमे नामांकन करैक बह । पागक अतारमे उ हईमसँ रिखाहक नाँउपब पाग नइ कइ नामांकन करेनक । पठ एग पुरो नै भेलै आकि ओग भारी डाकूबकेँ रिखाह कबए पड़लै । पठ दिमिसँ ओकब धियान कमलै । पविषाम भेलै जे उ परीक्षामे हेल भइ गेल । हईम खर्च देनाग रँन कइ देननि । उ डाकूब नै घबक आ घाँक बहन । हाबि-थाकि कइ हईम



कथए रैब खर्चा देननि आ कथए रैब रँन केननि । रौबह नाथ कर्हूम खर्च  
केननि । पचेतीमे थूकूम-फञ्जम भेन । नडा की छोड १-छोड १ भेन ।  
केशी-होदारी भेन । अन्तमे नडा कीकेँ ओकवा बाथए पडले ।

दूखन- खेब उ पठनकेँ की ने ? डाकूठव रँनले की ने ?

मणिकांत- हँ रँनले ।

दूखन- केना रँनले ?

मणिकांत- सबकावसँ ज्ञान न२ क२ ।

दूखन- की हमवा ज्ञान भेष्ट सकेँए छै ?

मणिकांत- हँ, खरँस भेष्टते । ज्ञानक निथम छै तँ किथए ने भेष्टते ? झुदा शुक्रमे  
ने भेष्टे छै । किछु रौदमे भेष्टे छै । हमव रिचाव गहए जे पहिने  
जेना-तेना एडमिशन न२ ले । हँव ज्ञान न२ क२ पठ १ग पूर्ण करिहँ ।  
झुदा रिखाक चक्रवमे ने पड आ ने कर्हूमसँ पाग न२ क२ पठ । ग  
जोगाव रँड नहवारँना होग छै । ईसँ आगु अपन रिचाव ।

दूखन- खहीक रिचाव बहते । मानिक, हम सब जाग छी ।

(दूखन झँहसँ प्रशाम केनक । दूनु माग-पूतक प्रस्थान । )

मणिकांत- ग छोड १ खदवीक नान छी । पठक एहेन सुन्नव जिज्ञासा भगरान  
केकरो-केकरो दग छथिन । खरँ ि उ गंजनीयव हेरँरँ कबते । हमवा  
सब एतए पचास घब छी तगमे एकाँठा हाकिम-हूम ने छथि । झुदा दू घब  
डोममे एगो गंजनीयव बाखु भागए गेल । हमवा सरँक धिया-पुता  
बगसीमे चुब बँहए । तहन एहेन नम्य धरि केना पहुँच सकत । खेब,  
भगरान सबकेँ भना कबथुन ।

पठाम्प ।



## आठम दृश्य-

(सथान- चन्द्रशेक हरैली । चन्द्रशे दनु पवानी रैष्टीक सरिन्धमे गप-सपुप क२ बहत छथि । सिकरैष्ट धवा क२ पीरै छथि । )

चन्द्रशे- चन्द्रप्रभा मम्मी, बूछी एत दुब पढ छति गेली जे मन होगए भैँष्ट करी तँ झुकिर । कनी दुब छै रैंगवुव । रौप रे रौप, जागत-जागत-जागत पतन पड़ि गेल । छैनमे रैसन-रैसन सुतराग उखरि गेल । तथनि एगो खडि जे मोरौगत द२ दैरिष्ट हेल । ओगसँ गप-सपुप होगत बहत ।

मनीषा- मोरौगत तँ भने द२ दैरिष्ट हेल । झुदा२२२ ।

चन्द्रशे- झुदाकी ?

मनीषा- झुदा अरुए जे मोरौगतक प्रयोग लोक अथनो-सँ-अथनो काजमे करैए जगसँ केतेठाम केते बगक दृष्टिना भेलए ।

चन्द्रशे- सभ कियो अथन-अथन बूधि-रिरेकक अन्साव मोरौगतक प्रयोग करैए । तगने केते सद्द उषुठरँ । हमवा अथन रैष्टीपव भरोस खडि जे उ मोरौगतक गत प्रयोग नै कवती । की अहाँकेँ ओकवापव भरोस नै खडि की ?

मनीषा- हमव रैष्टी डाकूठवी पठ १ग पठ १ए । कोनो अथकथ खडि जे उ अथना काज कवत । हमरो ओकवापव पूवा भरोस खडि ।  
(मवनीक प्रवेश । )

मवनी- मातिक, गोव नगै छी । मरिकागन, गोव नगै छी ।

चन्द्रशे- रौज की रौत छौ ?

मवनी- मातिक, हमव छौड १ पठ १ खतिव हमवा परेशान क२ देलक । कोनो दशी रौकी नै खडि । हेव क२ छै कोनदीन पठ १ग कवरँ ।

चन्द्रशे- कोनदीन पठ १ग नै, गंजीनियबिगक पठ १ग ।

मवनी- हँ हँ, सगह ।

चन्द्रशे- सुनलौं तँ रँड मन प्रसन्न भेल । झुदा सोचलौं तँ सोचिते बहि गेलौं जे ओते पाग उ सभ केतएसँ खानत जे रैष्टीकेँ गंजीनियबिग पठ १गत ।

मवनी- तहीने एलौं मातिक । की उपाए हेते ?

चन्द्रशे- उपाए हम की रँता देरौ । हम जे कहरौ से तँ सभ थोडहे कवमै ।



- मवनी- मानिक, रिचाव लेरौक चाही दससँ । झुदा कबक चाही सोचि-रिचावि क२  
थपना मनसँ ।
- चन्द्रशि- सून, तँ सब ई पठ १गक नसोड १मे ले पड । रँड खर्च छै रँड । हमव  
रैष्टी डाकूँबी पठ १ग पठ १ए । से, हमवा सबकेँ डुपव-नीचाँ समागए ।  
आ तोवा की हेतो ? तोहव रैष्टी तेज छै । कोनो तवहेँ कोनो पंषा  
गामेमे कवा दही । रँड याँ पाग कमा क२ देतो । ले तहसँ होग छै  
तँ एगो कव ओकरा पैंजार-दहोरी पठा दही, रँड पाग कमा क२ देतो ।  
दूगए-चावि रँथमे धनिक भ२ जाग जेमेँ ।
- मनीषा- ठके तँ कहे छथि । पहिने पेशे देखरँ की पठ १ग देखरँ ? हम जाग छी,  
रँवतन-रौसन ओहिना थछि । (प्रस्थान ।)
- मवनी- मानिक, ले हेते ले तँ होसनी रैचि लेतई ।
- चन्द्रशि- तगसँ केते हेतो । नाँउ लिखरँ जोग ले हेतो ।
- मवनी- कहाँदिनी चानी रँड महग छै, तैयो ले प्रवते ?
- चन्द्रशि- ले प्रवतो । जदी डीहो रैचि लेरँही तँ कहना प्रवतो ।
- मवनी- मानिक, हम सब थमकथ छी । नख-छथ किछो ले रूँमे छिई । ले हेते  
तँ, कनी बाथि डीहो रैचि देरँ ।
- चन्द्रशि- जदी से रिचाव छै त२२२ घबरना आ रैष्टी दुनुकेँ रँजा खान । आ सब  
काज झँहजरानी ले होग छै ।
- मवनी- रँस, रँजेने थरँ छथई । (मवनीक प्रस्थान ।)
- चन्द्रशि- जूरुम भ२ बहन थछि । डोम भ२ क२ गंजीनियव रँनत । ई गनाकामे  
एकठे गंजीनियव ले छै । डाकूँरो हमरैष्टी रैष्टी हएत । साठि-सठवि घब  
झाँलषा थछि । केकरो कोनो नाज ले जे पिया-पुतारकेँ पठ १एत-१ नथएत  
आ कारिन रँनएत । कह जाग जाएत हम रँडका जाति छी रँडका । झाँलषा  
छोड १ सबकेँ देखे छिई भाँग थागत, दक पीरित, गाँजा पीरित, तशि-  
तशि खेलेत । नाजसँ थपने झुड १ घुमा नग छी । कहरँ तँ नगड १  
हएत । एहन काज किथ कवरँ । थस क२ झाँलषा छैरमे देखे छी जाति  
डूँच आ कर्म नीच ।  
(मंगल, मवनी आ दुखनक प्रवेश ।)
- मंगल- मानिक, गोव नगै छी ।
- दुखन- मानिक प्रणाम ।
- चन्द्रशि- की रौंथा, तूँही गंजीनियवियमे एडमिशन कवरँ चह छै ?



- दूखन- ज्ञी मानिक ।
- चन्द्रशि- मर्गन, तौहव घवनी हमवा नग हौमनी रँन्हक बखने छौ । उ रँचते आ  
डीहो रँचते एकवा एडमिशन नेन । ठीके रात छौ ?
- मर्गन- ठीके छिर्ष ।
- चन्द्रशि- रिचाव पक्का छौ किने ?
- मर्गन- हँ मानिक । खानी डीहमे सँ पाँच धुव बखरै ।
- चन्द्रशि- पाग केते नेरँही ?
- मर्गन- जगसँ एकव पठ १ग पूवा भइ जाग ।
- चन्द्रशि- ओगमे कम-सँ-कम सात-आठ नाथ चाही । दूनु मिना कइ ओतेक चीज कहाँ  
छौ ? हम रँड रँसी तँ दू नाथ देरौ ।
- मर्गन- ईमे केना हेते मानिक । अपने गामक मानिक छिर्ष । गवीरपव दया  
कबियो । कम-सँ-कम पाँचो दियो ।
- चन्द्रशि- ने, ओगसँ रँसी ने हेतो । रँड कबमे रँड कबमे तइअ अठ १ग दइ  
देरौ । उ स्वग्गव खोरँहावरँना जमीन के नेतो गइ ?
- मर्गन- मानिक, ओहीक रँगनमे चाबि नाथ ठीके कइ रिकले हेन ।
- चन्द्रशि- जो, ओकरे दइ दिहन ।
- मर्गन- सभ दिन हम अहीसँ नेनी-देनी केरौ । हम अहाँ छौडा केकरो ने  
देरै । किछु खारो किबपा कबियो माँ नक सोना कठेवा जमीन छै ।
- दूखन- मानिक, उचित आ उपकार दूनु रहत । चाबियो पूवा दियो ।
- चन्द्रशि- तँ कह छै तइअ तीन कइ दग छियो ।
- दूखन- माँ नक, अपने पठ १गक महत रँने छी । तँ ने रँषी चन्द्रप्रभाके एते  
दुव एते पाग अर्च कइ डाकूँवी पठ १ग कबरा बहन छी । उ हमरे  
कनासमेनलो बहए । हमरँ रँगनुरेमे एडमिशन कवा बहन छी । मानिक, ई  
मजरुवपव दया कबियो ।
- चन्द्रशि- तँ रात हेहेन राजि देरौ जे हमवा किछु सोचहे पडत । खैव, हम चाबि  
पूवा देरौ कइदा अपन सोसे डीह निखए पडतो ।
- मर्गन- तँ हम सभ बहरै केतए मानिक ?
- चन्द्रशि- से तँ तँ रँमरँही । ने हेतो तँ सबकाबी गाछीमे बहिहँ ।
- मर्गन- माँ नक, अपनेक सअह रिचाव ?
- चन्द्रशि- हमही की कबरै ? हम तँ पाग देरौ । तँरँ कम-सम ने । पूरे चाबि  
नाथ । हमवा तँ समान चाही । ईसँ आगू तँ तँ सभ रँमही ।



- मवनी- दह देखुन । हम सब ओही सबकारी गाडीमे कहूना बहरै । की दूखन रौंड ?  
की दूखन ?
- मंगल- ठीक छै ।
- दूखन- ठीक छै ।
- चन्द्रशे- जौं सरहक रिचाव छौ तहह तँ सब एगो कागतपब दसखत आ निशान  
दह दही । तहन पाग देरौ । जुग-जमाना नीक नै छै ।
- मंगल- नाड मातिरक, कागत आ कजरौष्टी ।  
(चन्द्रशे खंदव जा कइ कागत, कजरौष्टी आ पाग खनगथि । तीनुसँ दसखत-  
निशान लेननि आ चाबि नाथ ठेकका मंगलकेँ देननि । )
- चन्द्रशे- तिखरिही कहिया ?
- मंगल- खहाँ जहिया कहरौ तहिया ।
- चन्द्रशे- ठीक छै । एडमिशनरँदा काजसँ निचैन हो । तेकब पढाति देखन जेते ।
- मंगल- ओम्हबसँ खरँद दिख । खहाँ जखनि कहरौ हम तैयाव छी । खरँ हम सब  
जाग मातिरक ?
- चन्द्रशे- जो ।  
(तीनु गौष्टे चन्द्रशेकेँ प्रणाम कइ प्रस्थान । )  
चन्द्रप्रभा मम्मी, चन्द्रप्रभा मम्मी ।
- मनीषा- (खन्दबसँ) खरँ छी । तुवन्त एनौं ।  
(मनीषाक प्रवेशे । )  
की कहनौं ?
- चन्द्रशे- मंगलारँदा होसनी आ डीह अपन भइ गेल । कागत रँनि गेल छै । रँड  
नहकामे बहनौं । खखनो भजएरँ तँ दस नाथ हेरँरे कबते । से चाबि  
नाथमे लेनौं । ओकरो रँड जकबी छेलै । रँष्टक नाँ त्रिखेरँक छेलै ।  
तँ रँचनक । नै तँ किख रँचतए ?

**पठाम्फेस ।**



## नखम दृश्य-

- (स्थान- सबकाबी गाछी । मंगलक सिबका । दनु पवानी कोनियाँ-पथिया रीने छथि । )
- मंगल- दूखन माध, रौंखाक नाँ उँ लिखा गेलौ । दुरे रँड छै । तीन दिन जागमे खा तीन दिन खरैमे नगर । कह उँ छियौ कोनेज तेतेछे छै से का कहरौ । राप जनमे ओतेछे मकान ले देखने बहिर् । रिद्यार्थी सब बग-रिबगक गाड सँ पठले खरै-जाग छै । नगै छेलौ जेना उँ सब मासुब होग । एगो झंशिसँ प्रछरिर् उँ उँ कहक रिद्यार्थी सब छिर् ।
- मवनी- ओते रँडका लोक सरकक रीचमे दूखन केना बहते खा केना पठते-लिखते ?
- मंगल- बसे-बसे सब ठीक भइ जेते । अपने सब गव नगि जेते । (मणिकार्तिक प्रवेश ।)
- मणिकार्तिक- का हो मंगल ? उँ उँ तेते कातमे चलि एतह जे दुर बुंवागए ।
- मंगल- का कहरौ मारिक ? लिखनाकारे के मेछेते ? खही कहने बहिर् रौंखाक नाँ लिखरैने । ओहीमे हमब डीहो रीक गेल । चन्द्रशि मारिक लेनि ।
- मणिकार्तिक- भगरान गाम ले गेलखिन हेल । कनी दिन खारो कसु कष्ट । रहुत जनदी तेलव दिन-दुनियाँ रँदलि जेतौ । ई समाजमे तेलव हाथ पकड़ रँना कियो ले बहतौ ।
- मंगल- खहाँक झंठमे खमूत रँसए । मारिक, खाग हम केना मन पड़लौ ?
- मणिकार्तिक- मन ले पड़नह । जकबी छन । तँए एलौ ।
- मंगल- का जकबी छन मारिक ?
- मणिकार्तिक- एगो पथिया लेरौक छन । केते पाग दियो ?
- मंगल- खहाँके जे देरौक खछि से दियो खा ले उँ सेहो ठीक ।
- मणिकार्तिक- रिंकाग छै केतेमे ?
- मंगल- एक सए-सरा सएमे रिंकाग छै । खहाँके जे देरौक खछि से दियो खा जे पसनि होगए से लिख ।
- मणिकार्तिक- हेहँ सब सए ठीका लेह खा एगो चिक्कन पथिया देह । (दाक पी कइ नुमेत-नुमेत बरीयाक प्रवेश । )
- बरीया- भैया रौ, हम दनु पवानी रिचाव केलौ जे भैयाके अपने ईठाँ बथि नी, रँड दिक्कत होगत हेते गाछीमे ।





- मर्गन- बरीया, रिचाव तँ रँड रँटा याँ छौ, मिन्नतरना छौ । झुदा तोरो तँ रँड दिक्कत छौ । एक दिक्कत तँ रात नै छै जे दिक्कत-सिक्कत बहि जाधरँ । छौड़, प्रेम छै तँ सब किछ छै । हमबा एते बहए दे । अहिना पियान बथिहे । ओहए कम नै भेलै ।
- बरीया- भौजी, ओग दिन हमबा दनु भाँगेमे उठ्यम-पठका भइ गेल बहए । कोनो काबण नै बहए । दनु भाँगे खेने-पीने बही । तहीमे भइ गेल बहए । निसाँ छूँठन तँ सोचरौँ । रँड तकनीक भेल भौजी ।
- मवनी- नै पचेए तँ किअ पीरै जाग छी ?
- बरीया- हे भौजी, माह कबियो । रँड गनती भेल हमबासँ ।
- मवनी- माह तखने कबरँ जखनि फेब एहेन गनती नै हएत ।
- बरीया- भौजी, दाक-ताड़ ी तँ हम पीरै कबरँ । तखनि नगड-दन नै कबरँ, से गछै छी ।
- मवनी- रौंखा, एमहब-ओमहब केनाग छौड़, खा पिया-पुताक पठ १ग-निखापव पियान दियो । पठन-निखनक जुग एलेए । रिन्न पठने केकरो गुजागशि नै हेते ।
- बरीया- अ रँह भौजी, अहाँ रँड चनाक छी । अपने जकाँ रौनक पता तोडरैने चाँह छी । एहेन सडन काज हम नै कइ सकै छी । पिया-पुताकेँ पठ १ग खातिब डीहो रँचि नी । अ कोनो नीक काज नै ।
- मवनी- बुंमनौ, अहाँ रँड नीकरानी छी तेँ सबकाबी गाछीमे सिबकी तनने छी । अहाँ अपन नीक अपने नग बथु ।
- भैया, हम जाग छियो । तोरा सभकेँ कोनो तबहक दिक्कत हेतो तँ हम ओकब रँरस्था कबरँ । रँष्टा, तैयाव छै ।  
(बरीयाक प्रस्थान । )
- मवनी- दुखन रौड, देखहक, भना जुग समाव नै ।
- मर्गन- तोरा कोन जकबी छौ ओतेक नरँव-नरँव करैक । बाबकेँ सुख रँनए होग छै । पीनहाकेँ दिन-दुनियाँ दोसब होग छै । उ हबिदम पी कइ रँच बहए । ओकबासँ रँसी राते नै कबक चाही ।
- मवनी- ठके कहनहक ।

पठाम्फेप ।



## तेसब थक- पहिल दृश्य-

स्थान- रंगवृक एकठा पार्क । साँसक समथ । डाकूठव पार्कमे घुमि बहनी  
थछि । पार्कमे किछ लोक घुमि बहन थछि आ किछ लोक रैस क२ गप-  
सपूप क२ बहन थछि । )

डाकूठव- हमब पापाक उदेस पूर्ण भेल । हम आग डाकूठव रैनलौं । बिजलठे नीक  
थछि । भगवतीसँ प्रार्थना करै छियनि जे हमब सेरा नीक बहथ । सेरा  
पेघ धर्म होगथ । हे भगवती । हमबा उ शक्ति दिख जगसँ हम  
जनसेरामे नीक प्रतिष्ठा पारि सकी ।  
(गंजनीयबक प्रवेश । उहो पार्कमे घुमि बहन थछि । दनु एक-दोसब दिस  
ताकि-ताकि ठहरि बहन थछि । दनु एक-दोसबकेँ ने चिन्हथ, भठकि बहन  
थछि । )

यो रिद्यार्थी, यो रिद्यार्थी ।

गंजनीयब- का ? (दनु एक-दोसब दिस ठक-ठक ताकि बहन थछि । )  
का कहलौं ?

(डाकूठव किछ ने राजि बहनी थछि । । )

किथए ठेकलौं ? किछ किथए ने रजे छी ?

डाकूठव- (झुसकी दैत) हम अहाँकेँ चिन्ह छी आ भठकेँ छी । अपनक परिचय ?

गंजनीयब- हमब नाँ दुखन मल्लिक, पिता श्री मंगल मल्लिक ।

डाकूठव- रैस कक, रैस कक । बुमि गेलौं, चिन्ह गेलौं ।

गंजनीयब- तहन हमरूँ चिन्ह गेलौं । अहाँ चन्द्रप्रभा छी ने ?

डाकूठव- अरैस छी । चिन्हन लोक केतौ अचिन्हव होग ।

गंजनीयब- पबिसंथिति अचिन्हव रैना दग छै चन्द्रप्रभा ।

(डाकूठव सर्गी शीति पार्कमे घुमेथ आ दनुपब पियान बथेथ । )

डाकूठव- दुखन, मनुकथ पबिसंथितिक दाम होगत थछि आ पबिसंथिति अचिन्हारोकेँ  
चिन्हव रैना दैत थछि । संथिति-पबिसंथितिक गप छोट दुखन । एकब  
स्केत्र रैड पेघ छै । आरै अपना सब किछ अप्पन गप-सपूप करी ।  
आग-कानहि का सब करै छै ?



- गंजीनियब- गबरीं खादमी की क२ सकेए चन्द्रप्रभा ? कौहुना जरीं छी । तोरा द२ तोरब पापा कहने छेरखून जे रँगनुबमे डक्खबी पठ १ग पठ १ए ।  
भरिसक तोरब पठ १ग खतम भ२ गेर हेते ?
- डक्खब- एम.बी.बी.एस. पूर्ण भ२ गेर । कम-सँ-कम एम.डी. खरँसुस कबरँ खा तूँ खपन कह ने, की क२ बहर छै ?
- गंजीनियब- हमरो गंजीनियबिग पूर्ण भ२ गेर एते । हमब घबक स्थिति एतेक खबारँ खडि जेकब रँगन ने । तूँ बूमिमे हेरँही । माता-पिता केना बहत हेथिन से ने कहि । हमब पठ १ग खातिब हमब डीहो रीकि गेर । तोरे पापा जेरखून ।
- डक्खब- हमरे पापा जेरथिन ?
- गंजीनियब- हँ, हमबा सामनेक गप खडि । हुनका कागतपब माता-पिताक संग हमहुँ दसखत खा निशान देने छी ।
- डक्खब- हमरो पापा जे छथिन, से खजरीं किसिमक लोक छथिन ।
- गंजीनियब- ने चन्द्रप्रभा, जुगक खनुसारे ठीक छथिन । खाग-कान्हि एहेने लोकक पुछ होग छै ।
- डक्खब- तोरब खगिना रिचाब की केना छौ ?
- गंजीनियब- नोकबी-चाकबी भेष्ट जेते तँ क२ नेरै । मतो-पिताकेँ ने देखरौक खडि ? हमबा खातिब हुनका सबकेँ केते तकनीक भेर हेतनि खा केते होगत हेतनि ?
- डक्खब- से तँ ठीके । माता-पिता खपन रौर-रँचा जेर की की ने करैए । रौर-रँचा नम्हब बेनापब ओकरा सबकेँ रिसबि जागए ।
- गंजीनियब- ओतरेँ ने, माबरौ-पठरौ करैए । देखे खा सुने छी तँ होगए माता-पिता पिया-पुताक जनम किखए दग छै ?
- डक्खब- नगैए जेना तोँ मातृभक्त खा पितृभक्त होग ।
- गंजीनियब- माता-पिताक पिया-पुता जदी डक्खब-गंजीनियब भ२ गेलै तँ उ पिया-पुता माता-पिता भ२ गेलै खा उ माता-पिता पिया-पुता भ२ गेलै की ?
- डक्खब- से केतौ होग ।
- गंजीनियब- एगो रौर बूमनी चन्द्रप्रभा, मातृदेरो भरः । पितृदेरो भरः । गब देरो भरः । खतिथि देरो भरः । जदी ई सभपब गर्भवतापूरक रिचाब कबरँही तहन बरस्य स्पष्ट हेतौ । चन्द्रप्रभा, एते कार हम तोरब समए जेरियो । तगने म्कमा चाँ छियो । काका समए मुन्घरान होग छै ।



- डक्टव- से तँ होग छै । झुदा सभ ठाम ले होग छै । एतए ले हेते । काबू  
खपना सभ जीरनोपयोगी गप-सपू केनौ । ओना तोबा रैसी जकबी छै  
तँ जा सकै छै ।
- गंजीनियब- जकबीए ले रँड जकबी खड्डि । हमब हरेक काज समेसँ होगए । आरँ  
जेरौक आजा दे ।
- डक्टव- रैस जो । झुदा ।
- गंजीनियब- झुदा की ?
- डक्टव- झुदाक जरारँ रौदमे । खथनि तोबा समेक खभार छै ।
- गंजीनियब- समेक खभारमे झुदाक जरारँ हमबा खथनि दे । ले तँ हमबा नील ले  
हएत ।
- डक्टव- तोहब गप खतिभारपूरी होग छै । मन होगए सुनिते बडू ।
- गंजीनियब- आरँ दासब दिन चन्द्रप्रभा । खथनि चरनियो ।  
(गंजीनियबक प्रस्थान । )
- डक्टव- दुखन गंजीनियब रँनर । आ पाथबपब दूरि जनमेनाग भेन । एते गबीरँ  
रिद्यार्थी गंजीनियब रँनर । आ रँड पैघ रौत भेन । धन्यवाद ओकब माता-  
पिताकेँ जे एते पैघ काजक रौडि । उठा आकेबा सहन केनक ।
- शाति- (झुस्कागत) की चन्द्रप्रभा, मामना किछ गडरँड छै की ?
- डक्टव- किछ गडरँड ले शाति । तोबा शिक केना भेलौ शाति ?
- शाति- शिक किखए ने हएत ? रँडि कासँ तँ सभ गप करै छेलै ।
- डक्टव- उ हमब नगोष्टिया सर्गी छन । मैथ्रिकक पछाति पहिन रँब भेँन छन ।  
तँए रैसी काज गप-सपू भेन ।
- शाति- उ करै की छै ?
- डक्टव- गंजीनियब खड्डि ।
- शाति- जोडि तँ रँड नीक छै ।
- डक्टव- (झुसहरागत) तूँ खू छै । जे रौत हम सोचनौं ने बहिँ से रौत आग  
हमबा सोचैसँ मजरुब करै छै । आ हागत ममी-पापाक छिँ । ईमे हमब  
कोनो डिसीजन ले ।
- शाति- से किख ? तँ रँचा छिन की ?
- डक्टव- ममी-पापाक नजबिमे रँचा छिहे ।
- शाति- झुदा तँ खपन नजबिमे आकि हमबा नजबिमे कथी छिन ?
- डक्टव- डक्टव छी ।



- शाति- तोहब डमेव केते छो ?
- डाकूँब- पछीस मानि ले ।
- शाति- खठावहसँ सात रैसी भेलौं । कानूनक नजबिमे सेहो योग्य छै ।
- डाकूँब- हमछुँ ग़ा सभ रूँने छिई । रैछा जकाँ ले रूँमा । छोड ग़ा गप-सप ।  
जापबि सबकारी नोकरी ले कबरँ तापबि हम ई रिषयमे किछु ले सोचरँ ।
- शाति- भगरान कबए, तोवा सबकारी नोकरी जन्दी होड आ ओग नडकारेँ सेहो  
होग । सर्गी-साथी छै । तँए मजाक केरियो । माह करिहै ।  
(डाकूँब आ शाति हँसए नखैए । )

पठाम्प ।



## दोसब दृश्य-

- (स्थान- रेतमन्त्री नित्यानन्द मिश्रिक खारास । खारासपब नित्यानन्द खा  
खंगबम्बक रक्का न्ना रेत मन्त्रायक सरिन्धमे गप-सपू क२ बहन छथि । )
- नित्यानन्द- रक्का, जखनि हमबा रेत मन्त्राय भेष्टन तखनि रँड प्रसन्नता भेल । झुदा  
खरँ तंग छी ।
- रक्का- से किथं मन्त्री साहिरँ ?
- नित्यानन्द- मन्त्रायक खंदबमे रँड घुसखोबी छै । तेहन तेहन पैबरी खरँ जे  
नहियौं चाहि क२ ओकब काज कब पड'ए । रँदनामे पाग केते होग  
से खरँ बुमिमे छै ।
- रक्का- से किथं नै बुमरँ । काबण रँहुत काज हमरो हाथसँ होगए । की कबरँ  
साहिरँ सब मन्त्रायक ओह स्थिति छै । कोनो उरिस छै तँ कोनो रीस ।
- नित्यानन्द- हँ, से तँ छै । झुदा तकनीक ओतए होगए जेतए योग्यक काज नै होग  
छै खा खयोग्यकेँ भ२ जाग छै । ए सब मानक कमान छै । कखनो-  
कखनो होगत बहए जे जनप्रतिनिधि भ२ क२ पर्रनिक सग रँड गद्धदारी  
करै छी । खेब जनिते छी जे लोभ पापक काबण होग छै ।
- रक्का- खरँ की कबरँ ? ए मोक्या रँब-रँब भेष्टरँ कबत, से कोनो निश्चित  
छै । नै, खनिश्चित । तहन जे खरँ छै खरँ दियो ।  
(गंजीनियबक प्ररेशि । )
- गंजीनियब- (नित्यानन्दकेँ) सब प्रशाम ।  
(नित्यानन्द डुपब-निच्छाँ निहाबि क२ ग्मम छथि । ) (रक्काकेँ)  
सब प्रशाम ।
- रक्का- की रात हड, राजह ?
- गंजीनियब- रेतरेक गंजीनियब लेन एगो पैबरीक जकबी छेलै ।
- रक्का- साहिरँ रात कब ।
- गंजीनियब- सब, रेतरेँ गंजीनियबक पीपी. खा मेन्स निकानि गेल खडि । जूरागनिग  
लेन दु नाख ठका मांगै छथि । हम गबीरँ लोक । ओते पाग केतएसँ  
खानरँ ?
- नित्यानन्द- पठले केना ?
- गंजीनियब- माता-पिता डीहो धरि रँचि देनखिन । एगो सबकाबी गाडीमे सिबकी तानि  
बैत हेते ।



- नित्यानंद- नाम की छियौ ?  
गंजीनियब- दूखन मन्तिक ।  
नित्यानंद- कौन मन्तिक ?  
गंजीनियब- डोम मन्तिक सब ।  
(नित्यानंद आ रक्काक नाक-भौं सिफुडा जागए । )  
नित्यानंद- खच्छा, हुनकासँ गप कब । हम कनी खरै छी ।  
(नित्यानंदक प्रस्थान । )  
गंजीनियब- सब, एकठा गबीरपव धुपा कबितिई ।  
रक्का- हम का किवपा कबी । किवपा तँ डुपवरैना कबत हग । गबीर खादमी  
गंजीनियब रनख ता । रिनू मानके कमान कैसे होग ? तहमे डोम री ।  
जातो गमाग, सुखादो ना पाग । ग कैसे हो सकथ तँ ?  
गंजीनियब- खरूँ सब जा त-पाति आ डूँच-नीचक भेदभार बथे छिई सब ? भावत  
धर्म निवपेसक बाध्रूँ खडि । ई बाध्रूँक शीर्षपव रैस एकव गबिमा नष्ट क२  
बहत छी ।  
रक्का- हमवा एतना भाषा खच्छा नही गगत हग । अपन-अपन जाति ने सब  
हवान हग । कम-सँ-कम एको नाथ हडु तँ तोहव काज होग जाग ।  
गंजीनियब- सब, नै छै ।  
रक्का- कोग उपए देखथ, तँ होग जाग ।  
गंजीनियब- सब, हमवा कानो उपए नै छै । सब एगो गबीरकेँ कन्याण क२ दैतिई ।  
खाजीरन धुतडु बहिरौं ।  
रक्का- रँक रँक काहे कबह ता ? ठाका ना, नोकबी ना ।  
(नित्यानंदक प्रवेश । दूखन नित्यानंदक पएव पकडा गगए)  
नित्यानंद- की भेनौं रौंखा ? की दिक्कत छै ?  
गंजीनियब- सब कहतथिन, कम-सँ-कम एक नाथ ठाकाक ओबियान करैले । तहिन  
हथत । सब, हम एक नाथ ठाका केतएसँ खानरँ ? डीहो रीक गेन  
खडि । कौनो खाशि नै खडि ।  
नित्यानंद- गबीर छै तँए एके नाथ । नै तँ ई नोकबी नेन दस-दस नाथ ठाका पार्षी  
पएव पव बथि जागए ।  
गंजीनियब- सब, लोक सब रँजेत बह छै, एकठा घब डयनो रँकस छै ।  
रक्का- जा, डयने रँकस देग । हमवा लोगन डयन नै न री ।  
(गंजीनियब कनेत-कनेत प्रस्थान । )



सोहरै, नडा कन तेज रौ। लेकिन गरीर रौ। खपने लोगन के भी पेट  
हंग, रौत-रौचा हंग।

(चन्द्रशि आ चन्द्रप्रभाक प्रवेश।)

चन्द्रशि- मंत्री सोहरै प्रणाम।

नित्यानंद- प्रणाम प्रणाम। कछु की रौत ?

चन्द्रशि- खहाँक समझिक साबछक भाए हमब नगोष्टिया संगी। ओह पठेवधि जे मंत्री  
सोहरैके हमब नाँउ कहरेनि। भइ जेते पैंवरी। हमब रैषी खहाँक रैषी  
छी। (चन्द्रप्रभा कब जोड़ा प्रणाम करैए।)

नित्यानंद- की पैंवरी खडि रौजू ?

चन्द्रशि- ग हमब रैषी छी। एम.रौ.रौ.एस. कमप्लीट भइ गेल छन्हि। एम.डी. करैले  
चाहै। छुदा नोकरी करैत। बेनरें डाकूबक पी.पी. निकलि गेल छन्हि।  
मेन्स आ जूरागन लेल पैंवरी। आव किछु नै।

नित्यानंद- खपनेक नाँउ ?

चन्द्रशि- चन्द्रशि म्या।

रक्षा- म्या हइ सरजातीय हइ तँ पैंवरी काहे नै होग ? तोहब पैंवरी ना होग  
तँ केकब होग।

नित्यानंद- रक्षा, खन्दबसँ चाह खानि कइ दिखनु रूँमके।

(रक्षा खन्दब जा कइ चाबि गो चाह खनक। चाक गोष्टे चाह पीए।)

चन्द्रशि रौरु, खपने रक्षसँ गप कर। हम कनी खरै छी।

चन्द्रशि- हम तँ गरीर छी। कमाग छी तँ खाग छी। रौप-दादरौ जमीन रैचि कइ  
रैषीके डाकूब रैनैलो। गहएषी सतान खडि। प्ररैल गच्छा छन रैषीके  
डाकूब रैनारी।

रक्षा- रैषी, डाकूब रौ। ग कय भारी रौत रौ। दस-दस नाथ षका भैठत  
हंग। तँ खपन लोग हइ। कम-से-कम एक नाथ तँ नगरे कबी।

चन्द्रशि- सब, हम नै सकरै। कनी मंत्री सोहरैके रैजुरियनु। हुनकासँ भैठ कइ चलि  
जावरै। रैकावमे एरौ।

(रक्षा नित्यानंदके खन्दबसँ रैजा खननि।)

नित्यानंद- की कहता ? कहनि खहाँले कम-सँ-कम एक नाथ। नै बाधके मन घी  
हेतनि आ नै बाधा नचती।





(नित्यानंदक पएव पकड़ा ) मंत्री सहिरै, पएव पकड़ा छी । छुपा कएत  
जाड । रँड खाशिसँ खाएत बही । खपने कहुँम छी । स्रजातीय छी । रँड  
गवीरै छी । एकठा गवीरकेँ ताड़ा यो सहिरै ।

नित्यानंद- खच्छा पएव छोड़ू ।

चन्द्रशे- पएव तँ नै छोड़रै । जाधरि हँ नै कहरै ।

नित्यानंद- कहुँम आ स्रजातीय छी तँए हँ कहि दग छी । रकषा राबूकेँ किछ दइ  
देरनि । (चन्द्रशे नित्यानंदक पएव छोड़ा देरनि । )

चन्द्रशे- जे सकरनि तगमे कोताही नै कबरनि ।

नित्यानंद- हम जाग छी । जकबी खडि ।

चन्द्रशे- प्रणाम मंत्री सहिरै ।

(नित्यानंदक प्रस्थान । )

रकषा राबू, एक हजार ठाका मिठाग खागले लेन जाड ।

रकषा- तारैइ । तँ जीत गेतरह । रँड ी भाग्यकेँ तेह हइ । जातिक नाम पब  
जीत गेतरह । (चन्द्रशे रकषाकेँ एक हजार ठाका देरनि । ) तँ सभ जा ।

चन्द्रशे- रकषा राबू, प्रणाम ।

(चन्द्रशे आ चन्द्रप्रताक प्रस्थान । )

रकषा- ईमे पूवा घाँठा रा । खैव, जाति रा ।

पठाम्फेप ।



## तेसब दृश्य-

(स्थान- गंजीनियबक डेवा । साँसक समय । प्रसन्न ह्रदामे गंजीनियब रैस क२ भरिसक सरिन्धमे सोचि बहन छथि । )

गंजीनियब- जग देशिक मंत्री घुसखोब बहते आ जाति-पातिपब चरते, उग देशिक कन्याण केना संभर छै । उ देशि गर्तमे जेरै कबते । धूर सत्य छै । काषण उ घुस न२ क२ अषनारके नीक रैनेते । काज अषनार हेते । प्रायः सब सरकारी तंत्र सब फेर भ२ बहलैथ । खाली कागत षाण्ट बहथ । जगहपब किछुओ होउ परिनिक जानथ । केना ओकरा राजत गेलै, षका ना, नोकरी ना ।

**खै,** नै बेनरै तँ माकतीथ कंपनी सही । नै सरकारी नोकरी तँ प्राणरेष्ठे नोकरी सही । एक-सँ-एक प्राणरेष्ठे कंपनी छैर नाथ-नाथ षका तनखा छै । ओकर तुनना कहियो सरकारी नोकरी कबते । खाली एस-आवाम छै सरकारी नोकरीमे । तँथ लोक एते हवान बह ।

(डाकूठबक प्रवेश)

डाकूठब- का हार-चार छौ दूखन ?

गंजीनियब- ठीक छौ । केमहब-केमहब एरै हन हनहाबि साँसमे ?

डाकूठब- एकषा षका थूँखरैबी देरौक बहथ तोबा । तँथ एरौं ।

गंजीनियब- का ?

डाकूठब- बेनरै डाकूठमे हमबा भ२ गेलौ । पापा आअन छेरथिन । मंत्री साँससँ गप भ२ गेलौ ।

गंजीनियब- का केना मान नगलौ ?

डाकूठब- किछु नै, मात्र एक हजार षका ।

गंजीनियब- मँगनीमे भ२ गेलौ । नगैथ रौभन छेरै तँथ तोबा भ२ गेलौ चन्द्रप्रभा । काषण मंत्रीओ साँस रौभने छथिन ।

डाकूठब- से तँ हुनकब रँडीगाडो ब्राह्मणे छथिन । हँ, तँ ठीके कहलै । हमबा ब्राह्मणे दूखारे भेर । तँ केना बूमनिही ग्रा भौँज ?

गंजीनियब- हम ओकर बुकतभोगी छी । हमबा ओह मंत्री साँस डोम दूखारे नै केरथि । अपन सब मजबूरी सुनेरिथनि । पएब धरि पकड़रिथनि । ह्रदा षस-सँ-मस नै भेरा । रँडीगाडि कहनि “ना षका, ना नोकरी ।” तनखा केते भेष्ठतौ तोबा चन्द्रप्रभा ?



- डक्ठब- खठावह हजावसँ रँहानी छै ।  
गंजीनियब- तहने हमछुँ कोनो रँजए नै छी । हमछुँ माकती कपनीमे जूरागन क२  
नेलौं खाग ।  
डक्ठब- तोवा केते भैठेतौ ?  
गंजीनियब- पैंतानीस हजावसँ रँहानी अछि । झुदा नोकबी प्रागरेष्ट अछि । तूही ठीक छै  
चन्द्रप्रभा ।  
डक्ठब- तूही ठीक छै दुखन ।  
गंजीनियब- तूही ठीक तँ तूही ठीक । यानी सब ठीक ।  
डक्ठब- दुखन, खपना-खपना जगहपव कोग केकरोसँ कम नै अछि । **खैब**, ग्रा रात  
खरँ छोड़ । खरँ हम एगो नरँका रात कहए चाँ छियौ ।  
गंजीनियब- खरँसँ कह ।  
डक्ठब- कँक हिममत जे नै होगए ।  
गंजीनियब- एहेन कोन गप छै जे कँक हिममत नै होगए ?  
डक्ठब- जिनगीसँ सरँनषित अछि । (झुसुफबाए नगैए । )  
गंजीनियब- जिनगीमे कोनो एगो गप अछि । खनन्त गप अछि । तगमे कोन ?  
डक्ठब- मय्या-पापाक डब होगए । हुनका सबकेँ हमबापव रँड रिसरास छुनहि ।  
गंजीनियब- पहिने रात थोनि क२ राज नै, तहन रिचाव हेते ।  
डक्ठब- हमव सर्गी पार्कमे तोवा द२ किछ-किछ कँ छुन । सएह गप ।  
गंजीनियब- की कँ छेनखुन ? हमबासँ किछ गनती भेलै हैन की ?  
डक्ठब- नै नै, गनती-सहीरना गप नै छै । दोसव गप छै ।  
गंजीनियब- कोन दोसव गप छै ?  
डक्ठब- कोनो गप नै छै । (झुसुफबाए नगैए । )  
गंजीनियब- नै कोनो गप छै, तँ जो खपन डेवापव । बाति भ२ गेलै ।  
डक्ठब- तूही जो खपन डेवापव । बाति भ२ गेलै ।  
गंजीनियब- रँताहि भ२ गेलै की ?  
डक्ठब- तूही रँताह भ२ गेलै ।  
गंजीनियब- हम रँताह नै भेलौं । हम तँ पूवा ठीक छी ।  
डक्ठब- हमछुँ तँ पूवा ठीक छी ।  
गंजीनियब- चन्द्रप्रभा, एकठा डक्ठबकेँ एते रँसी मिमक शोभा नै दग छै ।  
डक्ठब- से तँ हमछुँ बुँने छी । झुदा गपे तेहने छै । (झुसुफबाए नगैए । )  
गंजीनियब- खरँ हम निकनि जेरौ डेबासँ ।



- डकूठब- हमरूँ निकलि जेरौ तौरे संग । (नजबिसँ नजबि मिनरैए तगर । )
- गंजीनियब- तौहब नजबि हमबा एकठा नरँ सँदेशे द२ बहन खडि ।  
(डकूठब गंजीनियब दिस एकठक तकेत ग्मसुम खडि । )  
सँदेशे दुष्ठा दिनक मिनान नगैए । की हमब खनुमान सत्य खडि ?
- डकूठब- (रूड १ डोनरैत) रूँ । (हेब नजबिसँ नजबि मिनरैत)
- गंजीनियब- थारौ रौज ने ?
- डकूठब- थारँ रँजेए पडत । रँड समए नरूँ भेल । रँड बाति भ२ गेल । डेरो जेरौक खडि ।
- गंजीनियब- रात तँ रूमागए गेल । तैयो जे किछ रँजरौक छौ से जन्दी रौजि दही खा चलि जौ ।
- डकूठब- किखए, हम तौबा जानपब छियौ ?
- गंजीनियब- (रूसुफरा क२) ने ने, से रात ने छै । थारँ नगै छौ हमबा२२२ ।  
(गंजीनियब डकूठबसँ नजबि मिनान बहन खडि । दूनु एक-दोसब दिस एकठक तकेत ग्मसुम खडि । दूनु उठि जागए । )  
थाग थाग थाग । (हाथ फैला क२ । )
- डकूठब- न२ २ २ २ २ २२ । (हाथ फैला क२)
- गंजीनियब- यू । (दूनु एक-दोसबसँ थाग तर यू, थाग तर यू कहि टिपकि गेल, हेब दूनु ठष्ट गेल । )
- गंजीनियब- जा, ए की भ२ गेल ? की क२ तग जाग गेलौ ?
- डकूठब- हौनारै कियो रौकि सकलौ हेल ? हौनी तँ हाथ धबा क२ हाग छै ।  
दूखन, थारँ हमब एकठा रिचाब खडि । से कहियौ ?
- गंजीनियब- थरँसुस कही ।
- डकूठब- हमब रिचाब खडि जे दूनु गोठे गाम जगतौं खा अपन गौथाँ-समाजके दर्शन कबितौं ।
- गंजीनियब- रिचाब तँ उतुम छौ । मतौ-पितारै देखना रँछु दिन भ२ गेल । तौरो रँछु दिन भ२ गेल हेतौ । जेरँही केना ?
- डकूठब- संगे चनरँ ।
- गंजीनियब- गामसँ दूब तँ ने कोनो रात । रूदा गाममे कियो संगे जागत देखता तँ की कहता ?
- डकूठब- के की कहता ?



- गंजीनियब- लोक सभ कहता जे चन्द्रशे रौरूक रैषी मंगला रैषी संगे एले । डोमसँ  
ब्रौह्मणी छुथा गेली । लोक सभ गहो कहि सके छथि जे जे दूनु एक्के  
संग किथए थाएत । दानिमे किछु काबी छै । (दूनु रैसत)
- डक्ठब- गाम-घब तँए ने एते पछुथाएत छै । लोक सभ हबिदम खनकब गना-  
मीनामे नगत बहै । अपना दिस तकेक हबसत ने बहै छै ।
- गंजीनियब- चन, देखत जेते । हाथी चनए रजाब कृता लुकए हजाब । एगो कह तँ  
चन्द्रप्रभा, अपना सरहक जोड़ ी केहेन हेते ?
- डक्ठब- लोकके तँ रड़ खबार नगते । हदा हमबा रड़ नीक नगत था तोबा ?
- गंजीनियब- हमबा नीक ने नगत ।
- डक्ठब- से किथए ?
- गंजीनियब- कावश हम डोम छी था तँ ब्रौह्मणी छै । तँ ऊँच छै हम नीच ।
- डक्ठब- एहए मानसिकता समाजके डाँड़ तोबि कहबा बहनए । खनीपब कारू पेनाग  
छै । तहन ने समाजक रिकास हएत । समाजक रिकाससँ बाष्पक रिकास  
हएत । देशक बग-बगमे ऊँच-नीचक भारना योमियाएत थछि । ग भारना  
नष्ट दह ने हष्ट सकेए । बसे-बसे हष्टत । देखनी, रीड १ उठेनिहाबके  
कनी रैसी लीब होएते छै ।
- गंजीनियब- अपना सरहक जोड़ ी तँ सचरूच रड़ नीक हेते । खेब, गाम चन । देखत  
जेते । हमबा तँ एक्क सप्तहक छुष्टी थछि था तोबा ?
- डक्ठब- हमरो तँ सएह छै । चन, हेब जन्दी एरौको छै । देखनी दूखन, जापबि  
सभ जाति एक ने हएत, ऊँच-नीचक भारना ने हष्टत तापबि लोकमे  
एषिया-द्वयक भारना जकडन बहत । तगसँ मानरता हष्टत था देशक रिकास  
ककत ।
- गंजीनियब- गप तोहब ओबागते ने छै । थारँ छोड़ रौदमे हेते । कान्हि सरैरे  
निकरौक छै ।

**पठाम्प ।**



## चाबि दृश्य

- (स्थान- चन्द्रशेक ठरेली । चन्द्रशे आ मनीषा चन्द्रप्रभाक रिखाकक सरिन्धमे गप-सपप करै छथि । )
- चन्द्रशे- चन्द्रप्रभा मम्मी, आग चन्द्रप्रभाक अरैया अछि । आरै जौं आकेवा देखै तँ चिन्हरो ले कवरै । दोसरे बग भ२ गेनए । रँगनुव हम गेन बही ई रैव तँ चिन्हमे हमरो धोखा भेल । ओतुक्का जतराहा अपना गुँवसँ अलग छै ।
- मनीषा- तहन तँ ओकब रिखाक सेहो जल्दी कबए पडते । काबण सभ किछ समेपब नीक होग छै । डमेरो छै आ सबकाबी नोकरी सेहो छै । झुदा एगो रात पुछी ?
- चन्द्रशे- पुछू ले ।
- मनीषा- डाकूठब रँव चाही रा अँजनीयब रँव चाही रा कोनो आगए.एस. अँहिसब ।
- मनीषा- झुदा ई रँव सरँकक माँग केते हएत, से बुँने छिई ?
- चन्द्रशे- केते हएत, दस पेँपीसँ डुपरे हएत । तेकब चिन्ता हमरा अछिए ले ? काबण रँकमे ओते बाखन छै ।
- मनीषा- झौंलगामे दहेज रँड रँसी होग छै । जौं रीस पेँपीमे ओहन रुँदूम पकड एत तँ का कवरै ?
- चन्द्रशे- जमीन रँचि क२ तगा देरै । जौं ओगसँ आगु रँटते तँ कोनो जमीनदारे घबमे क२ देरै । हमब रँष्टी ओग घबमे बानी रँनि बाज कबती ।
- मनीषा- तहन डाकूठब भ२ क२ कोन फेदा ?
- चन्द्रशे- हुनब केतो रँर्थ गेलैए । गामेपब क्लिनिक खोति लेते । खु पाग कमेते । रँड प्रतिष्ठा भेँष्टते ।  
(डाकूठबक प्ररेश । मम्मी-पापाकेँ पएब छुरि प्रशाम क२ मम्मी तग रँस गेन । मम्मी डुपब-निच्छाँ निहाबि बहन अछि । )
- मनीषा- (चन्द्रप्रभाक देह सहनारैत) रँष्टी, तँ तँ दोसरे बग भ२ गेनही । पापा कह छेनखुन । हमरा रिसरास ले होग छन । केना एहेन भ२ गेनही ? कथी आग छेनही ओतए ?
- डाकूठब- मम्मी कथी खेरै । जे तँ सभ आग छीहे, सएह । ओतुक्का जतराहा दूखारे एहेन पबिरतन भेलै हेल ।
- मनीषा- आकि कोनो दर्राग आग छेनही ?



- डक्टव- नै गौ मग्गी, सब किछ एतुक्क जकाँ छेलै । एकदम सापावण बहन-सहन  
छन ।
- चन्द्रशि- रैष्टी, सरिसक हात-चात कह ।
- डक्टव- पापा, हाँसपौठनमे रँड प्रतिष्ठा थिछि ।
- चन्द्रशि- रैष्टी, एकठा रिचाव पुछ्छे छियौ ?
- डक्टव- खरँसस पापा ।
- चन्द्रशि- तोहब रिखाहक सरँनपमे किछ सोचन जाय ?
- डक्टव- अ रात तँ मग्गीसँ पुछुक चाही ।
- चन्द्रशि- नै रैष्टी, तूँ सब तबहसँ नम्हब छिही । जदी हमवासँ कोनो खनुचित निरूपण  
भइ जेते तँ हम पाडन जायँ । जखनि रैष्टी-रैष्टी थठावहसँ ठपन तखनि  
ओकवासँ मियरत रैरहाव हेरौक चाही ।
- डक्टव- से तँ ठीके ।
- चन्द्रशि- रैष्टी, हमब शुकुसँ रिचाव थिछि जे तोहब रिखाह जातिमे बाजा क्रममे  
कवी । आ तोहब रिचाव ?
- डक्टव- हमब रिचाव थिछि सीता आ सारिवा जकाँ रिखाह कवी ।
- चन्द्रशि- जेना सीता आ सारिवा अपन मन-पसिन रँवसँ रिखाह केनी तहिना होगते  
तहन नीक बहते । जाति-पाति कोनो रँड पैघ चीज नै छिई । अस्मन  
जाति अक्लुषा थिछि, मनुख जाति । खानी रैरहाव नीक होगक चाही, रिचाव  
नीक चाही आ कर्म नीक चाही ।
- चन्द्रशि- तोहब कहँ अहए नै छौ जे डोमोक रैरहाव-रिचाव-कर्म नीक होग  
तइइ ओकवासँ ब्रौह्मी रिखाह कइ सकैए । सएह नै ?
- डक्टव- सोनहली । भगरान राम शिरवी अँठाम अँठार रँव खने बहथिन की नै ?
- चन्द्रशि- हँ, से तँ ठीके छिई ।
- डक्टव- से किथए ? रिना कावणे । शिरवीमे प्रेम-श्रुहाक गुण छेलै । उ गुण  
भगरानकेँ आकर्षित केनक आ उ आकर्षित भेला ।
- चन्द्रशि- भगरानकेँ तँ लोककेँ तारेक बँह छनहि । तँए उ किछ कइ सकै छथि ।  
रुदा हम जे हुनकब देखोसि कवरँ से हमबा रूते संभर नै छै । हम  
अपना जकाँ कवरँ । जातिक प्राथमिकता हम देरँरे कवरँ । हम सबसँ  
पैघ जाति छी ब्रौह्मी । जदी हमही दुसि जायँ तँ दुनियाँ खनेबे भइ  
जेते । कस्ता-पेवा लोक चएह देत । हमबा जे एते प्रतिष्ठा थिछि से  
माँष्टमे मीनि जायत ।



- डाक्टरब- पापा, अहाँ भगवानके माने छिई की ने। (हुसूबागत)
- चन्द्रशि- ने किथए मानरै। हुनकेपव तँ दुनियाँ चले छे।
- डाक्टरब- जखनि अनेक जाति भगवान रा भगवतीक पूजा करै छथि तँ कहाँ कियो कोटा या भ२ जाग छथि रा कियो बाजा भ२ जाग छथि ?
- चन्द्रशि- तूँ जनमन हमरे सीखरै चनरौं।
- डाक्टरब- ने पापा, से रात ने छे। (हुसूकियागत अछि।)
- पिया-पुत्रा केतरौ कारिन भ२ जाए हुदा माए-रौपक आगुमे ओ रँच्चे बहते।
- चन्द्रशि- (प्रसन्न भ२) हँ, आ तोहब कहरँ जागज छे। जे रँसी कारिन बह छे, ओ तीनठाम गूँह मथे छे, पएब, हाथ आ नाकमे।
- डाक्टरब- से सभसँ भ२ सकै छे। अहुँसँ भ२ सकै छे।
- चन्द्रशि- (थिसिखा क२) रँषी, हेब तूँ हूसि बहन छे। हमबासँ हूसन काज ने भ२ सकै छे, ने भ२ सकै छे, ने भ२ सकै छे। रँषी, तोबा डाक्टरब रँनरैमे हमबा की खबच अछि से हमहँषी बूने छी। गुबक मावि धोकबा जने छे। तोबा नोकबीने हमबा मंत्री सहिरक पएब पकड़ए पड़न जे तोबा सामनेक गप छे। आग हमब कहन करैने तैयाव ने छे। रौपक तूँ खरहेनना करै छे खरहेनना खरहेनना खरहेनना।
- मनीषा- (गंभीर हुदामे) रँच्चा, कनी चाह रँनेने आउ।  
(डाक्टरबक प्रस्थान।)
- चन्द्रप्रभा पापा, रँषी डाक्टरब अछि। ओकबापव ओते किथए थिसिखा जाग छिई ? जूग ठीक ने अछि। आ जँ तामसे-पित्त किछ क२ किथए।
- चन्द्रशि- ओहीक डरे हम खानी थिसिखा बहन छी। ने तँ मारैत-मारैत मावि दैतिई आ माष्टिक तबमे गाड़ा दैतिई। हुदा दब-दुनियाँमे अछि तँ एगो।  
माया-मोह घेब नगए।
- चन्द्रप्रभा मम्मी, हमबा नगैए उ केतो हूसि गेन अछि रा हूसएरानी अछि। तँए ओकव एहेन रात होग छे। चाह न२ क२ आरँए दियो। हम चाह पी क२ अँदब चनि जाएरँ। अहाँ ओकबासँ पियाबसँ मनक रात नेरँ।
- मनीषा- हमबा कहते से ? आरँ उ रँच्चा ने ने छे।
- चन्द्रशि- रँषीकेँ माएसँ रँड सिनेह बह छे। अहाँकेँ भेद कहि देत। हमबा पुवा रिसरास अछि।





- (डाक्टवकेँ चाह न२ क२ प्रवेशी । मम्मी-पापारकेँ चाह देली । दनु पवानी चाह पीई छथि । शीघ्र चाह पी क२ कप बखनि । )
- मनीषा- चन्द्रप्रभा मम्मी, हम कनी खरै छी । एक गोबरक हिसारै देखरौक छि ।  
रैस जाड । तारै हम दनु माग-पीन गप-सप करे छी ।  
(चन्द्रशेक प्रस्थान)  
बूछी, पापा नकीबक हकीब छथुन । पहनका गपकेँ बीतिक मेठवी जकाँ  
डये छथुन । खरै ओग मेठवीकेँ डयेमे फेदा ले छै । ग समेक फेड  
छिई । जदी तू खानो जातिसँ रिखाह क२ जेरै छी तू कोनो खनवगन ले  
हेते । खाली नडा का गृगव होग ।  
बूछी, तोवा नजबिमे जदी कोनो गृगव नडा का छै तू राज । हम तोवा  
पापारकेँ समना-बुना क२ कहरनि । खाशी छि जे ओ मानि जेत ।
- डाक्टव- मम्मी छै । तोवासँ की छपेरै खा केते दिन छपेरै । उगन सुकजकेँ  
रादन केते दिन खापि सकेए ?  
पापारकेँ ले कहरीन तू कह छियो ।
- मनीषा- पापारकेँ केते दिन छपेरनि ? रात रैठि गेला पछाति जदी ओ बुनखिन  
तहन तू ओ ओरो खागि रैबुना भ२ जेथुन । तू साँट रात राज । हम  
हनुका मना जेरनि ।
- डाक्टव- कह तू राज होगए । (हसकियाए नगेए । )
- मनीषा- राजसँ काज ले चरतो । डाक्टव भ२ क२ एते राज ।
- डाक्टव- रात कहरी तू तोवा घृणा बुनेतो । ओना हमवा घृणा ले बुनागए खा ले  
छि । हेरौको ले चाही ।
- मनीषा- तू हमरो ओनवारै नगरे । रैसी ओनरोठ नीक ले नगे छै । (थिसिखा  
क२) कहरौक छै तू कह । ले तू तू बुनही खा तोहव पापा बुनथुन ।
- डाक्टव- मम्मी थिसिया ले, कह छियो । (हसकी दैत । )  
मम्मी, हमवा हमवा, दूखन दूखन, से सँ ।
- मनीषा- राज ले, राजक रात ले छिई । जिनगीक रात छिई ।
- डाक्टव- हमवा दूखनसँ नर भ२ गेन छि । (हड ी नुका नगए । )
- मनीषा- दूखन के छिई ?
- डाक्टव- खपन डोमीनक रैष । गंजीनियव छिई । माकती कंपनीमे पैंतानिस हजार  
तनखा परैए । दनु गोरे सँगे गाम एनौ ।



- मनीषा- किछु छै । झुदा छै तँ डोम । केतए बाजा भोज, केतए गणु तेनी ।  
पढा -निथि क२ तँ खनदानक नाक कछेलेँ । तँही कह ब्रौह्ममे डक्ठब-  
गंजीनियब नडा कक खभार छै ?
- डक्ठब- मम्मी, खखने तँ कहनेँ जाति-पाति कोनो चीह ले छिर्षि खा त्रुवन्त गप  
पतर्ष क२ कछ छै जे ब्रौह्ममे डक्ठब गंजीनियब नडा कक खभार ले  
छै । एकब माने तेषा मनमे कठपारी छै ।
- मनीषा- हम की जानए गेतिर्ष जे तँ पढा -निथि क२ एते नीच खसि पड़मेँ ।  
मम्मी छियौ, तँए घष्टेसि नग छियौ । झुदा काज नीक ले केलेँ ।  
जिनगीक हैसना सोचि-समसि क२ नेरौक चाही ।
- डक्ठब- मम्मी, हम रँड सोचि-समसि क२ ग्रा हैसना नेरौँ । खाथिब ग्रा हैसना  
हमरे जिनगीकेँ उगाएत-डुमाएत किने ? से कोनो हम ले बूनेँ छी ?
- मनीषा- तँ नात बूमक्कबि छै किने नात बूमक्कबि ।

**पठाम्केप ।**



## पाँचम दृश्य-

(स्थान- चन्द्रशेक हरेली । दूनु पवानी रैषीक सरिन्धमे रिचाव-रिमर्श क२ बहन छथि । )

- चन्द्रशे- (प्रसन्न मने) चन्द्रप्रभा मम्मी, किछ बहस्यक भाँज नगर की ले ?  
मनीषा- नगर तँ, झुदा२२२ ।  
चन्द्रशे- की झुदा ?  
मनीषा- रँजेरँता गप ले छै । रँड छुसि गेल अछि ।  
चन्द्रशे- से की ?  
मनीषा- कहत तँ नाज होअ । झुदा कहँ ले तँ बुमरँ केना ?  
चन्द्रशे- एते कियो गपकेँ चोखाव । जे बहस्य छै से रँजु ।  
मनीषा- चन्द्रप्रभाकेँ डोमिनक रँषेण दूधनसँ प्रेम भ२ गेल छै ।  
चन्द्रशे- (खाँथि नार-पिखव करैत) अथनि रँजा आनु तँ पाँती-पाँती अही रँतसँ दागि दग छिर्ष ।  
मनीषा- अहाँकेँ कह छेलौं तँ हमव गपक कोनो मोजरे ले दग छेलौं । कह छेलौं, हमव रँषी रँड बुमरँक अछि । आरँ की भेल ?  
चन्द्रशे- हम की जानअ गेलिर्ष जे रिद्यार्थी रँहव पठले जाअ आ छौड १-छौड १क खेत करै । (कनीकान गम् भ२ जाअ छथि । फेव थिसिखा क२ । )  
डक्टैर भ२ गेल तँसँ की ? झुदा हमवा ओहन रँषी ले चारी, ले चारी, ले चारी । जे हेते से हेते । झुदा ओकरा जीख ले देरँ । लोक प्रतिष्ठा लेन हवान अछि । रँड १ कठिनसँ प्रतिष्ठा भेष्टै । तेकरा अ छौड १ माँटमे मिला देलक । कछु तँ, लोक हमवा मानिक कहै आ ओग मानिकक रँषी एना कव ? धनि हम जे उ डोमरा छौड १ अंजीनियव रँनन आ हमरे रँषीपव हाथ फेव देलक । ओछु सावकेँ ले जीख देरँ । ले बहते रँस आ ले रँजते रँसरी । (थिसिखा क२ उठि अन्दव जाअले तैयाव भेला । ) पहिने ओग छौड १क जान लेरँ । तहन ओग छौड १क ।  
मनीषा- हाँ हाँ हाँ हाँ । अंगताड ले । बुषि-रिरेकसँ काज लिख । धैर्यसँ काज लिख । (चन्द्रशे ककि गेला । ) गाडन झुदकेँ किअ उखाड' छी ? ओगपव अँरो माँट दियो ।  
चन्द्रशे- अछुटा, अगो गप कछु तँ उ छौड १ डोमरा गाम एले हेल की ले ?  
मनीषा- हाँ, एले हेल चन्द्रप्रभा संगे ।



- चन्द्रशि- आँगा, लोक देखने छत तँ कि कहत ? अछ्छा, ओग साबने किछ उपए सोचए पड़त ।  
(ब्रह्मानंदक प्रवेश । चन्द्रशि आँखि तान-पीखब करैत ग्राम भ२ रैसन छथि । )
- मनीषा- रैसु रौखा । (ब्रह्मानंद रैसना । )
- ब्रह्मानंद- भौजी, भैयाकेँ रँड तमसाधन देखे दिथनि ?
- मनीषा- हँ, रैषीपव थिसिखाधन छथिन ।
- ब्रह्मानंद- काँ भेलै से ओकरा अरिते-अरिते ?
- मनीषा- अहाँ अप्पन लोक छी तँए कहए पड़त । ओना ओ, सब गप ग्रुप्त बहरौक चाही । केतौ रँजरेँ नै ।
- ब्रह्मानंद- एहनो केतौ रँजत जाग ।
- मनीषा- हमब रैषी रँगबुरेमे मंगला डोमरौक रैषीसँ फँसि गेल अछि । कछ त२२२ केतए ब्रह्मण खा केतए डोम ? कनियोँ मेत खाग छै ।
- ब्रह्मानंद- एको मिसिखा नै । कछ तँ दनु पठन-लिखत छै । तछमे डक्ठब- गंजीनियब । लोक पढ़ा -लिखि क२ ओब रैकुप रँनि जागए । ईसँ नीक थमकथे ।
- चन्द्रशि- रौखा, आरँ काँ हेते ? (शित भ२ क२ । )
- ब्रह्मानंद- एकब किछ काबगब उपए सोचए पड़ते ।
- चन्द्रशि- हमब रिचाब अछि ओग डोमरौकेँ मबरा क२ सिस्से खतम क२ दिई । नै बहते रँसि खा नै रँजते रौसबी ।
- ब्रह्मानंद- ओ कनी रैसी भ२ गेलै । मंगला गबीरँ आदमी छै । उजड़न-उपठन छै । एक्क गो रैषी छै । तेकरा रँड १ कठिनसँ पठ १-लिखा क२ गंजीनियब रँनौक । हमबा रिचाबसँ ओग छोट १केँ कनी रैसी पीषाग देन जाग जे ओकरा मन बहते खा फेब एहन गतती नै कबते ।
- मनीषा- हमबा रिचाबसँ ओ नीक नै हेते । काबण सौसे गाम हनना भ२ जेते । गाम-गाम रात पसवि जेते । तहन आरो अपना सरँक प्रतिष्ठापब पड़त । ईसँ रँटा याँ केस क२ दिथौ ।
- ब्रह्मानंद- नै भौजी, केसमे दनु पीषी पेवाग छै । रैसी मानेरँना पेवाग दै । काबण पुनिसकेँ मान चाही मान । उ रोचावा घब-घवाड १ रँचि रैषीकेँ गंजीनियब रँनौक । सेहो जेहन चनि जाएत । ओकरासँ पुनिसकेँ काँ



भेष्टेते ? किछु ले । दोसब गप उ हविजन छिई । हम जे कहलौं  
पीठैरैना गप, सएह कक ।

चन्द्रशि- ओगमे जदी उ केस क२ देत तहन ?

ब्रह्मानंद- ओह पीठैरै ले कवरै । रचा क२ पीठैरै जे देखाव ले होग आ दोष्ट खुम  
बह । तगमे त्राम-कचहबीस काज चलि जेते । सबपच त त्रामीश होग  
छथि किने । उ ममिना सतष्टया लेखिन ।

चन्द्रशि- तहन केना जोगाव सेष्ट हेते ?

ब्रह्मानंद- जोगाव जोगाव छै । पाँच-सात गोरे चनु ओकवा ईठाम । तीन पवानी  
खुछि । उकठ-पुकठ रात रजरे, गावि-हम्ममति देरै । ओगपव कनिया  
ले कनियोँ थिसियाएत । तहीपव धुगन देरै । नगड १ हँसेनाग त अपना  
हाथमे छै ।

चन्द्रशि- रैस त खहाँ जाउ चावि-पाँचठा खचव छौड अकेँ रजेने आउ ।

ब्रह्मानंद- ओकवा सभकेँ किछु मात्र-पानी दिख पड़ छै ।

चन्द्रशि- से लिख । (एकठ पाँचसोखा जेरिस निकालि क२ चन्द्रशि ब्रह्मानंदकेँ सिकरै  
पीरैए नगैत । ) (ब्रह्मानंदक प्रस्थान । )

आग साबकेँ रापस भेष्ट करै । साबकेँ कनियोँ आथिमे पानि ले जे ओही  
मानिकक किबपास हम गंजीनियव रैनलौं आ हुनके रैष्टीपव हम केना हाथ  
होरे छिई ।

(ब्रह्मानंदक सर्ग नरेश, भद्रशि, उग्रेश, सुरेश आ महेशक प्रवेश । छुओ  
निसाँमे चुब खुछि । )

ब्रह्मानंद- चनु भैया । आग साबकेँ छठी बातिक दुष रोकैरै । रड आगि झुतेए  
साव ।

चन्द्रशि- चले चनु । (चन्द्रशि ब्रह्मानंद, नरेश, भद्रशि, उग्रेश, सुरेश आ महेशक  
प्रस्थान । हेव मनीषाक प्रस्थान । खन्दवमे मंगल आ मवनी अपन रैष्टीसँ  
गप-सप क२ बहन खुछि पर्दा उठैए । तीनु पवानी आगु रँटा जागए ।  
हेव पर्दा खसैए । )

मवनी- रौंखा, हम त तैवा कालि चिन्हरो ले केरियो ।

मंगल- हमरुँ खचकाएले बहि गेलौं । जखनि गवसँ देखलौं तँ रूमनिई हमरे  
रौंखा छी । एतने दिनमे केना एहेन भ२ गेलही ?

गंजीनियव- एतुक्का पानि आ ओतुक्का पानिमे रड खँतव छै । शुक्रमे ओतुक्का पानि हमरो  
ले नीक नगै छन । रादमे नीक लागए नगर । सभ पानिक कमार छी ।



- मवनी- नोकरी-तोकरी भेलौ की नै ?  
गंजीनियब- भेलौ की ।
- मवनी- केते महिना कमाग छिती ?  
गंजीनियब- माए, तौवा सरहक खसिवरादसँ पैंतातिस हजार महिना कमाग छियौ ।
- मवनी- एतही तँ राडक हाथमे पाग कहाँ देतही ?  
गंजीनियब- बखने ि छुई । आग दह देरनि ।
- मंगल- आरौ घबपव पियान नै देरही तँ केना हेते ? आरँ तँ हकीम भेलही ।  
कए आदमी एते-जेते तौवा गर । की कहे जेते ?  
गंजीनियब- से तँ ठाके । केते नीक ठाम जमीन भँजियाड । हम पाग पठा देर ।  
अहाँ जमीन कीनि ओगपव रँटा याँ घब रँना लेर । राड, अहाँ ग काज  
छोटा दियौ आरँ ?
- मंगल- से किअ रौखा ? अपन काज करेमे कोन हवजा ?  
गंजीनियब- से हवजा कोनो नै । झुदा अहाँ सभकेँ उमेव रँसी भँ गेल । लोक की  
कहत जे गंजीनियब भँ कँ माए-रौपकेँ खँरै छै ?
- मंगल- रौखा, रँसावी भँ जाएरँ तँ मन आ देह असोथकित भँ जाएत । बग-  
रिबगक रँसावी हएत । तगसँ सभ पवानी परेशान बहरँ ।  
गंजीनियब- गहो गप तँ कँरँना नै अछि । तँ एगो हएत जे कोनो धँधे थोति देरँ  
आ ओहीमे नगर-भँडन बहरँ । अपन काजमे काज किअ ? झुदा उमेव  
भेने हन्रको काज भारी भँ जाग छै । रँस काँटि कनहापव आनरँ से  
आरँ अहाँ रँते पाव नै नगत ।
- मंगल- ठके छै । कोनो धँधे थोति दिहँ ।  
(चन्द्रशि, सभ कियोक प्ररेशी । गंजीनियब रँवसीपव सँ उठि गेलथि । मंगल  
आ मवनी सेहो उठि गेल । )
- गंजीनियब- मानिक प्रशाम । (चन्द्रशि गूम छथि । )  
रँसन जाड, मानिक सभ । गरीरँ आदमी देरँ रँवरँवि ।  
(मवनी खन्दवसँ चँगा आनि रिँडा देलक । )
- मंगल- मानिक सभ प्रशाम । आग केमहव सुकज नगलौ हन ? रँस जाग जाड,  
मानिक सभ । (कियो नै रँजे छथि । )
- चन्द्रशि- (थिसिआ कँ । ) मंगला, पहिने तँ अपन रँषाकेँ पूछ-की केनको हन ?  
मंगल- की केनही मानिककेँ ?  
गंजीनियब- हम कहाँ किछ केनियनि मानिककेँ ?



- ब्रह्मानंद- मानिकके नै, मानिकक रैषीके ?
- गंजीनियब- से मानिक, खपन रैषीके पुछथुन जे ककब दोथ ?
- ब्रह्मानंद- केकरो दोथ छै ने बड ?
- गंजीनियब- प्रेमसँ केकरो दोथ नै होग छै । जेतए प्रेम छै तेते अश्रिव छै ।
- नरेशि- हमछँ एतए एकवा माएसँ प्रेम कवरै । तँ अश्रिव बहते ने ?
- ब्रह्मेशि- खथनि प्रेमसँ तोवा रौपक झूठपव दु चष्ट दिई । तँ अश्रिव बहते किये ?
- उग्रेशि- प्रेमसँ केरो रँहुके न२ क२ भागि जाग । तँ अश्रिव बहते किये ओतए ?
- सुरेशि- हम तोवा रँहिनसँ रिखाह क२ न्हेरौ । तँ अश्रिव बहते की नै ?
- मंगल- मानिक सभ, अहाँ सभ एना किअए रँजे छिई अर्ब-रँब रँताह जकाँ ।
- महेशि- जखनि हम सभ रँताहे छी तखनि हवामी रँचा गंजीनियबराके दु चष्ट दिई तँ केहेन मन हेते साबके ।  
(महेशि कहत मातव गंजीनियबके दु चष्ट गानपव रँसा देनक । सभ कियो ब्रह्मेशि गेन । चन्द्रेशि आ ब्रह्मानंद ठाढ़ छथि । मवनी हमवा रँषीके मावि देनक मावि देनक टिछिआ बहन अछि । गंजीनियब रँहेशि भ२ खसि पडन । तेयो मानाग नै छोड' जागए । रँटा याँ जकाँ मावि भ२ बहन अछि । )
- चन्द्रेशि- मंगला दुनु पवानीके छोडा दग जाही । एकवा सरँहक कोनो दोथ नै छै । (दुनु पवानीके कियो ने मारे । गंजीनियब मवनासन भ२ गेन । )  
आरँ हवामीके छोडा दही । साबके कनियोँ दिमाग हेते तँ आरँ एहेन काज केतो नै कबत । हवामी रँचा, जही पातमे खेनक ओही पातमे छेद केनक । (सभ कियो छोडा देनक । सभ हकमि बहन अछि । )
- महेशि- रँकारे मारे जाग गेनही । साब अही रँतुथे मवि जेते । आरँ हमवा एकवापव रँड दया अरँ छै ।
- चन्द्रेशि- मवए दही, हवामी रँचाके । खपना सभ चले चन ।  
(सातो गौष्टेक प्रस्थान । )

पश्रकप ।



## छात्र दृश्य-

- (स्थान- मंगलक घब । मंगल आ मवनी चिन्तित क्रममे रैसन छथि ।  
गंजनीयब रोगी जकाँ रैसन छथि । )
- मंगल- रौंथा, काल्हि एना किछ भेलै, से किछ नै बुझ सकनिई ? की केने छेवनी हुनका ?
- गंजनीयब- हुनकर रैषीसँ हमरा प्रेम भइ गेलै ओब कोनो रात नै ।
- मवनी- ओ नीक रात तँ नै भेलै । उ खीर छथिन आ खपना सब डोम । उ रँड खमीर छथिन आ खपना सब रँड गरीर छी । खपना जातिमे नडा की नै छै जे तँ ओते ऊँच जातिमे पैसेरौं ।
- गंजनीयब- माए, प्रेममे ऊँच-नीच नै देखत जाग छै ।
- मवनी- हो दूखन रौंउ, उ जे खपना सबकेँ एते मवतक हेल से हमब रिचाब खडि जे खाना जाग आ तोहब की रिचाब ?
- मंगल- कक, हम कनी मणिकांत मानिककेँ रजेने खरै छी । एहेन तबतक कोनो काज रिना सोचने-रिचाबने नै कवरौक चाही । तँ दू माग-पूत गप-सपू कब आ हम खरै छी । (मंगलक प्रस्थान । )
- मवनी- तँ जे कहनिही प्रेममे ऊँच-नीच नै देखत जाग छै, से किछ ?
- गंजनीयब- काबण खान्हब होग छै ।
- मवनी- लोक प्रिया-पुतारकेँ खहीने पढ़रै-लिखरै छै ?
- गंजनीयब- नै माए, प्रेम क्रुथेमे होग छै । प्रेमक कोनो सीमा नै छै ।
- मवनी- ईसँ केदा की छै ?
- गंजनीयब- ईसँ मानरता खरै छै । ऊँच-नीचक भेद-भार हठै छै । रँडका-छेष्टका एक हेते । तर समाजक विकास हेते ।
- मवनी- एकब चिन्ता तोरे किछ छै ?
- गंजनीयब- जारै एकब चिन्ता केकरो हेते नै आ उ रौंउ । उठैते नै तारै समाजक विकास केना हेते ?
- मवनी- रौंउ । उठैरैक हल भेष्टनौ । रँडा याँ भेलै नै ?
- गंजनीयब- कोनो रौंउ । उठैरैरैतारै ओ सब परेशानी मेनलै पड़ छै । महात्मा गांधीकेँ देशे स्तंत्र कवरैमे कोन-कोन परेशानीक सामना कब पड़नि । (मंगलक संग मणिकांतक प्रवेश । )





- मानिक प्रशाम । रैसन जाड । (गंजनीयब रुवसीपव उठि निचचाँ रैसनथि आ मणिकांत रुवसीपव रैसना । )
- मणिकांत- कह रौथा, एना किथए भेलौ ?
- गंजनीयब- चन्द्रशि मानिकक रैष्टी आ हम रँगनुबमे बह छी अपन-अपन डेवामे । दुनु गोष्टे एक दिन अचानक पार्कमे मित गेलौ । गप-सप्प भेल । डुहो प्रेम सरनपी नै, एकदम सामान्य । तू की करै छै तू तू की करै छै ? हेव हम अपन डेवा चलि गेलौ ।
- दुव दृष्टि बहने एक दिन उ हमवा डेवापव पहुँच प्रेम सरनपी गप-सप्प कबए नगरी । हमहुँ दुव दृष्टिक आदव करैत ओकवा हँ कहि देनिष ।
- तेकरे सजा हम भोगि बहन छी । अस्मन गप अहए छै ।
- मणिकांत- रात बुना गेल । तौवा सरहक रात बुनए रैना समाज अथनि नै भेलौ हेल । बसे-बसे हेते । तू सब जाति-प्रथाके तौडक दृष्टि बथि अ काज करै जाग गेलौ । की हमव अनुमान गत छै ?
- गंजनीयब- हण्डेड पवसेन्ष्ट सत्य । अपने सब रँड अनुभरी छिष । अही सब जकाँ जौ समाजक कर्णभाव हूअ तू समाजक आशीतीत कन्याण हएत ।
- मणिकांत- तू सब भविसक रँडका यानी उँच आ छेष्टका यानी नीचके एक करैक पवियस क२ बहन छिही ।
- गंजनीयब- जी, जी । नष्टे, अपने अंतयामी होग ।
- मणिकांत- नै नै । अंतयामी तू अश्रिब छथिन । समाजक जे समस्या देखे सुने छी आ अनुभर करै छी । तग अभावपव रँजलौ । मंगल, एकवा सरहक पवियस एकठ पेंघ रँड । छै उ रँड । भविसक नेन नीक छै । आरँ की कह छह से कहह ।
- मंगल- मानिक, दुखन माएक रिचाव छै जे थाना जाग । अहाँक की रिचाव ?
- मणिकांत- हमवा रिचारे थानक चक्रवमे नै पडह । गवरँ आदमी छह । हवान-हवान भ२ जेरँह । उ सब पागरना छै । सबके जहन थष्ट देतह । उचित-अनुचितक हेलसना होगमे रँड समए नष्टे छै । उजडन-उपष्टन छह । कनी रँदशि क२ क२ चनन । समाजेमे सबपच सहरँस हेलसना कवा नैह । डुहो रँड अनुभरी छथि । एम.ए.एन.एन.री. छथिन । तँ ने अपन वामनगव पचागतमे निरिरोष चुनन गेलथिन । दुध-पानि रैवरैक उद्धृत म्मता हुनकामे छन्हि । अपन पचागतक टी.एन.सेशन छथिन ओ । ईसँ आगु तौवा सरहक अपन रिचाव ।



मर्गत- मानिक, हम अपनेके सभ दिन मानैत बहलौं था मानैत बहरै । अपनेक देखाएन बस्तापब चनलौं । तँ रैखा, आग गंजीनियब थडि । हम अहाँक कहन अरैसुस कबरै ।

मणिकारत- तहन कालि पचेती कवा लेह ।

मर्गत- रैस मानिक । रूदा पचेतीमे अहाँ बहरैषा कबरै ।

मणिकारत- रैस, कालि अरैसुस बहरै । अथनि जाए देह । (मणिकारत दासक प्रस्थान ।)

मर्गत- दुखन माए, आरै कालि देखही की होग छै ?

**पठाम्फेप ।**



## सातम दृश्य-

- (स्थान- गामक मिडिन सुकूनक । पंचैतीक तैयाबी । सुकूनपव मंगन, अंजनीनियब, बरीया आ मणिकांत उपस्थिति छथि । )
- मणिकांत- की हो मंगन, नख रँजेक समथ छेलै आ साठे नख रँजि बहन छट्टि ।  
अथनि धवि ओ सभ कहाँ कियो एता । सबपच सहैरँ सेहो नै पहुँच सकना । )
- मंगन- कहने तँ छियनि आ हुनो कहने छथि जे अरँसूस आधरँ ।  
(सबपच सहैरँ-मोतीनानक प्रवेश । सभ कियो उठि गेना । प्रशाम-पाती भेन । मोतीनान कबसीपव रँसना । मणिकांत सेहो कबसीपव रँसना ।  
मंगन, अंजनीनियब आ बरीया निचुँचामे रँसना । )
- मोतीनान- मंगन, हम अदहा घँषा जेठ छीख से हमबा माफ कबिहथ । की कबरँ, रँड हागन बह छै । हुँहुँनमा रँकबीसँ उनठे कतम थिआ नेनके आ कतमरँनारँके मावरँ केनके । तहीक पंचैतीमे देवी नगि गेन ।  
ओग पाँषाँके नै देखे छिँ ।
- मंगन- की जानए गनिँ, ओ सभ किअए नै आधन ?
- बरीया- भैया बौ, नै बूने छिहिन चोब केतो अजेत सहए ।
- मोतीनान- केतो किछ नै रँजि दी । अरिंते हेता । कोनो जकबी काजमे रँमि गेन हेता ।  
(चन्द्रशे आ ब्रँह्मनंदक प्रवेश । प्रशाम-पाती भेन । दनु आदमी कबसीपव रँसना । )
- चन्द्रशे, रँड देवी भेन ?
- चन्द्रशे- ब्रँह्मनंदक पनीके रँचा होअरँना छै । पनीके अस्पतान पठरँक जोगाबमे अ नागन बहथि । कह छना, हम अस्पतान जाअरँ । हम हिनका जरँबदस्ती अननियनि ।
- मोतीनान- हिनका नै अनक चाही अहाँके । काबण हिनका कोन जकबी हेतनि कोन नै । आथिब पति छथिन नै ?
- चन्द्रशे- ठीक छै हिनका जन्दीए छोडा देरँनि ।
- मोतीनान- चन्द्रशे रँवू, ओब कियो एता अहाँ दिसक ?
- चन्द्रशे- कहने तँ कएक गोठेके छियनि । रुदा ओगमे जे सभ अरँथि ।



- बरीया- सबपट सहरि, उ ग्रंडा साव सभ कहाँ एने जे हमबा भैया-भोजी आ  
भतीजाकेँ अघमोगति कइ माबनक ?
- मोतीनार- चुप बूबरक, पचेतीमे लोक अष्ट-सष्ट ने रजे छै ।
- बरीया- हँ यौ सबपट सहरि (झडी डोना कइ) हम डोम छी, छेष्टका छी तँ रड  
बूबरक आ जे हमबा घब पैस हमबा सभकेँ माबनक-पिठनक से रड  
कारिन ।
- मोतीनार- ने रौआ, से रात ने छै । असम रात ग छै जे कर्म ग्णेशे लोक  
बूबरक-कारिन होग छै ।  
(बामानंद, धर्यानंद, चन्द्रकांत, उमाकांत, शोभाकांत आ अनंद नावायणक  
प्रवेशे । सभ कियो प्रणाम-पाती कइ निच्छामे रैसना । )  
उब कियो एता, चन्द्रशि राँ ?
- चन्द्रशि- आगरौ सके छथि । तारे पचेती शुक कक । रड जेष्ठ भइ बहन अछि ।  
अछुकेँ रड हागर बैहए ।
- मोतीनार- आरि पचेती शुक कएन जाए ?
- सभ कियो- जी, कएन जाए ।
- मोतीनार- मंगन, तँ पचेती किअ रैसेनक ?
- मंगन- चन्द्रशि मानिक हमबा सभ पवानीकेँ पाँचठौ ग्रंडासँ पठिरोनथि आ अपने ठाठ  
बहथि । हमब रैठकेँ अथनि धवि होशि ने अछि । पकडा कइ अनरौ  
हेन ।
- मोतीनार- काँ यौ चन्द्रशि राँ, ठीक रात छिई ?
- चन्द्रशि- रिनहन ठीक अछि । झुदा, मंगनासँ पुछियन जे ओकब रैठ हमबा रैठसँ  
प्रेम करै छै । से किअ ? अँ यौ सबपट सहरि, धनि हम जे आकब  
रैठ पढा -लिथि कइ गंजीनियब रनि सकन आ से हमबे रैठपव हाथ फेब  
दिअए ।
- मंगन- सबपट सहरि, हिनका पुछियन जे हमबा रैठकेँ गंजीनियब रनेमे केते पाग  
अपना दिससँ मदति केनथिन । हँ एगो ग्ण ने रिसवरनि जे रैठपव किछ  
समान नइ कइ जाग छेनियनि तँ उचित सँ रड कममे जकब नइ नग  
छेनथिन ।
- चन्द्रशि- हम तँ उचितसँ रैसी दग छेनिई । झुदा एकबा कम बूनाग छेलै । तहन  
हमबा अँठाम किअ अरै छन ?
- मंगन- हमब पसावी छथिन आ गामक माँ नक छथिन तँए ।



- मोतीनात- खहाँ सभ ङा डकठा-पैठी छोट्टा जाग जाड । मंगल, तोबा रैषीसँ प्ठे  
छिख जे उ हिनका रैषीसँ प्रेम करे छे की ले ?
- गंजीनियब- जी करे छिई ।
- मोतीनात- चन्द्रशेक रैषी तोबासँ प्रेम करे छह की ले ?
- गंजीनियब- ङा जरार हिनकब रैषीसँ नेल जाए श्रीमान् ।
- मोतीनात- चन्द्रशे, अपन रैषीके रजाएन जाए ।
- चन्द्रशे- ब्रह्मानंद खहाँ घब चलि जाड । बूँचाके किनको सँगे जल्दी पठा देरँ आ  
खहाँ खसपतार चलि जाएरँ ।
- ब्रह्मानंद- रैस हम जाग छी । (ब्रह्मानंदक प्रस्थान । )
- चन्द्रशे- सबपट साँहरँ, कछ तँ, केतए ब्रह्मा आ केतए डोम । जमीन खसमानक  
हबक छे । हमब प्रतिष्ठा आ मंगलक प्रतिष्ठा दनु कहियो एक बग भ२  
सकेए ? डोम आ ब्रह्मामे रिखाह केकरो सोहेते ? तगमे हमब  
जातिमे केहेन लगते । उ सभ हमबा जीख देता ? जाति प्ररँन होग  
छे आ प्रतिष्ठा रँड ी कठिनसँ भेष्टे छे ।
- मोतीनात- खच्छा, रैषीके खरँए दिखनु । स्थिति-पकिस्थिति करुमरँ तहन ले कोनो  
निष्कर्ष निकरत । ओना खजूक समाजक जे रैरस्था छे, तगमे खहाँक  
कहरँ ठीक छि । ममिना तँ खहाँ आ मंगलरँना ले छे । खहाँ दनु खदमी  
समाजक रैरस्था बूँषे ठीक छी । ह्दा दनुक रैषी-रैषीमे कोन तबपेस्की  
छे, से तँ दनु प्रत्यक्ष हएत, तहने बूमरँ ।  
(डकठब आ डकठबक पितियोत रँहिन डमक प्ररेशे । दनुके मोतीनात  
हबसीपब रैसक खदेशे देरनि । दनु हबसीपब रैस गेली । )  
बूँचा, खहाँ आ दूखनक रीच कोनो सरँनष छि ?
- डकठब- जी, उ हमब प्रेमी छि ।
- मोतीनात- एकतबहा आकि दूतबहा ?
- डकठब- दूतबहा । कोग केकरोसँ कम ले ।
- मोतीनात- तहन ओग रोचावार्के किख पीठरौनिई ?
- डकठब- (खकचागत) हम, ले तँ, ले, हमबा किछ ले बूमन छि ।
- मोतीनात- की दूखन, रात सत्य छिई ? हाथ एकरे भ२ सके छे ?
- गंजीनियब- रात तँ रिक्कर सत्य छे । ह्दा चन्द्रप्रताक हाथ ले भ२ सके छे, ले  
भ२ सके छे, ले भ२ सके छे ।  
चन्द्रशे मानिकक प्रत्यक्षक घटना छी ।



डकूँब- हमव पापा एहेन घट्टिया काज केनथि, एहेन घट्टिया काज केनथि, एहेन घट्टिया काज केनथि ? नीक ले केनथि, नीक ले केनथि, नीक ले केनथि । (खचेत भ२ खसि पड' छथि । चन्द्रशेक समांगि चन्द्रप्रभामे नगि जाग छथि । दुखन चन्द्रप्रभाक झूठपव अपन रौपक गपछासँ होकेए नगै छथि । चन्द्रशे दुखन आँथि नान-पीथव क२ बहनए । उमा पानि आनि आकव झूठ पोछैए । कनीकान पछाति चन्द्रप्रभा होशिमे एनी । की भेलै, की भेलैक हनना शीत भेल । )

मोतीनार- बूँचरी, आरँ ठीक छी ?

डकूँब- (झुड़ १ डोना क२) हँ ।

मोतीनार- किछु ओव सरानक जरारँ द२ सकै छी ?

डकूँब- जी, रँदा याँ जकाँ ।

मोतीनार- अहाँकेँ ओना किथए भ२ गेल छन ?

डकूँब- ग्रा घटना जे हमव पापा दुखावा कएन गेल, हमवा एक्का बन्नी पसीन ले । हमव दिन ओकवा रँवदास ले क२ सकन ।

मोतीनार- अहाँ सब डकूँब-गंजीनियव छी । जातिक रा आर्थिक दृष्टिसँ रँवत डूँच-नीच छी । तएमे प्रेम किथए भेल ?

डकूँब- श्रीमान्, प्रेममे जाति-पाति रा अमीव-गरीर ले देखन जाग छै ।

मोतीनार- किछु उदेस अछि की ?

डकूँब- रँड पैघ उदेस अछि । रँड पैघ रीड १ अछि ।

मोतीनार- की उदेस अछि ?

डकूँब- जाति-प्रथाकेँ खतम केनाग ।

मोतीनार- दुखन, अछूँक किछु उदेस अछि ?

गंजीनियव- जी, अरँस अछि । डूँच-नीचकेँ एक केनाग ।

मोतीनार- रौत रूँना गेल । ग्रा सब अही दुखारे प्रेमक दुनियाँमे पएव देनक हेल । आरँ अगिला कार्यक्रम की अछि ?

गंजीनियव- अगिला कार्यक्रम हमवा सरँक रँखाह अछि ।

मोतीनार- की बूँचरी, अहाँकेँ ग्रा उचित रूँनागए ?

डकूँब- उचिते ले, महा उचित ।

मोतीनार- की चन्द्रशे रौँ ? अहाँ किछु ले रँजे छी ?

चन्द्रशे- की रौँजी, किछु ले फूँगए ।

मोतीनार- बूँचरी अहाँ आ दुखन अपन-अपन घब जाड ।



(डाक्टव, उमा आ दुखनक प्रस्थान । )

चन्द्रशि रौरू, ममिना रूड गडरूड खडि । ग्रा सभ ले मानेरना खडि । एकवा सररूक सर्ग कोनो पबियास काज ले कबत । रेकाबमे रेज्जति रूत । कानुनो एकरे सर्ग देते ।

चन्द्रशि- किडु हेते, हम एकवा ले मानरू, ले रूवदस क२ सकरू ।

मोतीनार- तहन पचेतीक कोनो महत ले । सह ले ?

चन्द्रशि- ले, महत तू रूड छे । अपने रूजूआ छिर्, रूड खनभरी छिर् । उचित हैसना कबिणु ।

मोतीनार- देखियो, हम तू अपना भवि उचितोचित हैसना कबरू । पार्थीके पीक नगे रा अपना, ओगस हमवा कोनो मतनरू ले ? की हो मंगन, तोहव की रिचाव ?

मंगन- मानिक, नख कबिर् आकि छुख कबिर् । सभ मंजुव ।

मोतीनार- खरू हम हैसना देमए चाहे छी । ई रीचमे किनको किडु राजरूक खडि तू राजि सके छी ।

(कनीकान किओ किडु ले रूजे छथि । )

अथनि धवि अहाँक हैसना सवाहनिय बहन खडि । अहाँपव सभके रिसरास छन्हि ।

चन्द्रकांत- अहाँक हैसनामे दुध-पानि रेवा जागए । अहाँक हैसना जे कष्टत, से दोथा भ२ सकेए ।

बरीया- अहाँक हैसना ले लोक केतए-केतएसँ अरैत बहए । रिना कावणे छिँही ले नगे छे ।

मोतीनार- तहन हमव हैसना सुने जाग जाड ।

जाति एक्कठा खडि, मनुख जाति । रैत्रानिक लोकनि एकवा होमोसेपिअन्स कह छथि । हम सभ अपन रचस्र नेन जाति अलग-अलग रनरै छी

जेगमे अपन-अपन सरार्थ नेन हविदम नगड होगत बहए । जाति-प्रथार्स मानसिक तनार रूटए आ समाजक विकास ककेए । कर्मक प्रधानता छे ।

कर्मसँ उँच-नीच होग छे । जग मनुखक कर्म नीक छन्हि, ओ गुणगव छथि, ओरु उँच छथि । गुणक प्रधानता बहक चाही । डाक्टव आ गंजीनियबक सोच

उँच छन्हि । तँ दनुक प्रेमके हम सर्गत करै छथिनि । सहर्ष दनुक रिखाह हेरूक चाही ।

(थोपवीक रूँडाव भ२ बहन खडि । )



झुदा रिंखाहोपवांत दुनुक सरिन्ध बाय-सीता जकाँ हुंथ। तिथो-हेँको पेन जकाँ नै। (थोपवीक रौंछाव भेन।)

धनिक लोक यानी ऊँच लोक गरीब लोक यानी नीच लोकक पविश्रिमसँ ऊँच होग छथि। रँदनामे उ गरीबक शोषण करै छथि। ग्रा मानरताक रिकछ भेन। हमबा रिचारे ऊँच-नीच दुनु एक-दोसबक उपकावकेँ मानथि आ अपन-अपन अपिकाव-कवतरमे तिराँपी नै कवथि। तहन समाजक विकास सँभर हएत। (थोपवीक रौंछाव भेन।)

मंगल दुनु पवानीकेँ चन्द्रशि पीठरैतथिन। ग्रा हिनकव गतती भेननि। ई प्रेम प्रसंगमे मंगल दुनु पवानीक कोनो दोथ नै छन्हि। ई गतती लेन चन्द्रशिकेँ जूमना लगतनि।

(थोपवीक रौंछाव भेन। चन्द्रशिक झुडी निच्छाँ भइ जाएथ।)

बरीया- सबपट साँहरँ, पीठेती खतम भइ गेल नै ?

मोतीनार- नै कनी ओव छै।

बरीया- कनी जल्दी कवियौ। हमबा कनी पोथवि दिस जाएक थछि।

मोतीनार- तँ पहिने पोथवि दिससँ भइ आरँह। तहन पीठेती सुनिहथ।

बरीया- साव सभकेँ ओकागत बँह छै नहियेँ आ प्पुडी-जिनेरीक भोज कवत। सडनाहा डनडामे प्पुडी छानत तँ कमो-समो थाएरँ तँ पेष्ट खबारँ हेरै कवत। अहाँक पीठेती सुनेमे रँड नीक लगै छै। जापवि रँवदाशि हएत अरँसुस सुनरँ।

मोतीनार- देखिहथ, धोतीमे नै भइ जा।

पीठेतीमे उपस्थित मंगलभारसँ हमब आग्रह जे हमब हँसनापव जदी कियो छिपपणी कवता हुनका हम सुगगत कवरँनि।

बरीया- सबपट साँहरँ, हमबा कहनिई कनी ओव दै, से कहाँ कहनिई ? ओग दुखारे हम पोथवि दिस नै जा बहन छी।

मोतीनार- हँ, जूमना की केना लगतनि ? से छुँलै थछि आ हँसनाक कागत रँनेनाग छुँलै थछि।

किनको कोनो तबहक रिरोध रँकत कवरँक हुंथ तँ रँचिक रँकत कवी। (सभ कियो गूम बँह छथि।)

की चन्द्रशि, अपनकेँ ग्रा हँसना मान्य थछि ?





चन्द्रशि- (कनीकान गृह्य भ२) बहरँ तँ समाजेमे । जदी संपूर्ण समाजकेँ मान्य छन्हि तँ हम केना कही जे हमबा अमान्य छ्दि । हमरो मान्य छ्दि । (झुड़ १ नुका नग छ्थि । )

मोतीनार- तहन रिंखाहक की केना कबरँ ?

चन्द्रशि- अपने जे जेना कहिँ ।

मोतीनार- मंगल, तँ रिंखाहकेँ की केना कबरँहक ?

मंगल- हम किछ्छो नै राजरँ, सबपच सहँ । अपने सरँहक रिचारे रिचाव ।

मणिकार- श्रीमान्, अपने जे कहँ, ओकर आदर सब क्रियो कवता ।

मोतीनार- तहन हमब रिचाव छ्दि जे डाकूँव-गंजीनियबक रिंखाह आगए, अथनि आ एतुँ भ२ जाए ।

(थोपवीक रौंछाव भ२ गेल । )

दूनु पक्क तकोर कम-सँ-कम खर्चमे निमहि जेत । भोज-भात

रिंखाहोपरान्त करै जाग जेत । (थोपवीक रौंछाव भेल । )

झुदा एकठाँ आरशयक रात चन्द्रशि राबूँकेँ कहए चाँ छियनि । ओ ग्रा जे गृणगव रँषेँकेँ गृणगव रँव भेँठननि तँए डानीमे एककण्ठा रँस-डीह दिख पड़तनि ।

(थोपवीक रौंछाव भेल । )

ओव जूमनिामे ओगपव काज चलैरँना घब रँनारँ पड़तनि । (थोपवीक रौंछाव भेल । )

गोव नगाँगमे अपन जमाँकेँ जे देखुन रा नै देखुनहम किछ्छ नै कहँनि । की चन्द्रशि, मनोमान छ्दि किने ?

चन्द्रशि- श्रीमान्, जागतो गमेरँ, सुखादो नै पेरँ ।

मोतीनार- असमर सुखाद तँ अहाँ पेरँ । योग्य रँषेँकेँ योग्य रँव भेँठननि । ग्रा सबसँ पैघ सुखाद भेल । दोसब समाजमे मानरता एतुँ । डुहो सुखाद कम नै रँुनियो ।

चन्द्रशि- जे कहिँ अपने ।

मोतीनार- ओपचारिक तौवपव एगो कागत रँनेनाग आरशयक छ्दि जे दूनु पक्ककेँ समेपव काज आरँ ।

(मोतीनार कागत लिखनि । दूनु पक्कसँ हस्ताक्षर/निशान लेनि । किछ्छ गराहक हस्ताक्षर/निशान सेहो भेल । एक प्रति कागत चन्द्रशिँकेँ देनि आ दोसब प्रति मंगलकेँ देनि । )



- दनु पम्क रिखाहक तैयावी कक । चष्ट मंगनी पष्ट रिखाह ।  
(मंगल आ चन्द्रशेक प्रस्थान । )
- जापवि समाजमे ङ सभ परिवर्तन नै हएत तापवि समाज पढुआएन बहत ।  
आ समाजे पढुआएन बहत तँ देशे कहियो आगु नै रँटि सकैए ।
- बरीया- सबपट सहरि, आरँ रँवदशि नै हएत । कनी अरँ छी पोखवि दिससँ । चाह-  
नाशिता हमरोने बहए देरँ ।
- मोतीनार- जा, जलदी आरँह । (बरीयाक प्रस्थान । मंगल मवनी आ गंजीनियबक  
प्रवेशे । चन्द्रशे आ ज्ञानानंदक प्रवेशे । चन्द्रशेक पम्कमे चाह-पान-जनथेक  
जोगाव अछि । डाकूठक संग उमा, आ चावि-पाँचैण दाग-मागक प्रवेशे ।  
रँव-कनियाँ कबसीपव रँसतथि । )
- चन्द्रशे- चन्द्रशे रौरँ, आरँ अपने सभ अगिना कार्यक्रम देखियो । हमवा चतरौक  
आज्जा देन जाए । कबीमनगव जेरौक अछि पँचैतीमे ।
- चन्द्रशे- ङ नै भ२ सकैए । अहाँकेँ बँह पडत ।  
(पवमानन्द आ पृष्णानंदक प्रवेशे । )
- मोतीनार- जदी हमवा बँह पडत तँ जे कवरँ से जलदी कक ।
- चन्द्रशे- ज्ञानानंद, जनथे चनाड ।  
(ज्ञानानंद, पवमानंद आ पृष्णानंद जनथे चना बहन छथि । खेव पानि  
चनन । चाह चनन । बरीयाक प्रवेशे । )
- बरीया- सबपट सहरि, हमरो ने छे आकि सपि गेलै ?
- मोतीनार- तँ रँड देवी नगा देवकक । नगैए सपि गेल हेते ।
- बरीया- अँध यौ, भवि मन पोखैरो दिस नै केरौं आ नशिते छुष्टि गेल । एहने  
रँरसथा ?
- मोतीनार- चन्द्रशे रौरँ, एगो जनथे छुष्टि गेल अछि ।
- चन्द्रशे- के छुष्टन छथि ?
- बरीया- हम छुष्टन छी ।
- चन्द्रशे- ज्ञानानंद, बरीया जनथेमे छुष्टन छथि ।  
(पवमानंद बरीयाकेँ जनथे देननि । आगते-आगते कछमङ्गागत धौतीक  
ठेका पकडि बरीयाक प्रस्थान । )
- मोतीनार- चन्द्रशे रौरँ, आरँ रँड देवी भ२ बहन अछि हमवा । अगिना कार्यक्रम जलदी  
कएन जाए ।
- चन्द्रशे- जनानी सभ, जयमारा कवरँ जाग जाड ।



ब्रह्मानन्द, अहाँ सभ पान चनाउ ।  
(जनानी सभ जयमाता कवरै छथि । ब्रह्मानन्द पवमानन्द आ ध्रुवमानन्द पान  
चनरै छथि । जयमाता भेन । थोपरीक रौद्राव भेन । बरीयाक प्रवेशे ।  
चन्द्रशि-मंगल आ ब्रह्मानन्द-बरीयामे हूँठा-हूँठा समधी मिनन भेन । थोपरीस  
सभा गुंजि बहन अछि । रँव-कनियाँ श्रेष्ठ जनकेँ पएव छुरिँ प्रणाम  
केननि । सभ क्रियो असीवराद देतथिन । रँव-कनियाँ दर्शिककेँ कब जोड़ा  
प्रणाम क२ बहन छथि । )

पठाक्षेप ।

अति शुभम् ।

ई कनापव अपन मतर [ggaj\\_endr\\_a@videha.com](mailto:ggaj_endr_a@videha.com) पव पठाउ ।

विदेह नूतन अंक गद्य-पद्य भावती

१. मोहनदास (दीर्घकथा):लेखक: उदय प्रकाश (मूल हिन्दीसँ मैथिलीमे अनुराद रिनित  
उपेन)

मोहनदास (मैथिली-देरनागरी)

मोहनदास (मैथिली-मिथिलासुब)

मोहनदास (मैथिली-ब्रैत)

२. छिन्नमस्ता- शला खेतानक हिन्दी उपन्यासक सुशीला मा द्वारा मैथिली अनुराद

छिन्नमस्ता

३. कनकमणि दीक्षित (मूल नेपालीसँ मैथिली अनुराद शीमती कपा धीक आ श्री धीरेन्द्र  
श्रेमर्षि)

भगता रैङ्क देशे-भ्रम



४. तुकावाम वामा शैष्टिक कोकणी उपन्यासक मैथिली खनुवाद डॉ. शिबु कृमाव सिंह द्वारा पाखनो

रौतानां धते

### रौता लोकनि द्वारा स्वर्गीय श्लोक

१. प्रातः काल ब्रह्मद्वर्त (सूर्योदयक एक घण्टा पहिने) सरप्रथम अपन दूनु हाथ देखरौक चाही, आ ग्री श्लोक रँजरौक चाही ।

कवाथे रसते नमः कवमश्च सबस्रती ।

कवमुने स्थितो ब्रह्मा प्रभाते कवदर्शनम् ॥

कवक आगाँ नमः रँसत छथि, कवक मध्यामे सबस्रती, कवक मुनमे ब्रह्मा स्थित छथि ।  
भोवमे ताहि द्वारे कवक दर्शन कवरौक थीक ।

२. संध्या काल दीप जेसरौक काल-

दीपमुने स्थितो ब्रह्मा दीपमश्च जनार्दनः ।

दीपाथे शिखरः प्राकतः संध्याज्यातिर्नमोऽस्तुते ॥

दीपक मुन भागमे ब्रह्मा, दीपक मध्याभागमे जनार्दन (रिष्णु) आऽ दीपक अग्र भागमे शिखर स्थित छथि । हे संध्याज्याति । अहाँकेँ नमस्कार ।

३. सुतरौक काल-

वामं स्कन्दं हनुमन्तं रैनतेर्यं वृकोदवम् ।

शयने यः स्मरेन्नितं दुःस्वप्नस्तस्य नशति ॥

जे सभ दिन सुतरौसँ पहिने वाम, कृमावस्रामी, हनुमान्, गकड आऽ तीमक स्मरण करैत छथि, हुनकव दुःस्वप्न नश्रु भऽ जागत छन्हि ।

४. नहरौक समय-



गङ्गा च यद्गने चैर गौदारवि सबस्रति ।

नर्मदे सिङ्घु कारेवि जनेऽस्मिन् सन्निधिं हक ॥

हे गङ्गा, यद्गना, गौदारवी, सबस्रती, नर्मदा, सिङ्घु आऽ कारेवी पाव । एहि जनमे  
अपन सान्निध्य दिथ ।

३. उतर्व यसेद्गदस्य हिमाद्गश्चर दक्षिणम् ।

रर्षी तत् भावतं नाम भावती यत्र सन्ततिः ॥

सद्गदक उतर्वमे आऽ हिमानयक दक्षिणामे भावत अस्ति आऽ उतुका सन्तति भावती  
कहरैत छथि ।

३. अहत्या द्रौपदी सीता तावा मन्दादवी तथा ।

पञ्चकं ना स्वरैर्निर्ग महापातकनाशिकम् ॥

जे सभ दिन अहत्या, द्रौपदी, सीता, तावा आऽ मन्दादवी, एहि पाँच साप्ती-स्त्रीक स्वरण  
करैत छथि, हुनकव सभ पाप नष्ट भऽ जागत छन्हि ।

१. अश्विथोमा रैत्रिरासो हनुमाँश्च रिभीषणः ।

क्षपः पवश्वामश्च सन्तते चिबङ्गीरिनः ॥

अश्विथोमा, रैत्रि, रास, हनुमान्, रिभीषण, क्षपाचार्य आऽ पवश्वाम- अ सात ठाँ चिबङ्गीरी  
कहरैत छथि ।

+ साते भरतु स्रुतीता देरी शिखर रासिनी

उत्थेन तपसा तर्ह्या यया पशुपतिः पतिः ।

सिद्धिः साश्व सतामद्गु प्रसादान्नुस्य धूर्जष्टैः

जाह्नरीफेननेथेर यनुषि शिषिनः कना ॥

६. रानोऽहं जगदानन्द न मे राना सबस्रती ।

अपूर्णे पंचमे रर्षे र्णयामि जगत्त्रयम् ॥

१०. दुरास्मित मर्षेः प्रकन यजुर्वेद अथाय २२, मंत्र २२)



आ ब्रह्मन्निवस्य प्रजापतिवृष्टिः । निर्भोकत्रा देवताः । स्वबाडुकैतिष्ठुन्दः । षड्जः  
स्ववः ॥

आ ब्रह्मन् ब्रह्मणो ब्रह्मरक्षी जायतामा वाङ्मैत्रे वाङ्मैत्रेः श्वरेऽगमराऽतिरापी महाबथो  
जायतां दोग्धी धेनुर्दोतान्द्रानाशुः सन्धिः पवन्निर्वोरा जिष्णु वथेष्ठाः सन्धेयो हरास्य  
यजमानस्य रीरो जायतां निकामे-निकामे नः पर्जन्या रर्षित्तु हनरत्ना नः षड्धयः पचान्ता  
योगेष्कमो नः' कम्पताम् ॥ २२ ॥

मन्त्रार्थाः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोवथाः । शिवाणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणां हृदयस्तुर ।

ॐ दीर्घाभिर्भर । ॐ सौभाग्यरती भर ।

हे भगवान् । अपन देशीमे सुयोग्य आ सरिद्ध रिद्यार्थी उपेन्न होथि, आ शुकुके नाशि  
कएनिहाव सैनिक उपेन्न होथि । अपन देशीक गाय थुर दुध दय रीनी, रीवद भाव रहन  
कवथेमे सम्मम होथि आ षोड्ढा ह्रवित कर्पे दोगय रीना होथे । स्त्रीगण नगवक नेत्र  
कवरीमे सम्मम होथि आ हरक सन्धेमे ओजपूर्ण भाषण देरियरीना आ नेत्र देरीमे  
सम्मम होथि । अपन देशीमे जखन आरथक होथ रर्षा होथे आ षड्धिक-रुष्टी सरिदा  
पविपक्क होगत बहए । एरु ऋमे सन्ध तवहे हमवा सन्धक कर्णाण होथे । शिवाक  
रुष्टिक नाशि होथे आ मित्रक उदय होथे ॥

मन्त्रार्थे कोन रसुक गच्छा कवरीक चाही तकव रर्षन एहि मन्त्रेमे कएत गेल थुडि ।

एहिमे राचकबन्धुपमानड्काव थुडि ।

थन्नय-

ब्रह्मन् - रिद्य आदि ग्णसँ पविपूर्ण ब्रह्म

वाङ्मैत्रे - देशीमे

ब्रह्मरक्षी-ब्रह्म रिद्यक तेजसँ हकत्त

आ जायतां- उपेन्न होथे

वाङ्मैत्रेः - वाजा

श्वरेऽगमराऽतिरापी



मानुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अषर्रा- रीश चलेरौमे निपुश

अतिर्रापी-शित्तुके तावण दय रीना

महावथो-पैघ वथ रीना रीव

दोग्ध्री-कामना(दुध पूर्ण कवण रीनी)

धेनुरीतानड्रानाशुः धेनु-गौ रा राणी रीतानड्राना- पैघ रीवद नाशुः -आशुः -रुवित

सन्धिः -घोड १

पुवखिर्येरी- पुवखिर- ररहावके धावण कवण रीनी येरी-सुत्री

जिण्डु-शित्तुके जीतए रीना

वथेग्याः -वथ पव शिव

सुभेयो-उत्तम सभामे

हराशु-हरा जेहन

यजमानशु-राजाक राजामे

रीरो-शित्तुके पवाजित कवणरीना

निकामे-निकामे-निश्चयहाकतु कार्यमे

नः -हमव सभक

पुर्जग्या-मेघ

ररुतु-ररुा हेध

कररुा-उत्तम कर रीना

उषधयः -उषधिः

पचात्रा- पाकए



योगेष्कमो-खनञ्च नञ्च करेरौक हेतु कएन गेन योगक वस्का

नः'-हमवा सञ्चक हेतु

कम्पताम्-समर्थ हेतु

त्रिफिथक खनुराद- हे त्रौक्ष्ण, हमव बाज्यमे त्रौक्ष्ण नीक धार्मिक रिद्या रौना, बाज्य-  
रीव,तीर्बदाज, दुध दए रौनी गाय, दौगय रौना जन्तु, उद्यमी नारी होथि । पार्जन्य  
खारण्यकता पडना पव रर्या देथि, हन देय रौना गाछ पाकए, हम सञ्च संपत्ति  
खर्जित/सर्वस्मित कबी ।

रिदेह नूतन खंक भाषापक वचनानेखन-

गण्डिशिकोष-मैथिली- / मैथिलीकोष-गण्डिशि- प्राजेकठकेँ खगु रौद १३, खपन स्मार  
खा योगदान ग-मेन द्वावा [ggajendr@videha.com](mailto:ggajendr@videha.com) पव पठाउ ।

१.भावत आ नेपाक मैथिली भाषा-रैज्ञानिक लोकनि द्वावा रौनाओन मानक शैली आ  
२.मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठक्रम

१.नेपाव आ भावतक मैथिली भाषा-रैज्ञानिक लोकनि द्वावा रौनाओन मानक शैली

१.१. नेपाक मैथिली भाषा रैज्ञानिक लोकनि द्वावा रौनाओन मानक उचावण आ लेखन  
शैली

(भाषाशास्त्री डा. वामारताव यादरक धावणाकेँ पूर्ण रूपसँ सङ्ग तः निर्धारित)

मैथिलीमे उचावण तथा लेखन

१. पञ्चमाम्बव आ खनुराव. पञ्चमाम्बवबन्तुआत ७, ए, ण, न एरँ म खरौत खडि । संस्कृत  
भाषाक खनुराव शिष्टक खनुरावे जाहि रञ्जाक खम्बव बहैत खडि ओही रञ्जाक पञ्चमाम्बव  
खरौत खडि । जेना-

खरँ (क रञ्जाक बहुरौक कावणे खनुरावे ७ आएन खडि । )

पञ्च (च रञ्जाक बहुरौक कावणे खनुरावे ए आएन खडि । )





खल (१) रत्नाक बहरीक कावणे खलुमे ण् आधन खडि । )

सखि (त रत्नाक बहरीक कावणे खलुमे न् आधन खडि । )

खसु (प रत्नाक बहरीक कावणे खलुमे म् आधन खडि । )

उपहर्षज रौत मैथिलीमे कम देखन जागत खडि । पशुमास्करक रौदनामे खपिकाशि जगहपव खनुस्त्राक प्रयोग देखन जागड । जेना- थक, पच, थड, सपि, थडि आदि । रत्नाकवारिद पलित गोरिन्द नाक कहरु छनि जे करत्ना, चरत्ना आ ठरत्नासँ पूरि खनुस्त्राव निखन जाए तथा तरत्ना आ परत्नासँ पूरि पशुमास्करे निखन जाए । जेना- थक, चचन, थडा, खलु तथा कम्पन । झुदा हिन्दीक निकट बहन आधुनिक लेखक एहि रौतकेँ नहि मानैत छथि । ओ लोकनि खलु आ कम्पनक जगहपव सेहो थत आ कपन निथैत देखन जागत छथि ।

नरीन पशुति किडु सुरिपाजनक खरथु डैक । किएक तँ एहिमे समय आ स्थानक रौचत होगत डैक । झुदा कतेक रैव हस्तलेखन रा झुदणामे खनुस्त्राक डोष्ट सन रिन्दु स्पष्ट, नहि बेनासँ अर्थक अनर्थ होगत सेहो देखन जागत खडि । खनुस्त्राक प्रयोगमे उचावण-दोषक समुारना सेहो ततरैए देखन जागत खडि । एतदर्थ कसँ नर क२ परत्ना धवि पशुमास्करेक प्रयोग कवरुँ उचित खडि । यसँ नर क२ ड्र धविक खस्करक सई खनुस्त्राक प्रयोग कवरुँमे कतहु कोनो विरिद नहि देखन जागड ।

२.ठ आ ट : ठक उचावण “व् ह”जकाँ होगत खडि । खतः जत२ “व् ह”क उचावण हो ओत२ मात्र ठ निखन जाए । खान ठाम खाली ठ निखन जएरौक चाही । जेना-

ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेडुआ, ठई, ठेवी, ठाकनि, ठाँठ आदि ।

ठ = पठ १ग, रँठरँ, गठरँ, मठरँ, रँठरौ, साँठ, गाठ, बीठ, चाँठ, सीठी, पीठी आदि ।

उपहर्षज शिष्ट, सभकेँ देखनासँ ग स्पष्ट होगत खडि जे साधारणतया शिष्टक शुकमे ठ आ मप्य तथा खलुमे ठ खरैत खडि । गएह नियम ड आ डक सन्दर्भ सेहो नागु होगत खडि ।

३.र आ रँ : मैथिलीमे “र”क उचावण रँ कएन जागत खडि, झुदा ओकरा रँ कपमे नहि निखन जएरौक चाही । जेना- उचावण : रँदुनाथ, रिदुआ, नरँ, देरँता, रिष्टु, रँशि, रँन्दना आदि । एहि सभक स्थानपव एमशिः रँदुनाथ, रिदुआ, नर, देरँता, रिष्टु, रँशि, रँन्दना निखरौक चाही । सामान्यतया र उचावणक लेन ओ प्रयोग कएन जागत खडि । जेना- ओकीन, ओजह आदि ।



४.य अा ज : कतहु-कतहु “य”क उचावषा “ज”जकाँ करैत देखत जागत अछि, झुदा ओकरा ज नहि लिखरौक चाही । उचावषामे यज, जदि, जझना, जुग, जारत, जोगी, जदु, जम आदि कहन जाएरना शिद्ध, सबकेँ क्रमशः यज, यदि, यझना, हाग, यारत, योगी, यदु, यम लिखरौक चाही ।

३.ए अा य : मैथिलीक रतनीमे ए अा य दुनु लिखत जागत अछि ।

प्राचीन रतनी- कएन, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि ।

नरीन रतनी- कयन, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि ।

सामान्यतया शिद्धक शुकमे ए मात्र अरैत अछि । जेना एहि, एना, एकव, एहन आदि । एहि शिद्ध, सबक स्थानपव यहि, यना, यकव, यहन आदिक प्रयोग नहि कवरौक चाही । यद्यपि मैथिलीभाषी थाक सहित किछु जातिमे शिद्धक आवञ्चामे “ए”केँ य कहि उचावषा कएन जागत अछि ।

ए अा “य”क प्रयोगक सन्दर्भमे प्राचीने पञ्चतक अनुसवषा कवरौ उपहाङ्ग मानि एहि पञ्चकमे ओकरे प्रयोग कएन गेल अछि । किएक तँ दुनुक लेखनमे कोनो सहजता अा दूकहतताक रौत नहि अछि । अा मैथिलीक सरसापावषाक उचावषा-शीली यक अपेक्षा एसँ रैसी निकटै छैक । खास क२ कएन, हएर आदि कतिपय शिद्धकेँ केन, हर आदि कपमे कतहु-कतहु लिखत जाएर सेहो “ए”क प्रयोगकेँ रैसी समीचीन प्रमाणीत करैत अछि ।

३.हि, हू तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन लेखन-पवसवषामे कोनो रौतपव रौन दैत कार शिद्धक पाछाँ हि, हू नगाओन जागत छैक । जेना- हुनकहि, अपनहु, ओकरहु, तकौनहि, छेष्टहि, खानहु आदि । झुदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपव एकाव एरँ हुक स्थानपव ओकावक प्रयोग करैत देखत जागत अछि । जेना- हुनके, अपनो, तकौने, छेष्ट, खानो आदि ।

१.ष तथा थ : मैथिली भाषामे अपिकाशितः षक उचावषा थ होगत अछि । जेना- षडन्व (खडन्व), थोडशी (थोडशी), षष्टकौष (थष्टकौष), वृषेश (वृथेश), सन्नाथ (सन्नाथ) आदि ।





९. **पुनि स्थानान्तरण** : कोनो-कोनो सुब-पुनि खपना जगहसँ हष्टि क२ दोसब ठाम चलि जागत छडि । खास क२ द्रसु ग खा उक समुहमे ग रात नागु होगत छडि । मैथिलीकवण भ२ गेन शिछक मया रा खलुमे जँ द्रसु ग रा उ खरैए उँ ओकब पुनि स्थानान्तरित भ२ एक खम्ब खगाँ खरि जागत छडि । जेना- शिनि (शिगन), पानि (पागन), दानि ( दागन), माष्टि (मागष्टि), काडु (काडुडु), मासु (माडुस) खादि । दूदा तसेम शिछ सभमे ग निखम नागु नहि होगत छडि । जेना- बशिक्के बगशु खा सुपाशुके सुपाडुस नहि कहन जा सकैत छडि ।

१०. **हनलु ( )क प्रयोग** : मैथिली भाषामे सामान्यतया हनलु ( )क खारशुकता नहि होगत छडि । काबा जे शिछक खलुमे ख उचावण नहि होगत छडि । दूदा संस्कृत भाषासँ जहिनक तहिना मैथिलीमे खएन (तसेम) शिछ सभमे हनलु प्रयोग कएन जागत छडि । एहि पौथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शिछकेँ मैथिली भाषा समुहनि निखम खनुसाब हनलुरिहीन बाखन गेन छडि । दूदा बाकवण समुहनि प्रयोजनक नेन खबरशुक स्थानपब कतहु-कतहु हनलु देन गेन छडि । प्रस्तुत पौथीमे मैथिली लेखनक प्राचीन खा नरीन दूनु शैलीक सबन खा समीचीन पम्क सभकेँ समेष्टि क२ रर्ण-रिग्यास कएन गेन छडि । स्थान खा समयमे रँचतक सङ्गि हनु-लेखन तथा तकनीकी दृष्टिसँ सेहो सबन होरँहरँना हिसारसँ रर्ण-रिग्यास मिनाओन गेन छडि । रतमान समयमे मैथिली मात्रभाषी पर्यलुकेँ खान भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक ज्ञान नेरँ२ पडि बहन परिप्रेक्ष्यमे लेखनमे सहजता तथा एककपतापब ध्यान देन गेन छडि । तखन मैथिली भाषाक मुन रिशेषता सभ कृष्टित नहि होगक, ताहु दिस लेखक-मल्लन सचेत छडि । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. वामारताब यादरक कहरँ छनि जे सबनताक अनुसन्धानमे एहन खरसुा किन्हु ने खरँ२ देरौक चाली जे भाषाक रिशेषता छुँहमे पडि जाए ।

-(भाषाशास्त्री डा. वामारताब यादरक पावणाकेँ पुर्ण कपसँ सङ्गि त२ निर्यावित)

## १.२. मैथिली खकादमी पठना द्वारा निर्यावित मैथिली लेखन-शैली

१. जे शिछ, मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ खाग धरि जाहि रतनीमे प्रचलित छडि, से सामान्यतः ताहि रतनीमे लिखन जाय- उदाहरणार्थ-

त्राह

एखन

ठाम

जकब, तकब

तनिकब



खड्डि

खग्राह

खथन, खथनि, एथेन, खथनी

ठिमा, ठिना, ठमा

जेकव, तेकव

तिनकव । (रैकल्पिक कर्पे ग्राह)

ईड्ड, खहि, ए ।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक कप रैकल्पिकतया खपनाउन जाय: भ२ गेन, भ३ गेन रा भ४ गेन । जा बहन खड्डि, जाय बहन खड्डि, जाए बहन खड्डि । कव गेनाह, रा कवय गेनाह रा कवय गेनाह ।

३. प्राचीन मैथिलीक 'न्ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' लिखन जाय सकैत खड्डि यथा कहनि रा कहन्हि ।

४. 'ई' तथा 'उ' ततय लिखन जाय जत' स्रष्टुतः 'खग' तथा 'खड' सदृश उच्चारण गृह्य हो । यथा- देखेत, डुकैक, रौंखा, डुकैक अवादि ।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शिष्ट, एहि कपे प्रयुक्त होयत: जेह, सैह, गेह, उईह, लैह तथा दैह ।

६. ह्रस्व अकारांत शिष्टमे 'ग' के रूप कवरँ सामान्यतः खग्राह थिक । यथा- ग्राह देखि खरैह, मागिनि गेनि (मनुष्य मात्रमे) ।

७. स्रुतव द्रुस्र 'ए' रा 'य' प्राचीन मैथिलीक उच्चारण खादिमे तँ यथारत बाखन जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे रैकल्पिक कर्पे 'ए' रा 'य' लिखन जाय । यथा:- कयन रा कएन, खयनाह रा खएनाह, जाय रा जाए अवादि ।

८. उच्चारणमे दु स्रुवक रीच जे 'य' ध्वनि स्रुतः खारि जागत खड्डि तकरा लेखमे स्थान रैकल्पिक कर्पे देन जाय । यथा- धीखा, खटैखा, रिखाह, रा धीया, खटैया, रियाह ।

९. सान्नासिक स्रुतव स्रुवक स्थान यथासंभर 'ए' लिखन जाय रा सान्नासिक स्रुव । यथा:- मैएण, कनिएण, किवतनिएण रा मैथाँ, कनिथाँ, किवतनिथाँ ।

१०. कावकक रिभक्तिभक्त निम्नलिखित कप ग्राह:- हाथकै, हाथसँ, हाथे, हाथक, हाथमे । 'मे' मे खनुस्राव सरखा लज्ज थिक । 'क' क रैकल्पिक कप 'केव' बाखन जा सकैत



खडि ।

११. प्रकृतिक क्रियापदक रौद 'कय' रा 'कए' खराय बैकल्पिक कर्पे नगाउन जा सकैत खडि । यथा:- देखि कय रा देखि कए ।

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माँ, भाँ आदि निखन जाय ।

१३. अर्द्ध 'न' ओ अर्द्ध 'म' क रँदना अनुसारा नहि निखन जाय, किंतु ङापक सुरिधार्थ अर्द्ध 'ङ', 'ण', तथा 'ण' क रँदना अनुसारा निखन जा सकैत खडि । यथा:- अर्द्ध, रा अर्क, अखन रा अँचन, कण्ठ रा कँठ ।

१४. हनंत चिह्न निखनतः नगाउन जाय, किंतु रिभञ्जिक संग अकारांत प्रयोग कएन जाय । यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक ।

१५. सब एकर कावक चिह्न शिष्टमे सँ क' निखन जाय, हँ क' नहि, सँहाङ रिभञ्जिक हेतु क'वाक निखन जाय, यथा घब पबक ।

१६. अनुनासिककेँ चन्द्रिन्दू द्वारा रङ्ग कयन जाय । परंतु ऋदृणक सुरिधार्थ हि समान जठिन मात्रापव अनुसारा प्रयोग चन्द्रिन्दूक रँदना कयन जा सकैत खडि । यथा- हि केव रँदना हि ।

१७. पूर्ण विराम पासीसँ ( । ) सूचित कयन जाय ।

१८. समस्त पद सँ क' निखन जाय, रा हागहनसँ जोडि क' , हँ क' नहि ।

१९. निख तथा दिख शिष्टमे रिकारी (२) नहि नगाउन जाय ।

२०. अँक देरनागरी रूपमे बाखन जाय ।

२१. किञ्च ध्रुविक नेव नरीन चिह्न रँनराउन जाय । जा ङ नहि रँनव खडि तारंत एहि दू ध्रुविक रँदना पूर्वरत् अय/ आय/ अय/ आय/ आओ/ अओ विखन जाय । अकि ए रा अँ सँ रङ्ग कएन जाय ।

ह./- गोरिन्द मा ११/१३ श्रीकांत ठाकुर ११/१३ सुरेन्द्र मा 'सुमन' ११/०१/१३

२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम



## २.१. उच्चारण निर्देशः (रौन्ड कएव कएव ब्राह्मणः)-

दन्त न क उच्चारणमे दाँतमे जीह सँत- जेना राजू नाम , ऋदा ण क उच्चारणमे जीह मुपामे सँत (ने सँतैए तँ उच्चारण दोष खँडि)- जेना राजू गणेशि । तानरा शिमे जीह तारसँ , षमे मुपसिं आ दन्त समे दाँतसँ सँत । निर्गाँ, सभ आ शौषण राजि क२ देखु । मैथिलीमे ष केँ रौदिक संस्कृत जकाँ थ सेहो उचवित कएव जागत खँडि, जेना रसा, दोष । य खनेको स्थानपव ज जकाँ उचवित होगत खँडि आ ण ड जकाँ (यथा संयोग आ गणेशि संज्ञा) आ

गङ्गसे उचवित होगत खँडि । मैथिलीमे र क उच्चारण रँ शि क उच्चारण स आ य क उच्चारण ज सेहो होगत खँडि ।

ओहिना द्रस्य ण रौशिकान मैथिलीमे पहिने राजन जागत खँडि कावण देरनागवीमे आ मिथिलासुबमे द्रस्य ण अस्फुवक पहिने निखनो जागत आ राजनो जएरौक चारी । कावण जे हिन्दीमे एकर दोषपूर्ण उच्चारण होगत खँडि (निखन तँ पहिने जागत खँडि ऋदा राजन रौदमे जागत खँडि), से शिक्षा पछतिक दोषक कावण हम सभ ओकर उच्चारण दोषपूर्ण टंगसँ क२ बहन छी ।

खँडि- थ ग छ **ईछ (उच्चारण)**

छथि- छ ग थ **छैथ (उच्चारण)**

पहँचि- प हँ ग च **(उच्चारण)**

आरँ थ आ ग ज्ञ ए ई ओ ँ अं अः ऋ ई सभ नेन मात्रा सेहो खँडि, ऋदा ईमे ज्ञ ई ओ ँ अं अः ऋ केँ सहाज्जम्ब कपमे गत कपमे प्रहाज आ उचवित कएव जागत खँडि । जेना ऋ केँ वी कपमे उचवित कवरँ । आ देखियौ- ई नेन देखिपु क प्रयोग खनचित । ऋदा देखिई नेन देखिये खनचित । क् सँ हँ पवि थ सन्निहित भेनासँ क सँ हँ रँनेत खँडि, ऋदा उच्चारण कान हननु हाज शिद्धक खनुक उच्चारणक प्रवृत्ति रँठन खँडि, ऋदा हम जखन मनोजमे ज् खनुमे रँजेत छी, तखनो प्रबनका लोककेँ रँजेत सनरँदि- मनोज२, रासुरमे ओ थ हाज ज् = ज रँजे छथि ।

हेव त्र खँडि ज् आ ए० क सहाज्ज ऋदा गत उच्चारण होगत खँडि- गा । ओहिना स्र खँडि क् आ ष क सहाज्ज ऋदा उच्चारण होगत खँडि छ । हेव शिं आ व क सहाज्ज खँडि श्रि (जेना श्रिमिक) आ स् आ व क सहाज्ज खँडि स्र (जेना मिस्र) । व नेन त+व ।

उच्चारणक आँडियो कागन रिदेह आकाशिर <http://www.videha.co.in/> पव उपनङ्ग खँडि । हेव केँ / सँ / पव पूरँ अस्फुवसँ सँत क२ निखु ऋदा तँ / क२ सँत क२ । ईमे सँ मे पहिन सँत क२ निखु आ रौदरँना सँत क२ । अंकक रौद ठी निखु सँत क२ ऋदा अन्य ठाम ठी निखु सँत क२ जेना



**ढुसुँरुा कूदा सडु ठी । केव उख म सातम विखु- ढुठम सातम ले । घवरवामे रववा कूदा घवरवामे रववा प्रहाङ्ग करु ।**

बहए-

**बठ कूदा सकैए (उचावण सकै-ए) ।**

कूदा कखनो कान बहए आ बठ मे खरुथ भिन्नता सेहो, जेना से कम्मा जगहमे पार्किंग कवरक खत्रास बठ ओकवा । प्रहतापव पता नागत जे टुनटुन नाम्ना आ ड्रागरव कनाठ ब्रसक पार्किंगमे काज करैत बहए ।

ढुठे, ढुठए मे सेहो ई तबहक भेन । ढुठए क उचावण ढुठ-ए सेहो ।

संयोगने- (उचावण संजोगने)

**के/ क२**

केव- क (

**केव क प्रयोग गहमे ले करु , गहमे क२ सकै छी । )**

क (जेना वामक)

**वामक आ संगे (उचावण वाम के / वाम क२ सेहो)**

**सँ- स२ (उचावण)**

चन्द्ररिन्दू आ खनुस्नाव- खनुस्नावमे कठ धरिक प्रयोग होगत खडि कूदा चन्द्ररिन्दूमे ले । चन्द्ररिन्दूमे कनेक एकावक सेहो उचावण होगत खडि- जेना वामसँ- (उचावण वाम स२) वामकेँ- (उचावण वाम क२/ वाम के सेहो) ।

केँ जेना वामकेँ भेन हिन्दीक को (वाम को)- वाम को= वामकेँ

क जेना वामक भेन हिन्दीक का ( वाम का) वाम का= वामक

क२ जेना जा क२ भेन हिन्दीक कव ( जा कव) जा कव= जा क२

सँ भेन हिन्दीक से (वाम से) वाम से= वामसँ

स२ , त२ , त , केव (गहमे) एते चाक शिछ सरहक प्रयोग खराडित ।

के दोसव खरुथे प्रहाङ्ग भ२ सकैए- जेना, के कहनक ? रिभञ्जि “क”क रँदना एकव प्रयोग खराडित ।





नधि, नहि, नै, नग, नँग, नगँ, नगँ ई सभक उचावण खा लेखन - ले

७र क रँदनामे र्र जेना महर्रपूर्ण (मह७र्रपूर्ण नै) जतए अर्थ रँदनि जए ओतहि मात्र तीन अक्षरक सहाज्जक प्रयोग उचित । सम्पति- उचावण स म्प ण त (सम्पति नै- कावण सही उचावण आसानसँ सभ्र नै) । क्रदा सरोतिम (सरोतिम नै) ।

बाह्रिय (बाह्रिय नै)

सकेए/ सके (अर्थ परिवर्तन)

पोछेने/ पोछे नेन/ पोछए नेन

पोछेए/ पोछए/ (अर्थ परिवर्तन) पोछए/ पोछे

ओ लोकनि ( ल्ण क२, ओ मे रिकारी नै)

ओए/ ओहि

ओहने/

ओहि नेन/ ओही व२

जएरौ/ रैसए

पँचभय्याँ

देखियोक/ (देखिओक नै- तहिना अ मे जस्र खा दीर्घक मात्राक प्रयोग अन्नचित)

जकाँ / जेकाँ

तँग/ तँ

होएत / हएत

नधि/ नहि/ नँग/ नगँ/ नै

सौंसै/ सौंसै

रँड /

रँडी (सोबाओव)

गाए (गाए नहि), क्रदा गाएक दुध (गाएक दुध नै । )

बहएँ/ पहिबतँ





रबन जोडेते थछि, से एकव प्रयोग रिंकारीक रँदता देनाग तकनीकी कर्पे सेहो  
खनूचित) ।

थगमे, एहिमे/ ईमे

जगमे, जाहिमे

एथन/ अथन/ थगथन

कै (के नहि) ये (खनूस्त्राव बहित)

भ२

ये

द२

टँ (त२, त ले)

सँ ( स२ स ले)

गाछ तब

गाछ वग

साँस थन

जो (जो go, करै जो do)

ते/तथ जेना- ते दुखारे/ तगमे/ तगने

जे/जथ जेना- जे कावण/ जगसँ/ जगने

ई/अथ जेना- ई कावण/ ईसँ/ थगने/ रूदा एकव एकठाँ खास प्रयोग- नावति कतेक  
दिनसँ कहैत बहैत थग

ले/वथ जेना लेसँ/ वगने/ ले दुखारे

नहँ/ लौ

गेलौ/ लेलौ/ लेवँह/ गेवँह/ नेवँह/ नेवँ



जअ/ जाहि/ जै

जहिगाम/ जाहिगाम/ जअगाम/ जैगाम

एहि/ अहि/

अअ (राकक अतमे त्राया / अं

अअछ/ अछि/ अँछ

तअ/ तहि/ तै/ ताहि

ओहि/ ओअ

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी/ जीरँ

भनेही/ भवहि

तै/ तँअ/ तँअ

जाअरँ/ जअरँ

नअ/ नै

छअ/ छै

नहि/ नै/ नअ

गअ/ गै

छनि/ छन्हि ...

समअ शेरँदक संग जअन कोनो रिभक्ति जूँठै छै तअन समै जना समैपव  
अत्यादि । असगवमे छदअ आ रिभक्ति जूँठने छदे जना छदेसँ, छदमे अत्यादि ।

जअ/ जाहि/

जै

जहिगाम/ जाहिगाम/ जअगाम/ जैगाम



एहि/ थहि/ थग/ ए

थगछ/ थछि/ एछ

तग/ तहि/ ते/ ताहि

ओहि/ ओग

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी/

जीरें

भने/ भनेही/

भवहि

ते/ तग/ तए

जाएरें/ जएरें

नग/ ने

छग/ छे

नहि/ ने/ नग

गग/

गे

छनि/ छन्हि

छकन थछि/ गेव गछि

२.२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

नीचाक सूचीमे देन रिक्वमेस लैंग्वेज एडीटिंग द्वारा कौन कप छनन जेरौक चाही:

रौन्ड कएन कप त्राय:

१. होयरेंना/ होरेंयरेंना/ होमयरेंना/ हेरेंरेंना, हेमरेंना/ होयरौक/ होरेंयरेंना / होयरौक

२. थग/ थग



३।

३. क' जेने/क२ जेने/क३ जेने/क४ जेने/न/व२/न५/व३

४. भ' गेन/भ२ गेव/भ३ गेन/भ४

गेव

५. कव' गेनाह/कव२

गेवह/कव३ गेवाह/कव४ गेवाह

७.

विथ/दिथ विथ, दिथ, विथ, दिथ/

१. कव' रैना/कव२ रैना/ कव३ रैना कवैरैना/क'व' रैना /

करैरावै

+ रैना रना (प्रकष), रानी (सूत्री) २

आङ्गुव आंग्र

१०. प्रायः प्रायह

११. दुःख दुथ १

२. चलि गेन चव गेव/चैन गेन

१३. देवथिन्ह देवकिन्ह, देवथिन

१४.

देखवहि देखवनि/ देखलैन्ह

१५. छथिन्ह/ छवहि छथिन/ छलैन/ छवनि

१७. चलैत/दैत चवति/दैति

१९. एथनो

अथनो



१५.

**रँठनि रँठअन रँठन्हि**

१६. उ'उ२(सरनाम) उ

२०

**उ (संयोजक) उ'उ२**

२१. कागि/काग्नि कागर्ग/कागउ

२२.

**जे जे'जे२ २३. ना-बुब ना-बुब**

२४. केवन्हि/केवनि/कयन्हि

२५. तखनत' तखन त'

२७. जा

**बहव/जाय बहव/जाय बहव**

२९. निकवय/निकवय

**वागव/ वगव रँहवाय/ रँहवाय वागव/ वगव निकव/रँहवै वागव**

२५. उतय/ जतय जत' उत' जतय/ उतय

२६.

**की बुबव जे कि बुबव जे**

३०. जे जे'जे२

३१. कुदि / यदि(मोन पावर) कुगद/यागद/कुद/याद/

**यदि (मोन)**

३२. अहो/ ओहो

३३.

**हँसय/ हँसय हँस२**



३४. लौ आकि दस/लौ किंरा दस/ लौ रा दस

३५. सासु-ससुव सास-ससुव

३६. छह/ सात छ/छः/सात

३७.

का की/ की२ (दीर्घिकावास्तुमे २ रजित)

३८. जरौरै जरारै

३९. कबयताह/ करेताह कबयताह

४०. दवान दिशि दवान दिशि/दवान दिस

४१.

. गेवाह गधवाह/गयवाह

४२. किछु आव/ किछु ँव/ किछु आव

४३. जाण छव/ जाणत छव जाति छव/जैत छव

४४. पहुँचि/ भेटै जाणत छव/ भेटै जाण छव पहुँच/ भेटै जाणत छव

४५.

जरौन (हरा)/ जरौन(हेरौजी)

४६. वय/ वय क/ क२/ वय कय / व२ क२/ व२ कय

४७. व/व२ कय/

कय

४८. एथन / एथने / अथन / अथने

४९.

अहीके अहीके

५०. गहीव गहीव

५१.

धाव पाव केनाथ धाव पाव केनाथ/केनाथ





ॐ.२. जेकाँ जेकाँ

**जकाँ**

ॐ.३. तहिना तेहिना

ॐ.४. एकव थकव

ॐ.५. रहिनउ रहिनोण

ॐ.६. रहिन रहिनि

ॐ.७. रहिन-रहिनोण

**रहिन-रहनउ**

ॐ.८. नहि/ नै

ॐ.९. कवरौ / कवरौय/ कवरौए

ॐ.१०. तँ/ त २ तय/तए

ॐ.११. भैयाबी मे छेठ-भाए/भै/ जेठ-भाय/भाए

ॐ.१२. गिनतीमे दू भाग/भाए/भाँए

ॐ.१३. ग्रा पौथी दू भाएक/ भाँए/ भाए/ जेठ । यारत जारत

ॐ.१४. माय मै / माए ऋदा माएक ममता

ॐ.१५. देखि/ दएन दनि/ दएन्हि/ दयन्हि दन्हि/ दैन्हि

ॐ.१६. द/ द२/ दए

ॐ.१७. उ (संयोजक) उ२ (सरनाम)

ॐ.१८. तका कए तकाय तकाए

ॐ.१९. पैरे (on foot) पएरे कएक/ कैक

१०.

**ताहुमे/ ताहुमे**

११.

**प्रतीक**



१२.

**रैंजा कय/ कथ / क२**

१३. रैननाय/रैननाथ

१४. कोवा

१५.

**दिनका दिनका**

१७.

**ततहिमँ**

११. गवरैँवहि/ गवरैँवनि

**गवरैँवहि/ गवरैँवनि**

११. राँव राँव

१२.

**चेह चिह(अशुह)**

+०. जे जे'

+५

**. से/ के से/के**

+२. एखुनका अखनुका

+३. भूमिहव भूमिहव

+४. सुगव

**/ सुगक/ सुगव**

+३. सठठाक सठठाक +७.

**छुरि**

+१. कवगयो/७ करैयो ले देवक /कबियो-कवगयो

+१. पुरावि



## प्रबोध

१७. सगड १-साँष्टी

## सगड १-साँष्टी

१०. पधरे-पधरे पैरे-पैरे

११. खेवधरौक

१२. खेलेरौक

१३. वगा

१४. होध- हो होध

१५. बूमव बूमव

१६.

## बूमव (संबोधन अर्थमे)

१७. यैह यधह / अधह/ सैह/ सधह

१८. तातिव

१९. अयनाय- अयनाग/ अधनाग/ एनाग

१००. निर- निन्द

१०१.

## रिन्न रिन्न

१०२. जाध जाग

१०३.

## जाध (in different sense)-last word of sentence

१०४. छुत पव आरि जाध

१०५.

## ले

१०६. खेवाध (play) खेवाध



१०१. शिकायत- शिकायत

१०१.

ठप- ठप

१०२

पठ- पठ

११०. कनिष/ कनिये कनिषे

१११. वाकस- वाकस

११२. होष/ होष होष

११३. खडबदा-

खडबदा

११४. बुँमेवहि (different meaning- got under stand)

११५. बुँमएवहि/बुँमेवनि/ बुँमयवहि (under stood himself)

११६. चनि- चव/ चवि गेव

११७. खधाष- खधाष

११८.

मोन पाडवखिन्ह/ मोन पाडवखिन/ मोन पाववखिन्ह

११९. कैक- कएक- कएक

१२०.

वग वग

१२१. जवनाष

१२२. जवनाष जवनाष- जवनाष/

जवनाष

१२३. होषत



१२४.

गबरेवन्हि/ गबरेवनि गबरोवन्हि/ गबरोवनि

१२५.

चिखेत- (to test) चिखत

१२७. कबअयो (willing to do) करैयो

१२१. जेकवा- जकवा

१२४. तकवा- तेकवा

१२९.

बिदेसब स्थानमे/ बिदेसरे स्थानमे

१३०. कबरयनहुँ/ कबरएनहुँ/ कबरेनहुँ कबरेनौ

१३१.

हाकि (उचावण हाकक)

१३२. ओजन रजन आक्सोच/ आक्सोस कागत/ कागच/ कागज

१३३. आधे भाग/ आध-भागे

१३४. पिचा / पिचाय/पिचाए

१३५. नए/ ले

१३७. रँचा नए

(ले) पिचा जाय

१३१. तखन ले (नए) कठत अछि । कठ/ सुने/ देखे छव झुदा कठत-कठत/ सुनेत-  
सुनेत/ देखेत-देखेत

१३४.

कतेक गोठे/ कताक गोठे

१३९. कमाअ-धमाअ/ कमाअ- धमाअ

१४०



## . वग वग

१४९. खेवाग (for playing)

१४९.

## डुबिह/ डुबिन

१४९.

## होषत होष

१४९. का कियो / केउ

१४९.

## केशे (hair)

१४९.

## केस (court -case)

१४९

## . रैननाग/ रैननाय/ रैननाथ

१४९. जलेनाग

१४९. कबसी कसी

१४९. चबचा चर्चा

१४९. कर्म कबम

१४९. डुराँरै/ डुराँरौ/ डुराँरौ डुराँरै/ डुराँरै

१४९. अखुनका/

## अखुनका

१४९. वष/ विष (राकाक अंतिम शिष्ट)- व२

१४९. कएवक/

## केवक

१४९. गवमी गर्मी



१३१

## रवदी रदी

१३१.१. **सुना गेवाह सुना/सुना२**

१३१.२. **एनाअ-गेनाअ**

१३०.

## तेना ले घेववहि/ तेना ले घेववनि

१३१.३. **नविण / ले**

१३२.

## डरो डरो

१३३. **कतह/ कते कही**

१३४. **उमविगव-उमेवगव उमवगव**

१३५. **भकिगव**

१३६. **धोत/धोखत धोएत**

१३७. **गप/गप्प**

१३८.

## के के

१३९. **दवरैज्जा/ दवरैजा**

१४०. **ठाय**

१४१.

## धवि तक

१४२.

## घुवि लोष्ट

१४३. **खोबरैक**

१४४. **रुह**



११३. चोँ/ चूँ

११७. चोँहि ( पद्यमे त्राह्य)

११९. चोँही / चोँहि

११५.

**कवरौंअ कवरौंअये**

११६. अकेटा

१५०. कवितथि / कवतथि

१५५.

**पहुँचि/ पहुँच**

१५२. बाखवन्हि बखवन्हि/ बखवनि

१५३.

**वगवन्हि/ वगवनि वागवन्हि**

१५४.

**अनि (उचावण अणन)**

१५३. अण्ठि (उचावण अणण्ठ)

१५७. अवथि गेवथि

१५९. रिंतणे/ रिंतेने/

**रिंतेने**

१५५. कवरौंअन्हि/ कवरौंअनि/

**करेवथिन्ह/ करेवथिन**

१५६. कवअवन्हि/ करेवनि

१६०.

**अकि/ कि**





१११. पहुँचि।

पहुँच

११२. रँती जवाय/ जवाय जवा (खागि नगा)

११३.

से से

११४.

हाँ मे हाँ (हाँमे हाँ रिभक्तिमे छ्हा कथ)

११५. खेव खेव

११६. खणव(spaci ous) खेव

११७. होयतहि/ होयतहि/ होयतनि/हेतनि/ हेतहि

११८. हाथ मट्टिआवर/ हाथ मट्टियारय/हाथ मट्टियावर

११९. खेका खेका

२००. देखाए देखा

२०१. देखारैए

२०२. सतवि सतव

२०३.

साहेरँ साहेरँ

२०४. गेलैन्ह/ गेवहि/ गेवनि

२०५. हेरौक/ होयरौक

२०६. केनो/ कएतहूँ/केनो/ केरूँ

२०७. किछ न किछ/

किछ ने किछ

२०८. घुमेतहूँ/ घुमएतहूँ/ घुमेनो

२०९. एवाक/ खएनाक



२१०. अः / अह

२११. वय /

वय (अर्थ- परिवर्तन) २१२. कनीक / कनेक

२१३. सरलक / सलक

२१४. मिता २ / मिता

२१५. क२ / क

२१६. जा २ /

जा

२१७. आ २ / आ

२१८. भ२ / भ' ( ' काल्पक कमीक द्यातक)

२१९. निश्रम / नियम

२२०

.लेकटखव / लेकटखव

२२१. पहिब अक्षव टा / रौदक / रौचक ट

२२२. तहि / तहि / तधि / ते

२२३. कहि / कही

२२४. तँ /

ते / तँ

२२५. नँ / नँ / नधि / नहि / ले

२२६. ते / लय / एवीते /

२२७. छधि / छे / छेक / छग

२२८. दृष्टि / दृष्टि / दृष्टि

२२९. आ (come) / आ (conjunction)

२३०.



**थी (conjunction) / थीर(come)**

२३१. कनो/ कोनो/ कोना/ केना

२३२. गेनोन्ह-गेवन्हि-गेवनि

२३३. हेरौक- होएरौक

२३४. केनोँ- कएनोँ-कएनहुँ/केनोँ

२३५. किछ न किछ- किछ ले किछ

२३६. केहन- केहन

२३७. थीर (come)- थी (conjunction-and) / थी । थीर- थीर / थीरह- थीरह

२३८. छथत- छेत

२३९. घुमेनहुँ- घुमएनहुँ- घुमेवाटे

२४०. एवाक- अएनाक

२४१. होनि- होअन/ होन्हि/

२४२. ओ- वाम ओ थामक रीच(conjunction), ओ कहक (he said) / ओ

२४३. की छथ/ कोसी अथवी छथ/ की छै । की छथ

२४४. दृष्टिअ/ दृष्टियेँ

२४५.

**. गोथिव/ सामेव**

२४६. तेँ / तँअ/ तथिअ/ तहिँ

२४७. जौ

**/ जाँ/ जाँ**

२४८. सभ/ सरँ

२४९. सभक/ सरँहक

२५०. कहिँ/ कही

२५१. कनो/ कोनो/ कोनहुँ/



२७२. कावकती भ२ गेव/ भ३ गेव/ भ४ गेव

२७३. केना/ केना/ कना/ कना

२७४. खः/ खः

२७५. जने/ जनण

२७६. गेवनि/

**गेवाह (अर्थ परिवर्तन)**

२७७. केवहि/ कएवहि/ केवनि/

२७८. वय/ वय/ वयह (अर्थ परिवर्तन)

२७९. कनीक/ कनेक/ कनी-मनी

२८०. पठेवहि पठेवनि/ पठेवण/ पपठेवहि/ पठेवनि/

२८१. निखम/ नियम

२८२. हेक्टखव/ हेक्टयव

२८३. पहिब अफब बहने ट/ रीचमे बहने ट

२८४. आकाबान्तमे रिक्कीक प्रयोग उचित नै/ अपोजुष्ठाकीक प्रयोग हान्स्टक तकनीकी नूनताक परिचायक ओकब रीदना अरग्रह (रिक्की) क प्रयोग उचित

२८५. केव (पद्यमे ब्राह्म) / -क/ क२/ के

२८६. डैन्हि- डैन्हि

२८७. वणैथ/ वणैथे

२८८. हेषत/ हेषत

२८९. जषत/ जषत/

२९०. अषत/ अषत/ आषत

२९१

. अषत/ अषत/ अषत

२९२. पिअरौक/ पिअरौक/पियरौक



२१३. शुभ/ शुभ

२१४. शुभहे/ शुभ

२१५. अतह/ अतह/ एतह/ अतह

२१६. जाहि/ जाग/ जग/ जे/

२१७. जागत/ जेतए/ जगतए

२१८. आव/ अए

२१९. केक/ कएक

२२०. आयन/ अएन/ आव

२२१. जाए/ जगए/ जए (नानति जाए नगतीह । )

२२२. नकएन/ नकाएव

२२३. कर्वाएव/ कर्वाएन

२२४. ताहि/ ते/ तग

२२५. गायरै/ गाएरै/ गएरै

२२६. सके/ सकए/ सकय

२२७. सेवा/सवा/ सवाए (भात सवा गेन)

२२८. कहत बनी/देखेत बनी/ कहत छुनौ/ कह छुनौ- अहिना चलेत/ पटेत

(पटे-पटेत अर्थ कथनो काव परिवर्तित) - आव बुमै/ बुमैत (बुमै/ बुमै छी ह्रदा बुमैत-बुमैत)/ सकैत/ सकै। करैत/ करै। दै/ दैत। डैक/ डै। रचलै/ रचलैक। बखरौ/ बखरौक। रिन/ रिन। बातिक/ बातिक बुमै आ बुमैत केव अपन-अपन जगहपव प्रयोग समीचीन अछि। बुमैत-बुमैत आर बुमविर्ष। हमहुँ बुमै छी।

२२९. दुआरे/ दारे

२३०. भेटै/ भेटै/ भेटै

२३१.

खन/ खीन/ खना (भोव खन/ भोव खीन)



२०२. तक/ धवि

२०३. ग२/ गौ (meaning different - जनरौ ग२)

२०४. स२/ सँ (रूदा द२, न२)

२०५. उ२ (तीन अक्षरक मेत रँदना पुनरुक्ति एक था एकठा दोसरक उपयोग) आदिक रँदना न्न आदि। महउ२/ मह२/ कर्ता/ कर्ता आदिमे उ सहायक कोनो आरथकता मैथिलीमे नै थि। **रऊर**

२०६. रेंसी/ रेंगी

२०७. रौना/राना रँवा/ रना (बँरँवा)

२०८

**.रावी/ (रँदलैरावी)**

२०९. राता/ राता

३००. अन्तुवर्द्धिय/ अन्तुवर्द्धिय

३०१. लेमए/ लेरँए

३०२. वमडुका नमडुका

३०३. वागै/ वगै (

**भैठैत/ भैठै)**

३०४. वागव/ वगव

३०५. तरौ/ तरा

३०६. बाखक/ बखक

३०७. था (come)/ था (and)

३०८. पश्चाताप/ पश्चाताप

३०९. २ केव रारहाव शिद्धक अन्तुमे माव, यथासंभर रीचमे नै।

३१०. कठैत/ कठै

३११.

**बख (डव)/ बँ (डवौ) (meaning different)**



३५१. तागति/ ताकति

३५२. खबाप/ खबारें

३५३. रौंअन/ रौंनि/ रौंगनि

३५४. जाठि/ जाअठ

३५५. कागज/ कागच/ कागत

३५६. गिले (meaning different - swallow)/ गिबए (खसए)

३५७. बाश्चिद्य/ बाश्चिद्य

## DATE-LI ST (year – 2013-14)

(१४२१ क्रमवी साव)

### **Marriage Days:**

Nov.2013- 18, 20, 24, 25, 28, 29

Dec.2013- 1, 4, 6, 8, 12, 13

January 2014- 19, 20, 22, 23, 24, 26, 31.

Feb.2014- 3, 5, 6, 9, 10, 17, 19, 24, 26, 27.

Mar ch 2014- 2, 3, 5, 7, 9.

April 2014- 16, 17, 18, 20, 21, 23, 24.

May 2014- 1, 2, 8, 9, 11, 12, 18, 19, 21, 25, 26, 28, 29, 30.

June 2014- 4, 5, 8, 9, 13, 18, 22, 25.

July 2014- 2, 3, 4, 6, 7.

### **Upanayana Days:**

Febr uar y 2014- 2, 4, 9, 10.

Mar ch 2014- 3, 5, 11, 12.



April 2014- 4, 9, 10.

June 2014- 2, 8, 9.

***Dviragaman Din:***

November 2013- 18, 21, 22.

December 2013- 4, 6, 8, 9, 12, 13.

February 2014- 16, 17, 19, 20.

March 2014- 2, 3, 5, 9, 10, 12.

April 2014- 16, 17, 18, 20.

May 2014- 1, 2, 9, 11, 12.

***Mundan Din:***

November 2013- 20, 22.

December 2013- 9, 12, 13.

January 2014- 16, 17.

February 2014- 6, 10, 19, 20.

March 2014- 5, 12.

April 2014- 16.

May 2014- 12, 30.

June 2014- 2, 9, 30.

**FESTIVALS OF MTHILA (2013-14)**

Mauna Panchami -27 July





- Madhushr avani – 9 August  
Nag Panchami – 11 August  
Paksha Bandhan– 21 Aug  
Kri shnast ami – 28 August  
Kushi Amavasya / Somvari Vrat – 5 Sept ember  
Hart al i ka Teej – 8 Sept ember  
Chaut hChandr a–8 Sept ember  
Vi shwak ar ma Pooj a– 17 Sept ember  
Anant Cat ur dashi – 18 Sep  
Pi t ri Paksha begi ns– 20 Sep  
Ji moot avahan Vrat a/ Ji ti a–27 Sep  
Mat ri Navami –28 Sep  
Kal ashst hapan– 5 Oct ober  
Bel naut i – 10 Oct ober  
Pat ri ka Pr avesh– 11 Oct ober  
Mahast ami – 12 Oct ober  
Maha Navami – 13 Oct ober  
Vi j aya Dashami – 14 Oct ober  
Koj agar a– 18 Oct  
Dhant er as– 1 November  
Di yabat i , shyama pooj a–3 November



Annakoot a/ Govar dhana Pooj a-4 November

Bhr at ri dwi ti ya/ Chi tr agupt a Pooj a- 5 November

Chhat hi -8 November

Sama Pooj aar ambh- 9 November

Devot t han Ekadashi - 13 November

r avi vr at ar ambh- 17 November

Navanna par van- 20 November

Kart i kPoor ni ma- Sama Vi sar j an- 2 December

Vi vaha Panch mi - 7 December

Makar a/ Teel a Sankr ant i -14 Jan

Nar akni var an chat ur dashi - 29 January

Basant Panchami / Sar aswat i Pooj a- 4 February

Achl a Sapt mi - 6 February

Mahashi var at ri -27 February

Hol i kadahan-Fagua-16 Mar ch

Hol i - 17 Mar ch

Sapt ador a- 17 Mar ch

Var uni Tr ayodashi -28 Mar ch

Jur i shi t al -15 April

Ram Navami - 8 April

Akshaya Tritiya-2 May



मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

Janaki Navami - 8 May

Ravi Br at Ant - 11 May

Vat Savitri -bar asait - 28 May

Ganga Dashhar a-8 June

Hari vas ar Vr at a- 9 July

Shr ee Gur u Poor ni ma-12 Jul

VI DEHA ARCHI VE

पत्रिकाक सब्ठा पुवान अंक ब्रैल-रिदेह ग्र. तिवहता आ देरनागरी रूपमे Vi deha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

रिदेह ग्रअंक ३.०पत्रिकाक पहिन -

रिदेह ग्रम सँ आगाँक अंक३.०पत्रिकाक -

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archi-ve-part-i/>

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archi-ve-part-ii/>

३.मैथिली पोथी डाउनलोड Mait hili Books Download

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pot hi>

इडियो संकननअँ मैथिली. Mait hili Audi o Downl oads

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audi o>

४.मैथिली रीडियोक संकनन Mait hili Vi deos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-vi deo>



३. आधुनिक चित्रकला आ चित्र /मिथिला चित्रकला.M th i l a P a i n t i n g / M o d e r n  
A r t a n d P h o t o s

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>

रिदेहक एहि सब सहयोगी क्रिकपब सेहो एक रेब जाड ।

३.रिदेह मैथिली क्रिज :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१.रिदेह मैथिली जानरुत अर्गीगैठव :

<http://videha-aggregator.blogspot.com/>

४.रिदेह मैथिली साहित्य अंग्रेजीमे अनुदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

६.रिदेहक पूर्ब-कप "भाजसबिक गाछ" :

<http://gajendratyakur.blogspot.com/>

१०.रिदेह अडेक :

<http://videha123.blogspot.com/>

११.रिदेह बागन :

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. रिदेह: सदेह : पहिन तिवहुता (मिथिलासुब) जानरुत (रैनांग)

<http://videha-sadeha.blogspot.com/>

१३. रिदेह:ब्रेन: मैथिली ब्रेनमे: पहिन रेब रिदेह द्वावा

<http://videha-braille.blogspot.com/>

१४. V I D E H A I S T M A I T H I L I F O R T N I G H T L Y E J O U R N A L A R C H I V E

<http://videha-archives.blogspot.com/>



१३. रिदेह प्रथम मैथिली पाष्किक ई पत्रिका मैथिली पौथीक आर्काइवर

<http://videha-pothi.blogspot.com/>

१७. रिदेह प्रथम मैथिली पाष्किक ई पत्रिका ऑडियो आर्काइवर

<http://videha-audio.blogspot.com/>

११. रिदेह प्रथम मैथिली पाष्किक ई पत्रिका वीडियो आर्काइवर

<http://videha-video.blogspot.com/>

१५. रिदेह प्रथम मैथिली पाष्किक ई पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

<http://videha-paintings-photos.blogspot.com/>

१६. मैथिल आब मिथिला (मैथिलीक सबसँ लोकप्रिय जानबूत)

<http://maithilaurmitihila.blogspot.com/>

२०.श्रुति प्रकाशन.

<http://www.shrutipublication.com/>

२१.<http://groups.google.com/group/videha>

२२.<http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/>

२३.गजेन्द्र ठाकुर अडेक

<http://gajendratyakur123.blogspot.com/>


२४. नैना कुठका


<http://mangan-khabas.blogspot.com/>

२७. रिदेह रेडियोकरिता आदिक पहिल पौडकास्ट सांघठ-मैथिली कथा:

<http://videha123radio.wordpress.com/>



२७.  Vi deha Radi o

२९.  Joi n of f i c i a l Vi deha f a c e b o o k g r o u p.

२५. बिदेह मैथिली नाँठ उअेर

[ht t p://ma i t h i l i -d r a m a .b l o g s p o t .c o m/](http://maithili-drama.blogspot.com)

२६.समदिया

[ht t p://e s a m a d .b l o g s p o t .c o m/](http://esamad.blogspot.com)

३०. मैथिली फिल्म

[ht t p://ma i t h i l i f i l m s .b l o g s p o t .c o m/](http://maithilifilms.blogspot.com)

३१.अनचिन्हाव आखव

[ht t p://a n c h i n h a r a k h a r k o l k a t a .b l o g s p o t .c o m/](http://anchinharakharakolkata.blogspot.com)

३२. मैथिली हाणकु

[ht t p://ma i t h i l i -h a i k u .b l o g s p o t .c o m/](http://maithili-haiku.blogspot.com)

३३. मानक मैथिली

[ht t p://m a n a k -m a i t h i l i .b l o g s p o t .c o m/](http://manak-maithili.blogspot.com)

३४. बिहनि कथा

[ht t p://v i h a n i k a t h a .b l o g s p o t .i n/](http://vihani-katha.blogspot.in/)

३५. मैथिली करिता

[ht t p://ma i t h i l i -k a v i t a .b l o g s p o t .i n/](http://maithili-kavita.blogspot.in/)

३७. मैथिली कथा

[ht t p://ma i t h i l i -k a t h a .b l o g s p o t .i n/](http://maithili-katha.blogspot.in/)

३९.मैथिली समालोचना



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका विदेह'१३८ म अंक १५ सितम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ६९ अंक १३८)

मानकीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

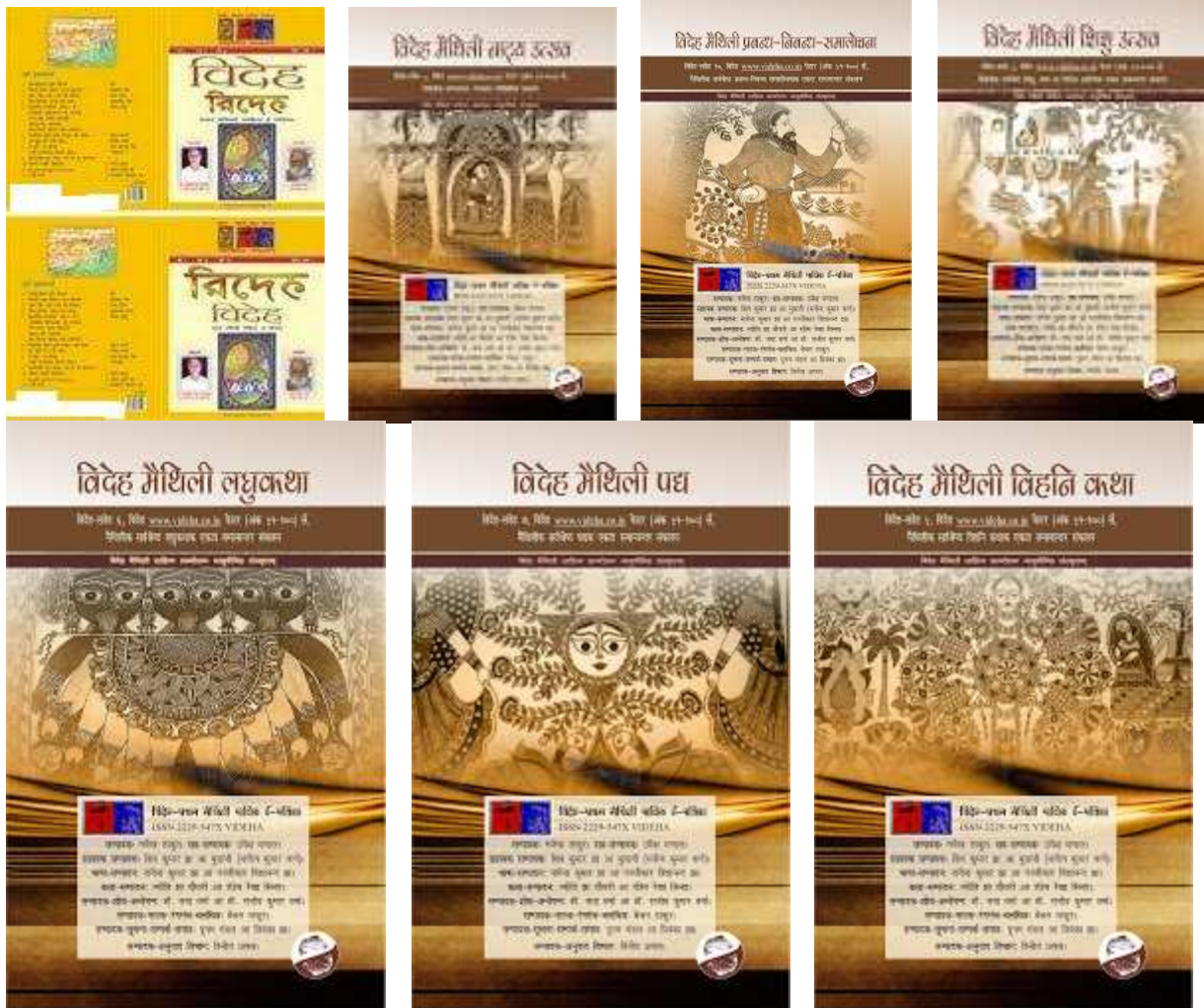
<http://maithili-samachna.blogspot.in/>

महत्त्वपूर्ण सूचना: The Maithili pdf books are AVAILABLE FOR free PDF DOWNLOAD AT

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://videha123.wordpress.com/>

<http://videha123.wordpress.com/about/>





Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाष्किक ई पत्रिका विदेह'१३८ म अंक १५ सितम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ६९ अंक १३८)

मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

रिदेह:सदेह:१: २: ३: ४:३:७:१:४:३:१० "रिदेह"क प्रिंठ संस्करण: रिदेह-३-पत्रिका  
(<http://www.videha.co.in/>) क चूनन बचना सम्मिन्तित ।

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर ।

Details for purchase available at publisher's (print -  
version) site <http://www.shruti-publication.com> or you may  
write to [shruti\\_publication@shruti-publication.com](mailto:shruti_publication@shruti-publication.com)

रिदेह



मैथिली साहित् आन्दानन

(c)२००४-१३. सराधिकार लेखकाधीन आ जतए लेखकक नाम नहि अछि ततए  
संपादकाधीन । रिदेह- प्रथम मैथिली पाष्किक ३-पत्रिका । SSN 2229-547X  
VI DEHA सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर । सह-सम्पादक: उमेश मंडव । सहायक सम्पादक:  
शिर कृमाव सा, राम रिवस साहू आ कृराजी (मेलोज कृमाव कर्ण) । भाषा-सम्पादन:  
नागेन्द्र कृमाव सा आ पञ्जरीकाव रिद्यानन्द सा । कवा-सम्पादन: ज्ञाति सा चौधरी आ  
बन्धि बेखा सिन्हा । सम्पादक-शोध-अनुसंधान: डा. जया रमा आ डा. बाजीर कृमाव रमा ।  
सम्पादक- नाटक-वर्गमठ-चवटिच- रेंचन ठाकुर । सम्पादक- सूचना-सम्पर्क-समाद-  
पूनम मंडव आ प्रियंका सा । सम्पादक- अनुवाद रिभाग- रिनीत उपेव ।

बचनाकाव अपन मौरिक आ अप्रकाशित बचना (जेकर मौरिकताक संपूर्ण उतुवदायित्व  
लेखक गणक मध्य अछि) [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) केँ मेर अटैचमेण्टक रूपमें  
.doc, .docx, .rtf रा .txt फॉर्मेटमें पठा सकैत अछि । बचनाक संग बचनाकाव  
अपन सम्मिन्तु पविचय आ अपन स्कैन कएन गेन फोण्टे पठैताह, से आशी करैत अछि ।  
बचनाक अंतमें ठांगप बहय, जे ३ बचना मौरिक अछि, आ पहिने प्रकाशिनक हेतु  
रिदेह (पाष्किक) ३ पत्रिकारुँ देन जा बहन अछि । मेर प्राप्तु होयराक रौद  
यथासंभर शीघ्र ( सात दिनक भीतव) एकव प्रकाशिनक अंकक सूचना देन जायत ।  
रिदेह प्रथम मैथिली पाष्किक ३ पत्रिका अछि आ ईमें मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमें





Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाश्चिक ई पत्रिका विदेह'१३८ म अंक १५ सितम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ६९ अंक १३८)

मानुश्रीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मिथिला आ मैथिलीसँ संरक्षित बचना प्रकाशित कएत जागत अछि । एहि आ पत्रिकारकें शीमति नक्ष्मा ठारब द्वारा मासक ०१ आ १३ तिथिकेँ आ प्रकाशित कएत जागत अछि ।

(c) 2004-13 संरक्षिकार स्वस्मित । रिदेहमे प्रकाशित सभैसा बचना आ आर्काइवरक संरक्षिकार बचनाकार आ संग्रहकर्ताक तगमे छन्हि । बचनाक अनुवाद आ पुनः प्रकाशन किंरा आर्काइवरक उपयोगक अधिकार किनराक हेतु [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पर संपर्क करू । एहि सागठकेँ प्रति न्या ठारब, मधुनिका चौधरी आ बन्मि प्रिया द्वारा डिजाइन कएत गेल ।



सिंहिबद्ध

